व्यथा॰ ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, बाधा, दुःख, दर्द।

व्यथित॰ गु॰ दुःखित, पीड़ित।

व्यभिचार॰ ना॰ पु॰ परस्त्रीगमन, कुकर्म।

व्यभिचारिणी॰ ना॰ स्त्री॰ दुष्टास्त्री, कुलटा, स्वैरिणी, छिनाल।

व्यभिचारी॰ ना॰ पु॰ छिनला, स्त्रैरण, बदकार, जो व्यभिचारकरे।

व्यय॰ ना॰ पु॰ लागत, क्षय, नाश, खर्च।

व्ययक॰ गु॰ खर्च करनेहारा, नाशक।

व्यर्थ॰ गु॰ वृथा, निकम्मा।

व्यलीक॰ ना॰ पु॰ कपट, छल, झूठ।

व्यवच्छेद॰ ना॰ पु॰ अलग करना।

व्यवधान॰ ना॰ पु॰ आच्छादन, अन्तर, बीच, बीचबिचाव।

व्यवधायक॰ ना॰ पु॰ जो व्यवधान करे।

व्यवसाय॰ ना॰ पु॰ उद्योग, परिश्रम, यत्न, उपाय, तदबीर, छल।

व्यवसायी॰ गु॰ जो व्यवसायकरे।

व्यवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ धर्मशास्त्रकी आज्ञा वा वाक्य, अलग करना, दशा, रीति।

व्यवस्थापक॰ गु॰ व्यवस्था का देनेहारा।

व्यवस्थित॰ गु॰ जो भिन्न कियागया, जो व्यवस्था कियागया, अचल।

व्यवहार॰ ना॰ पु॰ उद्यम, धन्धा, काम, टंटा, व्यापार, अभ्यास, झगड़ा, चाल, रीति, प्रीति, देनलेन।

व्यवहार्य॰ गु॰ जो व्यवहार के योग्य है।

व्यवहित॰ गु॰ संयुक्त, ढका, छुपा।

व्यसन॰ ना॰ पु॰ जूआआदि कुकर्म।

व्यसनी॰ गु॰ ज्वारीआदि कुकर्मी।

व्यस्त॰ गु॰ व्याकुल, फैला।

व्याकरण॰ ना॰ पु॰ शब्द के साधुत्वका उपयोगी शास्त्र, जिससे पदबोध होवे।

व्याकरणी॰ ना॰ पु॰ व्याकरणज्ञाता।

व्याकुल॰ गु॰ घबरा, अस्थिरचित्त, हैरान।

व्याकुलता॰ ना॰ स्त्री॰ घबराहट, हैरानी।

व्याख्या॰ ना॰ पु॰ } अर्थका व्योरेवार
व्याख्यान॰ ना॰ स्त्री॰ } कहना, वर्णन, बखान।

व्याघात॰ ना॰ पु॰ अटकाव, योगविशेष।

व्याघ्र॰ ना॰ पु॰ बाघ, शेर।

व्याघ्रपाद॰ ना॰ पु॰ कांकई, बाघका पांव।

व्याघ्रपुच्छ॰ ना॰ पु॰ दोनों अरण्ड।

व्याघ्री॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी कटाई, बाघिन्।

व्याज॰ ना॰ पु॰ छल, ठगई, मिष, व्याज, सूद, थोड़ा, बहाना।

व्याजक॰ गु॰ छली, व्याजू, ऋण।

व्याजी॰ ना॰ पु॰ व्याज लेनेहारा, छली।

व्याजू॰ ना॰ पु॰ व्याजके लिये जो ऋणदे।

व्याध॰ } ना॰ पु॰ अहेरी, हिंसक, शि-
व्याधा॰ } कारी, जो वनके पशु मारखावे।

व्याधि॰ ना॰ स्त्री॰ रोग, पीड़ा जो ताप आदि से होवे।

व्याधिघात॰ ना॰ पु॰ किरवाली।

व्याधित॰ }
व्याधी॰ } गु॰ रोगी, पीड़ित, दुःखित।

व्यान॰ ना॰ पु॰ समस्त शरीर में व्यापकवायु, प्राणविशेष।

व्याप॰ ना॰ पु॰ रचाव।

व्यापक॰ गु॰ फैलाहुआ, विभु।

व्यापकता॰ ना॰ स्त्री॰ फैलाव, विभुता, वैभव।

व्यापना॰ अ॰ क्रि॰ सर्वत्र फैलना।

व्यापाद॰ ना॰ पु॰ नास्तिकता, कुफ़र।

व्यापार॰ ना॰ पु॰ काम धन्धा, चाली, धर्म, लक्षण, चिह्न।

व्यापारार्थ॰ गु॰ जिसका अर्थ व्योपार है।

व्यापी॰ गु॰ विभु, सर्वत्र फैलनेहारा।

व्याप्त॰ गु॰ जो पैठगया, सर्वगत।

व्याप्ति॰ ना॰ स्त्री॰ सर्वत्रगति, प्राप्ति, लाभ।

व्यामोह॰ ना॰ पु॰ पीड़ा, दुःख।

व्यायाम० ना० पु० परिश्रम, थकाई, मल्लकर्म ।
व्याघ्र० ना० पु० सांप, सर्प, चीतापशु, हाथी, दिन, क्रूरमनुष्य ।
व्याघ्रदंष्ट्रक० ना० पु० गोखुरू ।
व्यालपत्री० ना० स्त्री० ककड़ी ।
व्याला० ना० पु० झरोखा, धुड़ेरा, ना० स्त्री० सांपिन् ।
व्यालारि० ना० पु० गरुड़, मोर, न्योला, सिंह ।
व्याली० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गु० सपेरा ।
व्यावहारिक० ना० पु० मंत्री, परामर्शी ।
व्यास० ना० पु० कुतर, विस्तार, फैलाव, श्रीवेदव्यास ।
व्यासार्द्ध० ना० पु० आधाविस्तार ।
व्यासेश्वर० ना० पु० काशीके पार रामनगर में व्यासस्थापित महादेव ।
व्युत्क्रम० ना० पु० उलटाक्रम ।
व्युत्पत्ति० ना० स्त्री० शास्त्रीय ज्ञान, विद्या, शब्दको भिन्न करनेका ज्ञान, उत्पत्ति, दृढ़ता, विद्याकी ।
व्युत्पन्न० ना० पु० व्युत्पत्तिमान्, विद्यावान् ।
व्यूह० ना० पु० युद्धहेतु सेनाकी रचनाविशेष, सेनाका कोटविशेष, समूह, झुण्ड ।
व्योम० ना० पु० आकाश, आसमान ।
व्योमकेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
व्योमचर० ना० पु० पक्षी, देवता, ग्रह, नक्षत्र ।
व्योमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष ।
व्यौरना० स० क्रि० सुलझाना ।
व्रज० ना० पु० देशविशेष ।
व्रजन्ति० क्रि० प्राप्त होताहै, पाता है ।
व्रजवासी० ना० गु० व्रजके लोग ।
व्रजेन्द्र० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।
व्रजेश० }
व्रत० ना० पु० पुण्यकर्मविशेष, यथा तपस्या, उपवास ।
व्रती० गु० जो व्रतकरे ।
व्रात्य० ना० पु० वह ब्राह्मण जिसका यज्ञोपवीत नहीं भया ।
व्रीडा० ना० स्त्री० लाज, लज्जा, हया ।
व्रीहि० ना० पु० अनेक प्रकारका धान्य ।

[श]

शक० ना० पु० संवत् चलानेहारा राजा, यथा शालिवाहन, जातिविशेष, देशविशेष, संवत्, शाक ।
शककर्त्ता० } ना० पु० शाका चलानेहारा,
शककारक० } यथा कलियुग में युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवाहन, विजयाभिनन्दन, नागार्जुन, बलि ।
शकट० ना० पु० छकड़ा ।
शकुन० ना० पु० शुभाशुभ का सूचक चिह्न, पक्षी, सगुन, चिड़िया ।
शकुनी० ना० पु० जो मनुष्य शकुनको जानता हो, पक्षी, चिड़िया, कौरवोंका मन्त्री ।
शकुन्त० } ना० पु० पक्षी, चिड़िया ।
शकुन्ति० }
शकुल० ना० पु० कुटकी, मत्स्यविशेष ।
शक्त० गु० सामर्थी, बलवान् ।
शक्राह्व० ना० पु० इन्द्रजौ ।
शक्ति० ना० स्त्री० सामर्थ्य, बल, बरछी, सांग, देवताका पराक्रम जो अपनी स्त्रीरूपी ठहराया गया, माया, देवी, भगवती ।
शक्तिमान्० गु० बलवान्, सामर्थी ।
शक्य० गु० होनेके योग्य, करनेके योग्य ।
शक्यता० ना० स्त्री० होने और करने की योग्यता वा सम्भव ।
शक्र० ना० पु० इन्द्र ।
शक्रधनु० } ना० पु० इन्द्र का धनुष जो
शक्रधनुष० } वर्षामें निकलता है वा इन्द्रका धनुष ।

शंक० ना० पु० भय, डर, मुरुयसर्प।

शंकर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कल्याण, गु० सकुड़ा, तंग, कठिन, दुरंगा जिसमें दूसरा मिलगया।

शंकरदेव० ना० पु० श्रीशिव, शंकराचार्य्य।

शंकरा० ना० रागिनीविशेष।

शंकराचारी० ना० पु० शंकराचार्य्य का मतावलम्बी।

शंकराचार्य्य० ना० पु० योगेश्वरविशेष जिन्होंने जैनमतका खण्डन किया।

शंकराभरण० ना० पु० रागिनीविशेष।

शंकरी० ना० स्त्री० पार्वती।

शंका० ना० स्त्री० भय, डर, खटका, जाजरू, जायज़रूर, हगास।

शंकित० गु० भयभीत, डराभया।

शंकु० ना० पु० ठूंठ, मत्स्यविशेष, बर्छी, कील विशेष।

शंख० ना० पु० जलजन्तुविशेष, वा उसका घर, बड़ा घोंघा।

शंखचूड़० ना० पु० राजाविशेष।

शंखनाम्नी० } ना० स्त्री० शंखाहोली।
शंखपुष्पी० }

शंखलिखित० ना० पु० स्मृतिविशेष।

शंखासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।

शंखाहोली० ना० स्त्री० पौधाविशेष।

शंखिनी० ना० स्त्री० विशेष लक्षणयुक्त स्त्री, श्वासविशेष जो गुदासे निकलती है।

शंखोद्धार० ना० पु० द्वारिकाजी और काशीजी में तीर्थविशेष।

शचान० ना० पु० बाज, शिकरा।

शटी० ना० पु० कचूर, कचूरभेद।

शठ० गु० धूर्त, ठग, छलिया, मूर्ख।

शठता० ना० स्त्री० धूर्तता, ठगई, मूर्खता।

शण० ना० पु० सन।

शणसूत्र० ना० पु० सुतली, सनका जाल।

शण्ड० ना० पु० सांड़।

शण्डी० ना० स्त्री० सांडिनी।

शत० ना० पु० सौ, शत, १००।

शतखण्ड० ना० पु० सौटुकड़ा।

शतघ्नी० ना० स्त्री० तोप, बड़ीभुशुण्डी।

शतद्रु० } ना० स्त्री० सतलज नदी जो पंजाब में है।
शतद्रू० }

शतधन्वा० ना० पु० यादवविशेष।

शतपत्र० ना० पु० सफ़ेद कमल।

शतपदा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

शतपञ्च० गु० सात पांच १२ वा ५००।

शतपर्व्विका० ना० स्त्री० दूर्वा, दूबघास।

शतपा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

शतपुष्पा० ना० स्त्री० सौंफ।

शतभिषा० ना० स्त्री० पचीसवां नक्षत्र।

शतभेदक० ना० पु० अम्लवेत।

शतमत० ना० पु० सत्यधर्म, सच्चामत।

शतमन्यु० ना० पु० इन्द्र।

शतमूली० ना० स्त्री० लताविशेष।

शतशः० अव्य० सैकड़ों।

शता० ना० स्त्री० सौंफ।

शतावरि० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

शत्रु० ना० पु० वैरी, रिपु, दुश्मन।

शत्रुघ्न० ना० पु० सुमित्रासुत, रामचन्द्र के भाई।

शत्रुता० ना० स्त्री० वैर, दुर्जनताई।

शनक० ना० पु० विजयसार, मुनिविशेष।

शनि० ना० पु० सातवां ग्रह, शनैश्चर।

शनिवार० ना० पु० सातवांवार, सनीचर।

शनैःशनैः० अव्य० हौले २, सहज २, धीरे २

शनैश्चर० ना० पु० सातवां ग्रह।

शपथ० ना० पु० किरिया, सौंह, सौगन्द।

शब्द० ना० पु० ध्वनि, आवाज़, शराद्य बात, संज्ञा आदि।

शब्दग्रही० ना० पु० कान, श्रवण।

शम० ना० पु० बाह्य इन्द्रियों का निग्रहण अर्थात् त्याग।

शमन० ना० पु० शान्ति, बलिदान, यमराज, कपाला ओषधि।
शमी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, फली, छीमी।
शम्पाक० ना० पु० किरवाली।
शम्बुक० } ना० पु० कौड़ी, घोंघा, सीपी,
शम्बूक० } शंख।
शम्भु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
शयन० ना० पु० सोना, नींद, लेटना, बिछौना।
शय्या० ना० स्त्री० जिसपर शयन करते हैं।
शर० ना० पु० बाण, तीर, सरकण्डा, जीति, तालाब, गणित में ६।
शरजन्मा० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।
शरट० ना० पु० गिरगिट, कृकलास।
शरण० ना० पु० घर, जो रक्षाकरे, आश्रय, पनाह।
शरणागत० गु० आश्रित, जो शरणचाहे, जो पनाह मांगे।
शरण्य० ना० पु० शरण, गु० शरणके योग्य।
शरत्० स्त्री० } ऋतुविशेष जिसमें कार
शरत्काल० पु० } कातिक हैं सामन्य शीतकाल।
शरत्पुष्प० ना० पु० दुपहरीफूल वा उसका वृक्ष।
शरद्० स्त्री० }
शरदृतु० स्त्री० }
शरत्काल० पु० } शरत्काल।
शरदर्त्तु० स्त्री० }
शरपुंखा० ना० पु० शरफोंका पौधाविशेष।
शराटा० ना० पु० शब्द, निनाद, ध्वनि।
शराभ्यास० ना० पु० निशाना वा चिह्न जिसे बाणादि से बेधते हैं अर्थात् बाण मारना सीखते हैं।
शराव० ना० पु० सकोरा।
शरावती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
शरावलि० ना० स्त्री० बाणों की पंक्ति, तीरों का समूह।

शरासन० ना० पु० धनुष, कमान।
शरासुर० ना० पु० बाणासुर।
शरीर० ना० पु० देह, तन।
शरीरी० गु० देही, प्राणी।
शरेण० ना० पु० बाणोंसे, तीरोंसे, बाणकरके।
शर्करा० ना० स्त्री० खांड़।
शर्म्मा० ना० पु० ब्राह्मणके नामका उपपद।
शर्वरी० ना० स्त्री० रात।
शलभ० ना० पु० टिड्डी।
शलाका० ना० स्त्री० सलाई, जदवलपट्टी, रूलर।
शलादिनी० ना० स्त्री० कुटकी।
शलीत० ना० पु० थैला, बोरा।
शल्य० ना० पु० राजाविशेष, ऊंगा, बाण, वैद्य क्रियाका एक अंग।
शल्यक० ना० पु० मैनफल।
शव० ना० पु० खारीलोन, लोथ, मृतक।
शबर० ना० पु० भील।
शबरी० ना० स्त्री० भीलनविशेष, भीलनी, घीकुवारि।
शष्प० ना० स्त्री० दूबआदि नवीन घास (शष्पं बालतृणं घास, इत्यमरः)।
शश० }
शशक० } ना० पु० शशा, चौगड़ा।
शशा० }
शशांक० } ना० पु० चन्द्रमा।
शशि० }
शशिवर्ण० गु० श्वेत, चन्द्ररूप, सफ़ेद।
शशिरस० ना० पु० अमृत, पीयूष।
शस्त्र० ना० पु० हथियार जो बिनाफेंके मारते हैं, यथा खड्गादि।
शस्त्रमय० ना० पु० लोहा।
शस्त्री० हथियारबन्द, अस्त्रधारी।
शाक० ना० पु० साग, भाजी, पृथ्वी के सात द्वीपोंमेंसे एकका नाम।
शाकट्टम्मुखी० ना० स्त्री० माईं ओषधि।

शाकबीज० ना० पु० बथुआ ।

शाकम्भरी० ना० पु० दुर्गादेवी, नगरविशेष ।

शाकल० }
शाकल्य० } ना० पु० तिल जौ चावल घी खांड़ आदि की मिलौनी जो होमते हैं ।

शाकवणिक्० ना० पु० मुराऊ, कबड़िया ।

शाकश्रेष्ठ० ना० पु० सजीवनी ।

शाका० ना० पु० शक ।

शाकिनी० ना० स्त्री० देवीविशेष जो दुर्गा की सहचरी है ।

शाक्त० ना० पु० शक्तिका उपासक, देवीपूजक ।

शाक्ती० ना० पु० शाक्त, भगवती का उपासक ।

शाख० ना० स्त्री० डाली वृक्षकी ।

शाखा० ना० स्त्री० डाली वृक्षकी, बहुतर्क, बहु विचार ।

शाखामृग० ना० पु० वानर, बन्दर ।

शाखाविलासी० ना० पु० वानर, बन्दर ।

शाखाशन० ना० पु० ऊंट ।

शाखी० ना० स्त्री० वृक्ष, साखी ।

शांकरी० ना० स्त्री० पार्वती, शंकरी ।

शाटिका० }
शाटी० } ना० स्त्री० सारी, स्त्रियों के पहरने का वस्त्रविशेष ।

शाठ्य० ना० पु० शठता, ठगाई ।

शाण० ना० पु० खड़सान्, जिसपर हथियार चाकू आदि तेज करते हैं ।

शांडिल्य० ना० पु० बिल्व, बेल, मुनिविशेष ।

शातकुम्भ० ना० पु० सुवर्ण, सोना ।

शातातप० ना० पु० धर्मशास्त्र का प्रवर्त्तकमुनि ।

शानपाकी० ना० पु० खिरहटी ।

शान्त० गु० स्थिर, मुनि, ठंढा, मृत ।

शान्ति० ना० स्त्री० स्थिरता, कल, ठंढाई, सहन, विवाह आदि में प्रसिद्ध कर्म ।

शाप० ना० पु० सराप, धिक्कार, बददुआ ।

शाब्दिक० गु० शब्दज्ञाता, व्याकरणी ।

शारद्० ना० स्त्री० सरस्वती, शारदा, सर्दी ।

शारदा० ना० स्त्री० सरस्वती, चातुरी ।

शारदी० गु० जो शरद् में उत्पन्न हो ।

शार्दूल० ना० पु० प्रबलसिंह, कोई कोई मनुष्य कहते हैं कि एक पक्षी होताहै जो हाथी को पंजे में दाब लेजाता है ।

शाल० ना० पु० सालवृक्ष, चिरौंजी, कांटा, मत्स्यविशेष, छेद, शृगाल, शोभा, ऊर्णवस्त्र विशेष, घन ।

शालक० गु० दुःखद, छेदनेहारा, ना० पु० साला ।

शालपर्णी० ना० स्त्री० ओषधिविशेष ।

शाला० ना० स्त्री० स्थान, घर ।

शालि० ना० पु० हेमन्तऋतुके धान ।

शालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, छेदनेहारी, दुःखद ।

शालिवाहन० ना० पु० राजाविशेष, शाका प्रचारक ।

शाली० ना० पु० शालि, पत्नी की बहन, गु० छेदी, वान्, वन्त, युक्त, स्वामी ।

शालीना० }
शालीशता० } ना० स्त्री० सोयाका साग ।

शालूर० ना० पु० मेंड़क (भेके मंडूकवर्षाभू शालूरप्लवदर्दुराः, इत्यमरः) ।

शाल्मल० ना० पु० द्वीपविशेष जो पृथ्वी के सात द्वीपमें से है ।

शाल्मलि० }
शाल्मली० } ना० पु० सेमरवृक्ष ।

शासन० ना० पु० }
शासना० ना० स्त्री० } आज्ञा, इकरारनामा, पत्र, ताड़न, ताड़ना ।

शासनीय० गु० आज्ञाके योग्य, ताड़नीय ।

शास्ति० ना० स्त्री० आज्ञा, राज्य ।

शास्त्र० ना० पु० आज्ञा, हिन्दूलोगों के मत में आकाशीय पुस्तकविशेष, यथा वेदविद्या की पुस्तकें ।

शास्त्रविहित० गु० शास्त्रकी विधिसे, जो शास्त्र का है।

शास्त्रज्ञ० ना० पु० जो शास्त्र को जानताहै।

शास्त्रार्थ० ना० पु० संवाद, चर्चा, बहस।

शास्त्री० गु० शास्त्रज्ञ, धर्मज्ञ।

शास्त्रीय० गु० शास्त्रसम्बन्धी, जो शास्त्रकाहै।

शास्य० गु० शासन के योग्य।

शिंशपा० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, शीशमवृक्ष।

शिखण्डिज० ना० पु० बृहस्पति।

शिखण्डिनी० ना० स्त्री० जूही।

शिखण्डी० ना० पु० मयूर, मोर, राजा द्रुपद का पुत्र।

शिखर० ना० पु० पर्वत की धार वा चोटी, शृंग, लौंग।

शिखरी० ना० पु० पर्वत, ऊंगा।

शिखा० ना० स्त्री० चोटी, टम, फन।

शिखाचूड़० ना० पु० केशपाश, जटाजूट।

शिखि० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि।

शिखिवाला० ना० स्त्री० मयूर, मोर।

शिखिवाहन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

शिखी० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि, गु० फनैला।

शिग्रु० ना० पु० सहिंजन वृक्ष।

शिथिल० गु० ढीला, थका, सुस्त, अदृढ़, मन्द।

शिथिलता० ना० स्त्री० ढीलापन, थकन, थकान, सुस्ती, मांदगी।

शिम्बिः० } ना० स्त्री० सेम तरकारी।
शिम्बिका० }

शिर० ना० पु० सिर, मस्तक, मूड़।

शिरा० ना० स्त्री० टोपी, नस, नाड़ी जिसके द्वारा रुधिर सारे शरीर में फिरताहै।

शिरीष० ना० पु० वृक्ष विशेष, सिरसावृक्ष।

शिरोधी० ना० स्त्री० गला, गर्दन।

शिरोमणि० ना० पु० मणिजड़ित, माथे का भूषण विशेष, गु० सर्दार, श्रेष्ठ, उत्तम।

शिल० } ना० स्त्री० चटान पत्थर की।
शिला० }

शिलागोली० ना० स्त्री० मनशिल।

शिलाजीत० } ना० पु० शिलाजीत, शिला का रस।
शिलाजित० }

शिलाह्व० ना० पु० शिलाजीत।

शिलायन्त्र० ना० पु० पत्थर का छापा।

शिल्प० ना० पु० चित्रादिकर्म, कारीगरी, थवई का काम।

शिल्पकार० }
शिल्पी० } ना० पु० थवई, राज, मेमार।
शिल्पीकर० }

शिव० ना० पु० शुभ, कल्याण, ललित, आंवला, भूआंवला, गीदड़, श्रीमहादेवजी।

शिवगिरि० ना० पु० कैलासपर्वत।

शिवरात्रि० ना० स्त्री० फागुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवजन्म दिनका व्रत।

शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण।

शिवशैल० ना० पु० कैलास पर्वत।

शिवसुत० ना० पु० श्रीगणेशजी, स्वामिकार्त्तिक।

शिवसुतवाहन० ना० पु० मूषक, मयूर।

शिवा० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी, हड़, शृगाल की स्त्री, सोयाका शाक।

शिवालय० } ना० पु० शिवजीका मन्दिर वा मठ।
शिवाला० }

शिबि० ना० पु० राजाविशेष जोअयोध्यामेंथा।

शिबिका० ना० स्त्री० पालकी।

शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, शृगाल।

शिशिर० ना० पु० जाड़ा, पाला, हेमन्त, ऋतु विशेष जो माघ फागुनमें होतीहै।

शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा।

शिशुता० ना० स्त्री० } बालकपन, लड़काई।
शिशुत्व० ना० पु० }

शिशुपाल० ना० पु० राजा विशेष जिस को-

पाण्डव के यज्ञ में श्रीकृष्णचन्द्रजीने वध किया था।

शिशुमार॰ ना॰ पु॰ मगरमच्छ।

शिष॰ ना॰ पु॰ शिक्षा, उपदेश, सीख, मन्त्र।

शिष्ट॰ गु॰ आधीन, आज्ञाकारी, जो आज्ञादीगई, उत्तम, श्रेष्ठ।

शिष्टता॰ ना॰ स्त्री॰ आधीनता, उत्तमता।

शिष्टाचार॰ ना॰ पु॰ आदर, सत्कार, सन्मान, मिलन्सारी, बड़ाई देना।

शिष्टाचारी॰ गु॰ सन्मानी, जो शिष्टाचार करे।

शिष्य॰ ना॰ पु॰ चेला, मतावलम्बी, सीखने हारा।

शिक्षक॰ ना॰ पु॰ गुरु, अध्यापक, उपदेशक।

शिक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ सीख, उपदेश, मन्त्र।

शिक्षित॰ गु॰ जो सिखाया वा पढ़ायागया, जो उपदेश किया गया।

शीकर॰ ना॰ पु॰ झींसी, फुहार।

शीघ्र॰ अव्य॰ तुरन्त, द्रुत, उतावल, जल्द।

शीघ्रग॰ ना॰ पु॰ खच्चर, गधा।

शीघ्रगामी॰ गु॰ शीघ्र, चलनेहारा।

शीघ्रता॰ ना॰ स्त्री॰ बेगताई, उतावली, शिताबी।

शीत॰ ना॰ पु॰ हिम, जाड़ा, ठंढ, पाळा, पील का वृक्ष।

शीतकटिबन्ध॰ ना॰ पु॰ पृथ्वी के २३½ अंश उत्तर और २३½ अंश दक्षिण का भूमिखण्ड।

शीतकर॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।

शीतकाल॰ ना॰ पु॰ जाड़े के दिन, हेमन्त।

शीतज्वर॰ ना॰ पु॰ तपलर्जह, विषमज्वर के विपरीत अर्थात् जाड़ा।

शीतभीरु॰ ना॰ पु॰ संभालू।

शीतरज॰ ना॰ पु॰ कपूर।

शीतल॰ गु॰ ठंढा।

शीतलता॰ ना॰ स्त्री॰ ठंढ, ठंढाई।

शीतांशु॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, कपूर।

शीतांग॰ ना॰ पु॰ अर्द्धांग रोग विशेष।

शीतांतिका॰ ना॰ स्त्री॰ तेजबल ओषधि।

शीतार्त्त॰ गु॰ जो ठठर गया, जो जाड़ेसे कांपे।

शितोष्ण॰ गु॰ सरद गरम।

शीर्ण॰ गु॰ पतला, क्षीण।

शीर्ष॰ ना॰ पु॰ मस्तक, शिर, चोटी, ऊपर।

शीर्षकोण॰ ना॰ पु॰ ऊपर का कोना।

शीर्षिणी॰ ना॰ स्त्री॰ केशपाश, बालोंकी बेणी।

शील॰ ना॰ पु॰ स्वभाव, सुभाव, मुरव्वत।

शीलवान्॰ ना॰ गु॰ सुशील, मिलन्सार, नम्र।

शीश॰ ना॰ पु॰ सिर, मूड़।

शीशम॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।

शुक॰ ना॰ पु॰ तोता, सूआ।

शुकछद॰ ना॰ पु॰ थुनेरा।

शुकदेव॰ ना॰ पु॰ शुकाचार्य्य, भागवत वक्ता।

शुकप्रिय॰ ना॰ पु॰ अनार।

शुकवर्ण॰ ना॰ पु॰ थुनेरा।

शुकाचार्य्य॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष, व्यासपुत्र।

शुक्र॰ ना॰ पु॰ अम्लबेत।

शुक्तचण्डिका॰ ना॰ स्त्री॰ अमिली वृक्ष।

शुक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ सीपी।

शुक्तिज॰ ना॰ पु॰ मोती।

शुक्र॰ ना॰ पु॰ छठाग्रह, वीर्य्य, अग्नि, ज्येष्ठमास, छठांवार, दैत्यों का गुरु।

शुक्रदारु॰ ना॰ पु॰ देवदारु।

शुक्रमाता॰ ना॰ स्त्री॰ भार्ङ्गी।

शुक्रवार॰ पु॰ ना॰ छठांवार।

शुक्ल॰ गु॰ श्वेतवर्ण, ब्राह्मणों में उपपद विशेष, ना॰ पु॰ कुन्द, सफ़ेद जीरा।

शुक्ल॰ ना॰ पु॰ उजेलापाख।

शुचा० ना० स्त्री० पवित्रता, पावनता, पाकी ।
शुचि० गु० श्वेत, पवित्र, शुद्ध, पाक ।
शुचिहीय० गु० सामान्य जो मनते पवित्र हो, विशेष्यार्थ, पतिव्रता ।

शुंठि० } ना० स्त्री० सोंठि ।
शुंठी० }

शुंड० ना० सूंड़, हाथी की नाक ।
शुद्दि० ना० स्त्री० उजेलापाख ।
शुद्ध० गु० पवित्र, निर्दोषी, अकेला, ठीक ।
शुद्धता० ना० स्त्री० पवित्रता, ठीकहोना ।
शुद्धि० ना० स्त्री० पवित्रता, सुधराव, खबर ।
शुद्धोच्चार० ना० पु० ठीकपाठ ।

शुन० } ना० पु० कुत्ता ।
शुनक० }

शुभ० गु० भला, अच्छा, भाग्यवान्, ना० पु० कल्याण, सुभाग, शोभा ।

शुभग० गु० अच्छा, भाग्यवान् ।
शुभगुण० ना० पु० अच्छेगुण, ज्ञानादि ।
शुभंकर० गु० मंगलकारी, कृपालु ।
शुभचिन्तक० गु० अच्छाचाहनेहारा, खैरख्वाह ।
शुभा० ना० स्त्री० सुधा, शोभा, सिद्धिविशेष, परस्त्री और बकरी ।

शुभ्रांशु० ना० पु० चन्द्रमा ।
शुभ्रांसिता० ना० स्त्री० वंशरोचन ।
शुभ्र० गु० श्वेतवर्ण, उजला, सुन्दर ।
शुभ्रपुष्प० ना० पु० पोस्ता का पौधा ।
शुम्भ० ना० पु० दैत्यविशेष जो श्री दुर्गाने वधा ।
शुशकारना० अ० क्रि० अहेर करने में कुत्तेको हुसकाना वा दौड़ाना ।

शुशकारी० ना० स्त्री० कुत्तेको हुसकानेका काम ।
शुश्रूषा० ना० स्त्री० सेवा, टहल, कहना, बोलना सुननेकी इच्छा ।

शुष्क० गु० सूखा ।

शुष्कास्थि० ना० पु० सूखीहड्डी ।
शूकर० ना० पु० सुअर, वराह, श्री विष्णुका तृतीयावतार ।

शूकरखेत० ना० पु० वाराहक्षेत्र, पचकाकमयार ।

शूना० ना० स्त्री० कुम्भीपौधा ।
शूद्र० ना० पु० चौथावर्ण, नीचजाति ।
शूद्रता० ना० स्त्री० नीचपन, नीचता ।
शूद्रा० ना० स्त्री० शूद्रजातिकी स्त्री ।
शूद्री० ना० स्त्री० शूद्र की स्त्री ।
शून्य० गु० छूंछा, खाली, एकान्त, ना० पु० बिन्दु ।

शून्यता० ना० स्त्री० छूंछापन, खाली होना ।
शून्यवादी० ना० पु० नास्तिक, काफ़िर, जैनधर्मी ।

शूर० ना० पु सूर्मा, सुअर, सूर्य, गु० अन्धा ।
शूरता० ना० स्त्री० वीरता, सूर्मापन, बहादुरी ।
शूरत्व० ना० पु० शूरता ।
शूरवीर० ना० पु० रावत, योद्धा, वीर ।
शूरसेन० ना० पु० वसुदेवजी के पिता, मथुरा के पास देशविशेष ।

शूर्प० ना० पु० सूर्प, सूप, छाज ।
शूर्पणखा० ना० स्त्री० रावण की बहन ।
शूल० ना० पु० हगास, बड़ी पीड़ा, त्रिशूल, बबूल का कांटा, दर्द, रोगविशेष ।

शूलनाशन० ना० पु० हींग ।
शूली० ना० पु० श्रीशिवजी, शूलरोगग्रस्त सूली ।

शृकाल० } ना० पु० गीदड़, सियार ।
शृगाल० }

शृंखल० ना० पु० करधनीविशेष, संकल, सिकरी, जंजीर ।

शृंखला० ना० स्त्री० कटिबन्धन, आड़बन्दे, घुवा, सिलसिला, जंजीर ।

शृंग० ना० पु० सींग, शिखर, पहाड़ की चोटी।

शृंगनाम्नी० ना० स्त्री० ककरासिंगी।

शृंगवेर० ना० पु० सोंठ, अदरक।

शृंगाट० ना० पु० सिंघाड़ा।

शृंगार० ना० पु० प्रथम रस, १६ प्रकारका सिंगार, संवार, सजधज।

शृंगारित० गु० संवारीहुई, शृंगारयुत।

शृंगिका० ना० स्त्री० मेढ़ासिंगी।

शृंगी० ना० पु० जिस पशुके सींगहों, ककरासिंगी, भैंसा, पर्वतमुनिविशेष।

शृणु० क्रि० सुनो।

शेखर० ना० पु० शिरमें बांधनेकी फूलों की माला, मस्तकाभरण, शिर।

शेफालिका० ना० स्त्री० हरसिंघार।

शेल० ना० पु० अस्त्रविशेष।

शेली० ना० स्त्री० सांग, बालोंकी लट।

शेलु० ना० पु० मेथी।

शेलमुख० ना० पु० बिल्व, बेल।

शेश० ना० पु० सांपोंकाराजा, धरणीधर।

शेष० ना० पु० अवशिष्ट, समाप्ति बाक़ी, नागराजविशेष, जिसके सहस्र शिर हैं, जिनपर विष्णुनारायण सोते हैं, थोड़ा।

शेषावस्था० ना० स्त्री० वृद्धावस्था, बाक़ी उमर।

शैक्षरिक० ना० पु० ऊंगा।

शैत्य० गु० ठंढा।

शैथिल्य० ना० पु० शिथिलता।

शैल० ना० पु० पर्वत, पहाड़।

शैलराज० ना० पु० हिमाचल, पर्वत का राजा।

शैली० ना० स्त्री० रीति, वार्त्तिक, गु० पर्वती।

शैव० ना० पु० शिवका उपासक।

शैवाल० ना० पु० जलका पौधाविशेष, सिंवाल।

शैवी० ना० पु० शैव।

शैशव० ना० पु० शिशुता, बालकता, लड़काई।

शोक० ना० पु० दुःख, क्लेश, सन्ताप, विलाप।

शोकार्णव० ना० पु० दुःखका सागर, महादुःख।

शोकार्त्त० गु० शोकग्रस्त, शोकसे व्याकुल।

शोच० ना० पु० चिन्ता, अफ़सोस, अन्देशह।

शोचन० ना० पु० विचारन, मनसूबह चिन्तन।

शोचना० अ० क्रि० विचारना, अन्देशहकरना, अफ़सोसकरना, पश्चात्ताप करना।

शोचनीय० गु० जो शोचने के योग्य है।

शोण० ना० पु० पुष्पविशेष, लालगदहा, लाल, मगधदेशका नद।

शोणभद्र० ना० पु० मगधदेश में नदविशेष।

शोणित० ना० पु० रुधिर, लोहू, केसर।

शोथ० ना० पु० सूज, फुलाव।

शोध० ना० पु० ऋणका भरदेना, पता, खबर, तलाश।

शोधन० ना० पु० दोषका निकालना अर्थात् शुद्धकरना।

शोधित० गु० जो खोजागया वा ढूंढ़ागया, शुद्ध कियागया।

शोध्य० गु० जो शोधने के योग्य।

शोभन० गु० मनोरम, मनोहर, सुन्दर।

शोभा० ना० स्त्री० सुन्दरता, शृंगार, चमक, कान्ति।

शोभायमान० } गु० विभूषित, चमकीला,
शोभित० } झड़कीला।

शोला० ना० पु० वृक्षविशेष।

शोषक० गु० चूसनेहारा, सुखानेवाला, घटानेहारा।

शोषण० ना० पु० सुखान, चुसाव, घटाना।

शौच० ना० पु० स्नान, स्नानादिकर्त्तव्यकर्म।

शौचकर्म० ना० पु० स्नानादि, शुचिक्रिया।

शौनक० ना० पु० मुनि विशेष।
शौरि० ना० पु० भगवान्, शनैश्चर।
शौरिप्रिय० ना० पु० विजयसार।
शौर्य्य० ना० पु० सूर्मापन, बहादुरी।
श्मशान० ना० पु० मरघट, मृतक जलाने का स्थान विशेष।
श्याम० ना० पु० कोकिला, काम्बोज से पश्चिम देश विशेष, श्रीकृष्णचन्द्रजी, कालावर्ण।
श्यामकर्ण० ना० पु० वह घोड़ा जिसका एक कान श्याम और केश पीत, और सर्व शरीर चन्द्रवर्ण होवे।
श्यामल० गु० कालावर्ण विशेष, गु० पीपरी।
श्यामश्री० ना० स्त्री० काली, नीली।
श्यामसुन्दर० ना० पु० श्रीकृष्णजी।
श्यामा० ना० स्त्री० श्यामरंग का पक्षी, पांडर, पीपली, श्यामस्त्री, सुन्दरस्त्री, अरजस्त्री, प्रिय गु० रात, प्रीति, कालिकादेवी।
श्यामाक० ना० पु० सामाअन्न।
श्यालक० } ना० पु० साला, पत्नी का भाई।
श्याल० }
श्येन० ना० पु० पक्षी विशेष, बाज।
श्रद्धान० गु० श्रद्धायुक्त।
श्रद्धा० ना० स्त्री० आदर, इच्छा, विश्वास, प्रतीति, शुभेच्छा।
श्रद्धालु० गु० श्रद्धासंयुक्त।
श्रम० ना० पु० थकाई, दौड़धूप, उद्यम कष्ट।
श्रमबुन्द० ना० पु० श्रम करने में जो पसीना।
श्रमित० गु० थका, मांदा।
श्रमी० गु० श्रमकरनेहारा, उद्यमी।
श्रव० ना० पु० कान, बहन, चलन।
श्रवण० ना० पु० कान, सुनावट और बाईसवां नक्षत्र।
श्रवणशीर्षिका० ना० स्त्री० म्योंढी, मुण्डी।
श्रवणा० ना० स्त्री० बाईसवां नक्षत्र।
श्रवणीय० गु० जो सुनने के योग्य है।
श्रवत० क्रि० चुवत, बहत।
श्रवती० ना० स्त्री० नदी।
श्राच्चूक० ना० पु० अर्जुन।
श्राद्ध० ना० पु० पितरों को शास्त्र रीति से पिण्डदान देना, यज्ञ।
श्राद्धदेव० ना० पु० धर्मराज, यमराज।
श्राद्धपक्ष० ना० पु० कनागत, आश्विन कृष्ण।
श्रान्त० गु० सुलित, जो थकगया, श्रमित।
श्रान्ति० ना० स्त्री० श्रम, परिश्रम।
श्राप० ना० पु० शाप, आशीर्वाद से विपरीत, बद्दुआ।
श्रापित० गु० शापित, श्राप दियागया।
श्रावक० ना० पु० जाति विशेष जो नास्तिकों अर्थात् जैनियों के चेले हैं, नास्तिक।
श्रावण० ना० पु० सावन, चौथा महीना।
श्री० ना० स्त्री० सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता, लक्ष्मी, शब्द के पहले बड़ाईका बोधक।
श्रीकण्ठ० ना० पु० सदाशिव।
श्रीकान्त० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीखण्ड० ना० पु० चन्दन।
श्रीगेह० ना० पु० श्वेतकमल, शोभाका घर, लक्ष्मी का घर, खजाना।
श्रीदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक सखा।
श्रीपति० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीपर्णी० ना० स्त्री० कम्भारी।
श्रीपुष्प० ना० पु० लौंग, लवंग।
श्रीफल० ना० पु० नारियल, बेल, आंवला।
श्रीमत्० गु० भाग्यवान्, धनी, शोभा संयुक्त, धनाढ्य, दौलतवर।
श्रीधर० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीधराचार्य० ना० पु० आचार्य विशेष जिन्होंने श्रीमद्भागवत का तिलक किया।
श्रीनगर० ना० पु० बद्रीनाथ के मार्ग में पर्वत पर नगर विशेष, कश्मीर में नगर विशेष।
श्रीमन्त० } गु० भाग्यवान्, धनी, शोभासंयुक्त, धनाढ्य, दौलतवर।
श्रीमान्० }

श्रीयुक्त० } गु० यशवन्त, सुख्याती, धनी,
श्रीयुत० } भाग्यवान्, नामी।
श्रीरंग० ना० पु० श्रीनारायण, विष्णुजी।
श्रीरंगपट्टन० ना० पु० महीश्वर अर्थात् मैसूर देश की राजधानी।
श्रीराग० ना० पु० राग विशेष, तीसरा राग।
श्रीवणा० } ना० स्त्री० म्योढ़ी, मुण्डीपौधा।
श्रीवर्णी० }
श्रीवत्स० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण, लक्ष्मी का हृदय में वास।
श्रीहट्ट० ना० पु० सिलहट नगर विशेष जो ढाका के पूर्व है।
श्रीहिंडोल० ना० पु० राग विशेष।
श्रुत० गु० जो सुना गया।
श्रुति० ना० पु० वेद, कर्ण, कान, समाचार, ना० स्त्री० सुनाहट।
श्रुतिमणि० ना० पु० कुण्डल, कर्णफूल।
श्रुतियुक्ति० ना० स्त्री० वेद की विधि, शास्त्रोक्त।
श्रुतीद्ग० ना० पु० पीलुवृक्ष।
श्रेणी० ना० स्त्री० पंक्ति, लकीर, कतार, समूह, यूथिका।
श्रेय० ना० पु० कल्याण, कीर्त्ति।
श्रेयसी० ना० स्त्री० हड़, गजपीपर, रासना।
श्रेष्ठ० गु० उत्तम, अच्छा, सबसे भला, प्रधान।
श्रेष्ठता० ना० स्त्री० उत्तमता, प्रधानता, भलापन।
श्रोण० ना० पु० रुधिर, रक्त, लोहू, खून।
श्रोणतिलका० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नी।
श्रोणि० ना० स्त्री० कटि, कमर।
श्रोणित० ना० पु० रुधिर, रक्त, लहू।
श्रोत० ना० पु० कान, कर्ण, नदी की धारा, झरना, सोता।
श्रोतव्य० गु० जो सुनने के योग्य।
श्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी।
श्रोता० ना० स्त्री० नदी गु० सुननेहारा।
श्रोत्र० ना० पु० कान, रोमरन्ध्र, सुननेहारा।
श्लाघनीय० गु० बड़ाई के योग्य, मर्य्यादिक।
श्लाघा० ना० स्त्री० स्तुति, मर्य्यादा, बिनती।
श्लाघ्य० ना० पु० श्लाघनीय।
श्लीपद० ना० पु० थम्भ, पीलपाया।
श्लेष० ना० पु० जिसपद के दो अर्थ वा अधिक हों।
श्लेषा० ना० स्त्री० नवां नक्षत्र, अश्लेषा।
श्लेष्मा० ना० स्त्री० कफ, नाकटपकना, जुकाम।
श्लोक० ना० पु० पद्य, छन्द।
श्वशुर० ना० पु० पत्नी वा पति का पिता, ससुर।
श्वश्रू० ना० स्त्री० सास, पत्नी वा पति की माता।
श्वसन० ना० पु० पवन, वायु, यथा (प्रचेता वरुणःपाशी यादसांपतिरप्पतिः, श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वासदागतिः, इत्यमरः)।
श्वसनक० ना० पु० गूमा पौधा।
श्वान० ना० पु० कुत्ता।
श्वास० ना० पु० प्राणवायु, सांस।
श्वेत० गु० शुक्ल, धौला, सुफेद।
श्वेतता० ना० स्त्री० शुक्लता, उज्ज्वलता, सफ़ेदी।
श्वेतदंडी० ना० स्त्री० दूब, घास।
श्वेतपुष्पा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, कनेर वृक्ष।
श्वेतफला० आडूबेर।
श्वेतमूली० ना० स्त्री० पुनर्नवा।
श्वेतराजी० ना० स्त्री० चचेंड़ा तरकारी।
श्वेतसर्षप० ना० पु० सफ़ेद सरसों।
श्वेता० ना० स्त्री० दूब घास।
श्वेतिका० ना० स्त्री० सौंफ।

[ष]

षट्० ना० गु० छः, ६।
षट्कोण० ना० पु० इन्द्रका वज्र, छः कोनेका।
षट्चक्र० ना० पु० छः चक्र अर्थात् आधार, स्वा-

धिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, प्रज्ञा।
षट्पद० ना० पु० भौंरा, मधुमाखी, छन्द विशेष।
षट्पदी० ना० स्त्री० भ्रमरी।
षट्शास्त्र० ना० पु० छः शास्त्र अर्थात्, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, पातंजल, सांख्य, वेदान्त।
षड्ग्रन्थि० ना० स्त्री० पीपरामूल।
षड्ऋतु० ना० पु० छः ऋतु अर्थात् बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर।
षड्ऊर्मी० ना० स्त्री० छः ऊर्मी अर्थात् शीत, उष्ण, दुःख, सुख, मान, अपमान।
षड्लोक० ना० पु० छः लोक अर्थात् भू, अन्तरिक्ष, स्वर्ग, पितृ, सूर्य, ब्रह्मलोक।
षड्गुण० ना० पु० छः गुण अर्थात् निर्भेद, निर्मात्सर्य, निर्मोह, निर्लोभ, निष्क्रोध, निष्काम।
षड्रस० ना० पु० छः रस अर्थात् कडुआ, खट्टा, मीठा, चर्परा, कसेरा, खारा।
षड्ग्रन्था० ना० स्त्री० कचूर भेद।
षड्राग० ना० पु० छः राग अर्थात् मेघ, भैरव, मलार, दीपक, श्रीहिंडोल, मालकोश और झगड़ा बखेड़ा।
षड्वदन० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
षड्विकार० ना० पु० छः विकार अर्थात् उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालकता, प्रौढ़ता, वृद्धता, मृत्यु।
षडंग० ना० पु० शरीर के छः अंग अर्थात् हाथ, पांव, कटि, शिर, वेदके छः अंग अर्थात् ज्योतिष, व्याकरणादि, गोखुरू।
षड्गुधा० ना० स्त्री० बच औषधि।
षणनेत्रिका० ना० स्त्री० कश्यपकी पत्नी।
षड्विंशति० गु० छब्बीस, २६।
षड्विंशतितम० गु० छब्बीसवां।
षड्विधि० ना० स्त्री० छः प्रकार।
षडंगवेद० ना० पु० वेदके छः अंग अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष, छन्दः प्रबन्ध।
षडंगसमाधि० ना० स्त्री० समाधिके छः अंग अर्थात् शम, दम, उपराम, विषय, सुख, दुःख, समान, वेद आचार्य का आज्ञाकारी होना, एकाग्रचित्त।
षडानन० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
षण्ढ० ना० पु० नपुंसक।
षण्मास० ना० पु० छः मास।
षण्मुख० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
षष्ठ० गु० छः, ६, छठवां।
षष्टि० गु० साठ, ६०।
षष्ठी० ना० स्त्री० दुर्गाजी, छठी तिथि, कारक।
षष्ठ्यन्त० गु० जिसके अन्त में षष्ठीका प्रत्यय है।
षोडश० गु० सोलह, १६।
षोड़शचन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा की १६ कला अर्थात् अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूरणा, पूर्ण अमृता १६।
षोड़शविधपूजा० ना० स्त्री० सोलह प्रकार से पूजा अर्थात् आवाहन, स्थापन, पाद्य, सिंहासन, अर्घ, आचमन, स्नान, चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्कार, आरती १६।
षोड़शशृंगार० ना० पु० सोलह शृंगार अर्थात् शुचि, स्नान, निर्मलपट, महावर, बेणीबंधन, मांग सिन्दूर, भालखौरि, तिलकपोल, केसर मर्द्दन, मेहँदीपग, कुसुमाभरण, हेमाभरण, लवंगादि आभरण, दांतोंमें मिस्सी, ताम्बूल, आंखों में सुरमा १६।
षोड़शी० ना० स्त्री० मृतकका कर्म विशेष।

[स]

स० अव्य० जिसशब्द के आदि में इसका

प्रयोग होवे उसका अर्थ सहित, समान, से होता है।

सई० ना० स्त्री० नदी विशेष।

सं० अव्य० समे, सहित, से।

संक्रन्दन० ना० पु० शय्या, इन्द्र।

संयम० ना० पु० त्यागादि नियम, बराव, परहेज।

संयमनी० ना० स्त्री० यमपुरी।

संयमनीपति० ना० पु० यमराज।

संयमी० गु० नियमी, मध्यम।

संयुक्त० गु० मिला हुआ, संलग्न, लगा, जुड़ा।

संयुग० ना० पु० युद्ध, समर, रण, लड़ाई।

संयुत० गु० संयुक्त।

संयोग० ना० पु० मिलान, द्रव्यकामेल, संगत, दैवागत इत्तिफ़ाक़न्।

संयोगी० ना० पु० मिलित, मिलनुसार, संगी।

संरक्त० गु० अरुण, लालवर्ण।

संरम्भ० ना० पु० कोप, क्रोध, अहंकार।

संलग्न० गु० संयुक्त, संगत।

संलग्नी० गु० मिलित, लगाहुआ, संगी, संयोगी।

संलाप० ना० पु० परस्पर बातचीत।

संवत्० ना० पु० वर्ष, शाका, साल, सन्।

संवत्सर० ना० पु० वर्ष, साल।

संवत्सरी० ना० पु० वर्षका व्यवहार।

संवरण० ना० पु० आवरण, आच्छादन।

संवरना० अ० क्रि० सजना, शोभित होना, बनना।

संवर्त्त० ना० पु० स्मृति ग्रन्थ विशेष।

संवर्त्तक० ना० पु० बहेड़ा।

संवल० ना० पु० दैत्य विशेष, जानना मार्गका।

संवलारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।

संवह० ना० पु० मुख्यपवन।

संवाद० ना० पु० बातचीत, प्रश्नोत्तर, चर्चा।

संबाधा० ना० स्त्री० विपत्ति, क्लेश, आफत।

संवार० ना० स्त्री० सजाव, बनाव, शोभा।

संवारना० स० क्रि० सजाना, बनाना, शृंगार करना।

संशय० ना० पु० चिन्ता, सन्देह, भय।

संशयापन्न० गु० सन्देही, चिन्तायुक्त, भयभीत।

संसक्त० गु० समीप, मिला, युक्त।

संसर्ग० ना० पु० संगति, भेद, दर्शन, मेल, पड़ोस, समीप।

संसर्गी० गु० मिलनुसार, चिन्हारी, पड़ोसी, संगती।

संसवा० ना० स्त्री० फटकरी।

संसार० ना० पु० जगत्, गृहाश्रम, दुनिया।

संसारी० गु० लौकिक, जो संसारका है।

संसृत० गु० संसारी, दुनियवी।

संस्कार० ना० पु० स्मरण का हेतु, व्यवहार यथा गर्भाधानादि १० पवित्रता।

संस्कृत० ना० पु० देववाणी।

संस्कृतानुयायी० गु० देववाणी के अनुसार।

संस्कृताभिज्ञ० गु० संस्कृत भाषा जाननेवाले लोग।

संस्थान० ना० पु० ढब, रूप, बनावट, चतुष्पथ।

संस्पर्श० ना० पु० छुआवट, सत, लगाव।

संहत० गु० ठोस, इकट्ठा।

संहति० ना० स्त्री० समूह, ढेर।

संहरण० ना० पु० वध, हनन, मरण, हरण।

संहरना० अ० क्रि० वधहोना, हतहोना, माराजाना।

संहार० ना० पु० नाश, वध, हत्या, गु० मारा, वधा।

संहारक० गु० नाशक, बधिक।

संहारना० स० क्रि० वधना, नाश करना।

संक्षेप० ना० पु० सार, विशेष कथन, गु० थोड़ा, सारांश, चुनाहुआ, मुख्तसर।

संक्षिप्त० गुप्त, छिपा, अप्रकट।

संज्ञक० ना० पु० नामी, नामक।

संज्ञा० ना० स्त्री० नाम, शब्द, शुद्धि, ज्ञान।

सकट० ना० पु० छकड़, लढ़ी, गणेशजी का जन्मोत्सव दिन।
सकटाख्य० ना० पु० धववृक्ष।
सकटासुर० ना० पु० दैत्य विशेष जिसको श्री कृष्ण जीने माराथा।
सकटी० ना० स्त्री० लढ़ी, गाड़ी।
सकत० ना० पु० शक्ति।
सकना० अ० क्रि० सामर्थ्य होना।
सकरा० गु० संकेत, छोटा, तंग।
सकराई० ना० स्त्री० सकेती, तंगी, छोटाई।
सकराना० स० क्रि० सकेत करना, सकोरना। स्वीकार करना, कबूल कराना।
सकरुणा० गु० दयायुत, दीनता से।
सकर्मक० गु० कर्म सहित क्रिया।
सकल० गु० सारा, समस्त, सब, सगरा।
सकाना० अ० क्रि० उदासहोना, थकना, दबना।
सकानी० गु० स्त्री० उदास होगई, लज्जित, दबगई।
सकाम० ना० पु० काम वा कामना सहित।
सकारना० स० क्रि० हुण्डी को लेलेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, क़बूलना।
सकारे० ना० पु० प्रातःकाल, सबेरे।
सकिलना० अ० क्रि० समिटना, हटना।
सकिलाना० स० क्रि० समिटाना, हटाना।
सकुचना० अ० क्रि० डरना, संशयकरना, लजना।
सकुचाना० स० क्रि० लजाना, डराना।
सकुचित० गु० लज्जित।
सकुल० ना० पु० पक्षी, कुलसमेत, समस्त।
सकुलादानी० ना० स्त्री० गंडदूर्वा।
सकेत० गु० सकरा, तंग, छोटा, ना० स्त्री० दुःख आपदा, दुर्भिक्ष।
सकेतना० स० क्रि० समेटना, संकेतकरना।
सकेलना० अ० क्रि० सकुड़ना, समेटना, बटोरना।
सकेल० ना० पु० लोहा विशेष।
सकोच० ना० पु० आदर सन्मान।
सकोरना० स० क्रि० समेटना, संकोचना, तंग करना।
सकोरा० ना० पु० कटोरा, मिट्टी वा काठका छोटा बर्त्तन।
सकोरी० ना० स्त्री० थाली, पिरिच।
सक्रोध० गु० क्रोधसमेत।
सखर० गु० अधिक, खरयुत।
सखा० ना० पु० मित्र, बन्धु, प्रियतम।
सखी० ना० स्त्री० मित्र स्त्री, सहेली, संगिन।
सख्य० ना० स्त्री० मित्रता, प्रीति।
सगड़० ना० पु० सकट, शकट।
सगर० ना० पु० अयोध्याका राजा विशेष।
सगरे० गु० सब, समस्त।
सगर्भ० गु० गर्भिणी, गर्भसमेत।
सगपहिता० ना० पु० साग पड़ीहुई दाल।
सगा० गु० जो एक माता से उत्पन्न है, अपना।
सगाई० ना० स्त्री० भाईचारा, आपस, नाता, मगनी नीच जाति की स्त्रीका दूसरा विवाह, रिश्तह।
सगुन० ना० पु० शकुन।
सगोत्र० ना० पु० समानगोत्र, दूरकासंबन्धी।
सगौती० ना० स्त्री० मांस।
सग्लानि० गु० निरादर, लज्जित।
सघन० गु० घना, बहुतघना, गुंजान।
सध्रीची० ना० स्त्री० सखी, सहेली।
संकट० ना० पु० विपत्ति, दुःख, कष्ट, आपदा।
संकटा० ना० स्त्री० दुर्दशा, दशा विशेष, काशी जीमें देवी विशेष।
संकर० ना० पु० दोवर्णसेजन्मित सन्तान।
संकर्षण० ना० पु० श्रीबलदेवजी, खींचना।
संकल० ना० पु० संग्रह, ढेर, सांकर, जंजीर।
संकलन० ना० पु० जोड़, जोड़ती, योग, सांकल की विधि से गांठना।
संकलित० गु० जो जोड़ागया जो एकपर एक मिलाया गया, ना० पु० गणित।
संकल्प० ना० पु० मनकी इच्छा, नियम, शा-

णीय कर्ममें प्रतिज्ञा विशेष,दान कल्पना।

संकल्पना॰ स॰ क्रि॰ दानदेना, नियम व प्रतिज्ञा करना।

संकाश॰ ना॰ पु॰ तुल्य, प्रकाशयुत।

संकीर्ण॰ गु॰ मचामच घना।

संकीर्त्तन॰ ना॰ पु॰ गुणोंका गान।

संकुचित॰ गु॰ सकुचाया, लज्जित।

संकुल॰ गु॰ मचामच, घना, भराहुआ, पूरा।

संकुलित॰ गु॰ भरा, युक्त।

संकेत॰ ना॰ पु॰ वचन, अवधि, सैन, इंगित, सलाह, इशारह, एकान्त।

संकोच॰ ना॰ पु॰ लाज, लज्जा, केसर, कानि, चिलगोजा, सिमट।

संकोचन॰ ना॰ पु॰ खैंच, सिमटाहट।

संकोचना॰ स॰ क्रि॰ बटोरना, समेटना लजाना, कानिकरना।

संकोची॰ गु॰ लजीला, लाजवन्त।

संक्रम॰ ना॰ पु॰ संचार, गमन।

संक्रान्त॰ गु॰ जो बीतगया, जो एक से दूसरे को सौंपागया।

संक्रान्ति॰ स्त्री॰ एक राशि से दूसरी राशि में सूर्यका जाना।

संखिया॰ ना॰ स्त्री॰ विष विशेष।

संख्या॰ ना॰ स्त्री॰ एकदोआदिगिन्ती, शुमार।

संग॰ ना॰ पु॰ संयोग,मेल, लीलायोथा, अव्य॰ साथ, सहित।

संगपिछ॰ ना॰ पु॰ संचरस।

संगति॰ ना॰ स्त्री॰ मैथुन, भेंट, मेल, मिलाप।

संगम॰ ना॰ पु॰ मेल, मिलाप, मैथुन।

संगर॰ ना॰ पु॰ युद्ध, लड़ाई, आपदा, प्रण, छावनी, लश्कर।

संगसी॰ ना॰ स्त्री॰ संडसी।

संगी॰ ना॰ पु॰ साथी, हमराही, मिलापी।

संगीत॰ ना॰ पु॰ रागभेद, गान, गानेकीविद्या।

संगीतदर्पण॰ ना॰ पु॰ राग विद्या का ग्रन्थ विशेष।

संगोपन॰ ना॰ पु॰ छिपाव, गोपन।

संग्रह॰ ना॰ पु॰ बटोर,संक्षेपन, सारार्थ लेना।

संग्रहण॰ ना॰ पु॰ स्वीकार करना, लेलेना।

संग्रहणी॰ ना॰ स्त्री॰ अतीसाररोगविशेष।

संगृहीत॰ गु॰ जो संग्रह॰ कियागया जो इकट्ठा कियागया।

संग्राम॰ ना॰ युद्ध, समर, रण।

संघ॰ ना॰ पु॰ झुण्ड, समूह, मेला, ढेर, संग।

संघट्ट॰ ना॰ पु॰ संयोग, मिलान, रगड़।

संघट्टन॰ ना॰ पु॰ रगड़न, घिसन।

संघात॰ ना॰ पु॰ मारना, समूह, नरकविशेष।

संघार॰ ना॰ पु॰ संघार।

संघारक॰ ना॰ पु॰ संघारक, काल, भैरव।

संघारना॰ स॰ क्रि॰ संहारना।

सच॰ गु॰ सत्य, साँच, अव्य॰ हां, ठीक।

सचमुच॰ अव्य॰ सचकर।

सचल॰ ना॰ पु॰ चलने की शक्ति समेत, गु॰ जो चल फिरसके यथा मनुष्य, पशु, पक्षी।

सचाई॰ ना॰ स्त्री॰ सत्यता।

सचिव॰ ना॰ पु॰ मंत्री, वज़ीर।

सचिवज॰ ना॰ पु॰ मंत्रीका पुत्र, वज़ीरज़ादह।

सचु॰ ना॰ पु॰ आनन्द, सत्य, सांच।

सचेत॰ / **सचेतन॰** } गु॰ सुचेत, चौकस,चैतन्य,सुर्त्ता।

सचेष्ट॰ गु॰ चेष्टायुत, उद्युक्त।

सचौटी॰ ना॰ स्त्री॰ सचाई, सचकहनेकीचाल।

सच्च॰ / **सच्चा॰** } गु॰ सत्य, ठीक, सीधा।

सच्चाई॰ ना॰ स्त्री॰ सचाई।

सच्चिदानन्द॰ ना॰ पु॰ ब्रह्म, ईश्वर।

सच्छास्त्र॰ ना॰ पु॰ अच्छाशास्त्र।

सज॰ ना॰ स्त्री॰ डौल, ढब, सिंगार, शोभा, रूप।

सजक॰ ना॰ पु॰ स्योना।

सजग॰ गु॰ होशियार, खबरदार, उनींदा, चौकस, चैतन्य।

सजधज० ना० स्त्री० बनावट, रूप, सज।

सजन० ना० पु० पति, प्रियतम।

सजना० अ० क्रि० बनना, फबना, सोहना, पहिरना, सुधरना, ना० पु० सजन, सज्जन।

सजनी० ना० स्त्री० सखी, सहेली।

सजल० गु० जो जल से भरा।

सजला० ना० पु० संझिला भाई, चारभाइयों में से जो तीसरा भाई हो उसका उपनाम।

सजाई० ना० स्त्री० बनवाई, बनावट, सजाय, रामायणे यथा तौ विधिदेइहि मोहिं सजाई।

सजातीय० गु० समान सम जातिका, एक जाति का।

सजाना० स० क्रि० बनाना, रचाना।

सजावट० ना० स्त्री० बनावट, रचावट।

सजीला० गु० सुडौल, सुढब, सुंदर।

सजीव० गु० जीवत, जीवधारी, जीव समेत, आनन्द में।

सजीवनि० ना० स्त्री० बूटीविशेष।

सजोयल० गु० बख्तर समेत, हथियारबन्द।

सज्जन० गु० कुलवन्त, आदरी, साधु, और अच्छा मनुष्य ना० पु० प्रियतम, प्यारा।

सज्जना० अ० क्रि० सजना।

सज्जी० ना० स्त्री० खारविशेष।

सझिया० ना० स्त्री० साझेका खेत आदि।

सझियार० ना० पु० साझी, शरीक।

सझियारा० ना० पु० साझा, शराकत।

संचय० ना० पु० संग्रह, ढेर, समूह।

संचयी० गु० संचय करनेहारा।

संचार० ना० पु० संक्रमण, गूढ़ता से जो चलन, मार्ग, राह, बाट, चलन, निशान।

संचारिका० ना० स्त्री० कुटनी।

संचारिणी० गु० स्त्री० चलानेवाली।

संचित० गु० जो बटोरागया, पूर्वकृत धर्माधर्म।

संचेत० गु० सचेत।

संक्षिप्त० गु० छिपा, गुप्त।

संजात० क्रि० उत्पन्न पैदा।

सकट० ना० पु० लचीलीछड़ी, भगावट, पेचमान हुक्का की नय।

सटकना० अ० क्रि० भागजाना, छिपना, अलग होना।

सटकाई० ना० स्त्री० उतार चढ़ाव।

सटकाना० स० क्रि० निरस करना, छिपाना, भगाना, बोलाना।

सटना० अ० क्रि० मिलना, जुड़ना, चिपकना।

सटपटाना० अ० क्रि० घबड़ाना, डरना।

सटा० ना० स्त्री० गलेके बाल, जटा।

सटाना० स० क्रि० चिपकाना, जोड़ना, लगाना।

सटासट० ना० स्त्री० लगालग।

सटिया० ना० स्त्री० छड़ी।

सटीक० गु० टीकासमेत, तिलकसंयुक्त।

सठियाना० अ० क्रि० साठ वर्ष की आयुसे अधिक होना, बुद्धिबल घटना।

सठोड़ा० ना० पु० पुष्टई विशेष जो प्रसूती को दिया जाता है।

सड़क० ना० स्त्री० राजमार्ग, पथ, पैंड़ा।

सड़न० ना० स्त्री० सड़ाध, गलन।

सड़ना० अ० क्रि० गलना, उबलना।

सड़ा० गु० गला, डबरा।

सड़ांद० }
सड़ांध० } ना० स्त्री० सड़ने की दुर्गन्ध।

सड़ाना० स० क्रि० गलाना, बसाना।

सड़ियल० गु० निर्बल, सड़ाहुआ।

सड़ैंधा० गु० सड़ियल।

संडसी० ना० स्त्री० गहुवा, संगसी, सनसी।

संडा० गु० पोढ़ा, मोटा।

संडास० ना० पु० पायखाना, छरछोभी।

संडासा० ना० पु० बड़ी संडसी।

संडासी० ना० स्त्री० सण्डसी।

सत्० गु० सत्य, ना० पु० सार, हीर, भलमनसात, रस, कीर्त्ति, सचाई।

सतमासा० ना० पु० सातवें महीने के गर्भ में

की पूजा विशेष वा ज्योनार।

सतमी॰ ना॰ स्त्री॰ सप्तमी।

सतर॰ ना॰ स्त्री॰ तिर्छी, टेढ़ी।

सतराना॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधित होना, कुढ़ना।

सतरौहीं॰ ना॰ स्त्री॰ टेढ़ा, तिर्छी।

सतर्क॰ गु॰ सावधान।

सतलज॰ ना॰ स्त्री॰ पंजाबकी नदी विशेष।

सतलड़ा॰ गु॰ सतगुना, जिसमें सातलड़ हैं।

सतसठ॰ गु॰ साठि और सात, ६७।

सतसैया॰ ना॰ स्त्री॰ बिहारीलाल कविकृत ग्रन्थ विशेष।

सतहत्तर॰ गु॰ सत्तर और सात, ७७।

सताना॰ स॰ क्रि॰ दुःखदेना, छेड़ना।

सती॰ ना॰ स्त्री॰ जो स्त्री पतिके साथ अग्नि में जलती है, पतिव्रता, दक्षसुता।

सतीमठ॰ ना॰ पु॰ स्थान जहां सती के अस्थि आदिस्थापन करते हैं।

सतीर्थ॰ ना॰ पु॰ जिन्होंने एक गुरु से अध्ययन किया है, गुरु भाई, साध्यायी, एक साथके पढ़नेहारे।

सतीला॰ गु॰ पराक्रमी।

सतीवाड़॰ ना॰ पु॰ स्थान जिसमें सतीहुई है।

सतुवा॰
सतूआ॰ } ना॰ पु॰ सत्तू।

सत्कर्म॰ ना॰ पु॰ भलाकर्म, ठीक काम।

सत्कार॰ ना॰ पु॰ सन्मान, लोथकाजलाना।

सत्कारी॰ ना॰ पु॰ मुर्देका जलानेवाला, सम्मान वा आदर करनेहारा।

सत्क्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ मृतककी सुगति, उत्तम कर्म, आवभगति।

सत्तम॰ गु॰ श्रेष्ठ, बड़ा, मर्य्यादिक, साधुओं में जो सबसे अच्छा।

सत्तर॰ गु॰ सातदहाई, ७०।

सत्तरह॰ गु॰ दश और सात, १७।

सत्ता॰ ना॰ स्त्री॰ बल, पराक्रम, गंजीफ़ा में जो सात, आकार, वजूद।

सत्ताईस॰ गु॰ बीस और सात, २७।

सत्तानबे॰ गु॰ नब्बे और सात, ९७।

सत्तावन॰ गु॰ पचास और सात, ५७।

सत्तासी॰ गु॰ अस्सी और सात, ८७।

सत्तू॰ ना॰ पु॰ भूनेयव आदिका चून।

सत्पथ॰ ना॰ पु॰ सन्मार्ग, अच्छामार्ग।

सत्पुत्र॰ ना॰ पु॰ सुपूत, भलापुत्र।

सत्य॰ गु॰ यथार्थ, ठीक, निश्चय, सांच।

सत्यकेतु॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष, सत्यकी पताका।

सत्यता॰ ना॰ स्त्री॰ भलाई, सचाई।

सत्ययुग॰ ना॰ पु॰ प्रथमयुग जो सत्रह लाख अट्ठाईस सहस्रवर्षका प्रमाण है।

सत्यभामा॰ ना॰ स्त्री॰ श्री कृष्णकीस्त्रीविशेष।

सत्यभाव॰ ना॰ पु॰ सीधा स्वभाव।

सत्यलोक॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मलोक स्वर्ग विशेष।

सत्यवचन॰ ना॰ पु॰ यथार्थ कहना, ठीक।

सत्यवती॰ ना॰ स्त्री॰ वेदव्यास की माता, पतिव्रता स्त्री।

सत्यवाद॰ ना॰ पु॰ सत्यवचन, ठीकवार्त्ता।

सत्यवादी॰ गु॰ सच्चा, सचकहनेहारा।

सत्यसिन्धु॰ गु॰ बड़ासच्चा।

सत्यानाश॰ ना॰ पु॰ सम्पूर्णनाश, बिगड़ना।

सत्यानाशी॰ ना॰ स्त्री॰ कटीला पौधाविशेष, गु॰ जो बिगड़गया, नष्ट।

सत्यानृत॰ ना॰ पु॰ वाणिज्य, व्यापार।

सत्ययुग॰ ना॰ पु॰ सद्युत, सत्ययुग।

सत्त्व॰
सत्त्वगुण॰ } ना॰ पु॰ भलाईका गुण।

सत्वन्ता॰ गु॰ भला कीर्त्तिमान्।

सत्वर॰ अव्य॰ तुरन्त, शीघ्र, जल्द।

सथराव॰ ना॰ पु॰ युद्धमें जो मारेगये उनका ढेर।

सथिया॰ ना॰ पु॰ अस्त्र वैद्य, जर्राह, चिह्न विशेष जो महाजन लोग खाते के प्रथमपत्र में करते हैं।

सद् अव्य॰ सद्य, तत्क्षण गु॰ श्रेष्ठ।
सदन॰ ना॰ पु॰ स्थान, घर, मकान।
सदय॰ गु॰ दयायुत, दयासहित।
सदया॰ ना॰ स्त्री॰ अमदवत्, पक्षी की स्त्री।
सदस्य॰ ना॰ पु॰ कर्म करने में जो न्यूनाधिक का विचार करे वा सुधारे, देखैया।
सदा॰
सदाई॰ } अव्य॰ सर्वदा, नित्य, हमेशह।
सदाकार॰ ना॰ पु॰ आंब का वृक्ष वा अम्ब।
सदागति॰ ना॰ पु॰ पवन, वायु।
सदाचार॰ ना॰पु॰ सर्वदाकाल आचार करना, श्रेष्ठाचार, पवन, वायु, हवा।
सदानन्द॰ ना॰ पु॰ सर्वत्र वा सर्वदाकाल प्रसन्न, श्रीगुरु।
सदापुष्प॰ ना॰ पु॰ मदारवृक्ष, कुन्दवृक्ष, वृक्ष जिसमें सर्वदाकाल फूल लगते हों।
सदाफल॰ ना॰ पु॰ नारियलवृक्ष, बेलवृक्ष, गूलरवृक्ष, कटहल, गु॰ वृक्ष जिसमें सदाफल मिलता हो।
सदाव्रत॰ ना॰ पु॰ अतिथों और सन्तादि को नित्य भोजन देना।
सदाशिव॰ ना॰ पु॰ श्रीशिवजी का एकनाम।
सदासुहागन॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षीविशेष, फूल विशेष, फ़कीर वा भिक्षुक, जो स्त्री का भेष करता है।
सदेह॰ गु॰ देहसमेत।
सदृश॰ बराबर, तुल्य, समान।
सदेश॰ गु॰ समीप, पास।
सदैव॰ अव्य॰ सदा॰ सर्वदा।
सदैविक॰ गु॰ सबदिन का, नित्यक।
सदोष॰ गु॰ दोषसमेत।
सद्गति॰ ना॰ स्त्री॰ निस्तार, मुक्ति, त्राण।
सगन्द॰ ना॰ स्त्री॰ सुगन्ध।
सद्दल॰ ना॰ पु॰ समूह, गिरोह।
सद्म॰ ना॰ पु॰ घर, स्थान, मकान।

सद्य॰
सद्यः॰ } अव्य॰ तुरन्त, तत्क्षण।
सद्वक्ता॰ गु॰ सत्य कहने हारा।
सद्विवेक॰ ना॰ पु॰ सत्यविवेक, उत्तमज्ञान।
सद्विवेचक॰ ना॰ पु॰ जो यथार्थ को विचारे।
सधन॰ ना॰ पु॰ धन समेत।
सधना॰ अ॰ क्रि॰ बनना, हिलना, ठहरना, थंभना।
सधवा॰ ना॰ स्त्री॰ सुहागिन, पतिवती स्त्री।
सधाना॰ स॰ क्रि॰ सिखाना, बनाना, हिलाना, पूराकरना, ठहराना, थंभाना।
सधी॰ गु॰ बुद्धिसमेत, कन्यासमेत, हिली, ठहरीहुई, सीखीहुई।
सन॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष जिसकी त्वचा की रस्सी बनाते हैं, अव्य॰ से।
सनकार॰ ना॰ पु॰ सैन, इशारह।
सनकारना॰ स॰ क्रि॰ सैनदेना, इशारह करना।
सनकारा॰ गु॰ इशारहकिया गया, जो सैन दिया हुआ।
सनत॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष।
सनत्कुमार॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक जो आदि पुरुष था।
सनना॰ अ॰ क्रि॰ गर्भिणी होना, भरना, मलना, गुन्धना।
सन्निपात॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष, जो कफ पित्त वात के बिगड़ने से होता है।
सना॰ ना॰ पु॰ स्त्री॰ औषधि विशेष, सनाय।
सनाढ्य॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणजाति विशेष।
सनातन॰ गु॰ जिसका आरम्भ और अन्त नहीं है जो नित्य रहेगा।
सनाथ॰ गु॰ नाथ सहित, निहाल, कृतार्थ।
सनाह॰ ना॰ पु॰ बख्तर, गु॰ पति समेत।
सनिया॰ ना॰ पु॰ टसर का वस्त्र विशेष।
सनीचर॰ ना॰ पु॰ शनैश्चर।
सनीचरा॰ गु॰ अभागा, अपयशी, ना॰ पु॰

ग्वालियर के निकटपर्वत विशेष जिसपर सनीचर की मूर्त्ति है।

सनेह॰ ना॰ पु॰ तेल, गु॰ स्नेह।

सन्त॰ ना॰ पु॰ साधुविशेष, ईश्वरसेवन, गु॰ अच्छाधनी, भला।

सन्तत॰ अव्य॰ निछल, निरन्तर।

सन्तति॰ ना॰ स्त्री॰ सन्तान, वंश, पुत्रादि औलाद।

सन्तप्त॰ गु॰ पीड़ित, दुःखित, सतायागया, सन्तापसहित।

सन्तरण॰ ना॰ पु॰ तरणा, मुक्तहोना।

सन्ता॰ गु॰ बिगड़ा।

सन्तान॰ ना॰ पु॰ वंश, लड़केबाले, कल्पवृक्ष।

सन्ताप॰ ना॰ पु॰ शोक, पीड़ा, दुःख।

सन्तापित॰ गु॰ सन्तप्त, सतायागया, पीड़ित।

सन्तापी॰ गु॰ शोकसंयुक्त, उदास, दुःखी।

सन्ती॰ ना॰ पु॰ बदला, अव्य॰ बदले, पलटे, लिये।

सन्तुष्ट॰ गु॰ धीरजी, सन्तोषी, तृप्त, मनभरा, हर्षित।

सन्तोष॰ ना॰ पु॰ आनन्द, धीरज, हर्ष, सुख।

सन्तोषी॰ गु॰ धीरजवान्, आनन्दी, हर्षित।

सन्था॰ ना॰ स्त्री॰ पाठ, सबक़।

सन्दर्श॰ ना॰ स्त्री॰ सण्डसी, सन्सी।

सन्दर्शन॰ ना॰ पु॰ साक्षात्कार।

सन्दान॰ ना॰ पु॰ दानदेना, रस्सी जो घोड़ा आदि के पांवमें बांधते हैं, सुनारों का हथियार विशेष।

सन्दिग्ध॰ गु॰ सन्देहयुत, भरमीला।

सन्दिग्धभूत॰ ना॰ पु॰ जिस के बीतने में सन्देह हो।

सन्देश॰, **सन्देशा॰**, **सन्देस॰**, **सन्देसा॰** } ना॰ पु॰ समाचार, पैगाम, ख़बर।

सन्देसी॰ ना॰ पु॰ दूत, पैगम्बर।

सन्देह॰ ना॰ पु॰ संशय, शंका, चिन्ता, शक।

सन्देहिक॰ गु॰ जिसमें सन्देहहो।

सन्देही॰ ना॰ पु॰ संशयी, चिन्तायुक्त।

सन्दोह॰ ना॰ पु॰ समूह, बहुतायत।

सन्धान॰ ना॰ पु॰ अन्वेषण, खोज, झांक, लगान, लगावट, मिलान।

सन्धानना॰ स॰ क्रि॰ जोड़ना, लगाना, ताकना।

सन्धाना॰ ना॰ पु॰ आचार।

सन्धि॰ ना॰ स्त्री॰ मेल, संयोग, मिलाप, छिद्र, दरार, मिला।

सन्ध्या॰ ना॰ स्त्री॰ सायंकाल, गोधूलि, सांझ, त्रिकाल में उपासना समय का नाम, यथा सूर्य्योदय, मध्याह्न, सूर्य्यास्त।

सन्नाटा॰ ना॰ पु॰ जलकी लहरोंका जो शब्द, वायु वा झड़ी, से जो शब्द होता है।

सन्निकर्ष॰ ना॰ पु॰, **सन्निधान॰** ना॰ पु॰, **सन्निधि॰** ना॰ स्त्री॰ } समीप, समीपी, निकटता, समीपहोना।

सन्निपात॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष, सर्सांम।

सन्निहित॰ गु॰ निकट, समीप, पास।

सन्मान॰ ना॰ पु॰ आदर, सत्कार, मर्य्यादा।

सन्मानार्थ॰ गु॰ जिस शब्द से प्रतिष्ठापाई जाती है।

सन्मानी॰ गु॰ शिष्टाचारी, आदरी, सत्कारी।

सन्मुद॰ ना॰ पु॰ हर्ष, प्रीति, आनन्दी, खुशी।

सन्न्यास॰ ना॰ पु॰ चौथा आश्रम, दिगम्बर।

सन्न्यासी॰ ना॰ पु॰ चौथाआश्रमी, दिगम्बरी।

सपदि॰ अव्य॰ तत्क्षण, तुरन्त, अभी।

सपना॰ ना॰ पु॰ स्वप्न।

सपल्लव॰ गु॰ सहित पल्लव, पत्तेसहित।

सपक्ष॰ ना॰ पु॰ सहायक, संगी, गु॰ पंख समेत।

सपीतक॰ ना॰ पु॰ घीयातुरई।

सपुत्र॰ ना॰ पु॰ लड़के सहित।

सपुष्पा॰ ना॰ स्त्री॰ स्वर्णकेतकी।

सपूत॰ ना॰ पु॰ सुपूत।

सपूताई॰
सपूती॰ } ना॰ स्त्री॰ सत्पुत्रता, सुपूती।

सपेला॰ ना॰ पु॰
सपोला॰ ना॰ पु॰
सपोलिया॰ ना॰ स्त्री॰ } सांपकाबच्चा, छोटा सांप, जन्मता सांप का बच्चा।

सप्त॰ गु॰ सात ७।

सप्तईति॰ ना॰ स्त्री॰ सातईति अर्थात् अनावृष्टि १ अतिवृष्टि २ टीड़ी ३ मूषक ४ शुक ५ स्वसैन्य ६ परसैन्य ७।

सप्तऋषि॰ ना॰ पु॰ सातऋषि अर्थात् कश्यप१ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वशिष्ठ ७।

सप्तजिह्वाग्नि॰ ना॰ पु॰ अग्निकी सातजिह्वा अर्थात् काली १ कराली २ जयवती ३ रक्तवर्णिका४ ज्वलनी ५ धूम्रपुष्पा ६ धूम्रशीर्षा ७।

सप्तति॰ गु॰ सत्तर ७०।

सप्तदश॰ गु॰ सत्तरह १७।

सप्तदेवपुरी॰ ना॰ स्त्री॰ सात देवपुरी अर्थात् विष्णुपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती४ अलकावती ५ वरुणावती ६ और यमपुरी ७।

सप्तद्वीप॰ ना॰ पु॰ सातद्वीप अर्थात् जम्बू १ प्लक्ष २ कुश ३ क्रौंच ४ शाक ५ शाल्मलि ६ पुष्कर ७।

सप्तपाताल॰ ना॰ पु॰ सात पाताल अर्थात् अतल, वितल, रसातल, तलातल,महातल, पाताल, सुतल,७।

सप्तपुरी॰ ना॰ स्त्री॰ अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, द्वारका ७।

सप्तम॰ गु॰ सातवां।

सप्तमी॰ ना॰ स्त्री॰ सतवींतिथि, अधिकरण।

सप्तम्यन्त॰ गु॰ जिसके अन्तमें, सप्तमी का प्रत्यय है।

सप्तमुख्यअप्सरा॰ ना॰ स्त्री॰ घृताची १ मेनका २ रम्भा ३ उर्वसी ४ तिलोत्तमा५ सुकेशी ६ मंजुघोषा ७।

सप्तमुख्यवायु॰ ना॰ पु॰ सातमुख्यपवन अर्थात् आवाह, प्रवाह, अनुवह, संवह, दिवह, परावह, परिवाह ७।

सप्तयुद्ध॰ ना॰ पु॰ सात प्रकारका समर अर्थात् धनुष, चक्र, कुंत, खड्ग, गदा, छुरिका, मल्ल ७।

सप्तराज्यांग॰ ना॰ पु॰ राज्य के सात अंग अर्थात् स्वामी, मंत्री, देश, कोश, मित्र, गढ़, सैन्य, ७।

सप्तविंशति॰ गु॰ सत्ताईस २७।

सप्तविंशतितम॰ गु॰ सत्ताईसवां।

सप्तसिंधु॰ ना॰ पु॰ सात समुद्र अर्थात् लवणोद, रसोद, सुरानिधि, घृतनिधि, दधिनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि ७।

सप्तस्वर॰ ना॰ पु॰ सातस्वर अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पंचम ७।

सप्तस्वर्ग॰ ना॰ पु॰ सातस्वर्ग अर्थात् भूर्लोक भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक ७।

सप्ताश्व॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

सप्ताह॰ ना॰ पु॰ अठवारा, हफतह।

सप्ति॰ ना॰ पु॰ घोड़ा, यथा वाजिवाहार्व गंधर्व हय सैन्धव सप्तय इत्यमरः।

सफरी॰ ना॰ स्त्री॰ मत्स्य, मछली।

सब॰ गु॰ सर्व, सारा, नां॰ स्त्री॰ सत।

सबरस॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

सबल॰ गु॰ बलवान्, प्रौढ़, पहलवान।

सबलता॰
सबलाई॰ } ना॰ स्त्री॰ बल, प्रौढ़ता, पहलवानी।

सबेर॰ गु॰ समय से पहले, ठीक वा अच्छे समय।

सबेरा॰ ना॰ पु॰ भोर, प्रातःकाल, तड़का।

सबेरे॰ अव्य॰ तड़के, भोरहे।

समोतर० गु० सर्वत्र।
सभय० गु० भयसमेत, भयभीत।
सभव० ना० पु० जन्म, गु० विभव सहित।
सभा० ना० स्त्री० कचहरी, मण्डली।
सभासद्० ना० पु० दरबारी, सभा में बैठनेहारा वा विचारकरनेहारा।
सभीत० गु० डराभया, भययुत।
सभ्य० ना० पु० सभा के कार्य्य में जो सहायक है, गु० जो सभा के योग्य है।
सभ्रम० ना० पु० भूल, गु० भूल से भ्रम सहित।
सम० गु० तुल्य, सर्व, बराबर, वासनात्यागेहुये।
समकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का वह भाग जो शीतकटिबन्ध और मध्यरेखा के बीच ४६½ अंश है।
समग्र० गु० समस्त, सारा।
समग्रता० ना० स्त्री० सम्पूर्णता।
समंगा० ना० स्त्री० खिरहटी।
समंगी० ना० स्त्री० मजीठ, लजारू।
समझ० ना० स्त्री० बूझ, ज्ञान, विचार।
समझना० अ० क्रि० बूझना, विचारना।
समझवार० गु० विचारवान्, ध्यानी, ज्ञानी।
समझाना० स० क्रि० बुझाना, जताना, बताना।
समझौती० } ना० स्त्री० समझानेका काम।
समझावा० }
समञ्जस० ना० पु० योग्यता उचितता, गु० योग्य।
समता० ना० स्त्री० समभाव, एकता, बराबरी।
समदर्शी० गु० मध्यभावी, तुल्यदृष्टि, सबको समजाने।
समद्विबाहु० गु० जिसकी दो भुजा तुल्यहों।
समधिन० ना० स्त्री० अपने पुत्र वा पुत्री की सास।
समधियाना० ना० पु० समधी का घर घराना।
समधी० ना० पु० अपने पुत्र व पुत्रीका ससुर, गु० समबुद्धि।
समन्त० ना० पु० सेंहुड़वृक्ष।
समन्वय० ना० पु० आपस में बहुतों का मेल।
समन्वित० गु० आपस में मिलित, संयुक्त।
समभाव० ना० पु० समता, बराबरी।
समय० ना० पु० काल, जून, अवसर, वक्त, सावकाश, अच्छेदिन।
समर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, रण, कामदेव।
समररस० ना० पु० वीरत्व, बहादुरी।
समर्थ० गु० बलवान्, योग्य, हिम्मतवर।
समर्थी० गु० सामर्थी, ताक़तवर।
समर्पण० ना० पु० सौंपना, अर्पण, त्याग, देन।
समर्पित० गु० सौंपागया, अर्पित, त्यागित।
समल० गु० पापी, मैला।
समवाय० ना० पु० भीड़, समूह, न्याय शास्त्र में सम्बन्ध विशेष।
समशील० गु० तुल्यभाव, समभाव, समता।
समसूत्र० गु० सीधासूत।
समसूत्रपात० ना० पु० सीधासूतका पड़ना वा डालना।
समस्त० गु० सकल, सारा, सब।
समस्या० ना० स्त्री० समासार्थ, श्लोक के पूर्णार्थ एकदेशका कहना।
समक्ष० गु० साक्षात्, साम्हने।
समत्रिबाहु० गु० जिस त्रिभुज की तीनों भुजायें समान हों।
समा० ना० पु० समय, बहुतात, दिशा, मिलाप।
समाई० ना० स्त्री० सन्तोष, धैर्य्य, शक्ति।
समाक्रन्त० ना० पु० पित्तामित्ता।
समागत० ना० पु० संयोग, अवाई, पहुँच।
समागम० ना० पु० संयोग, मिलाप, अवाई।
समाचार० ना० पु० सन्देशा, वृत्तान्त, चर्चा।
समाचारपत्र० ना० पु० चिट्ठी, अखबार।

समाज० ना० गु० सामग्री, कचहरी, समूह, साथ, संक्षेप ।

समाजी० ना० पु० नृत्यकोंके साथ जो बजाने हारे समाज के बैठनेहारे ।

समादर० ना० पु० सन्मान ।

समाधान० ना० पु० चुकौता, निपटारा, मिलाप, शांति, चैन ।

समाधि० ना० स्त्री० परमात्माकी ओर एकाग्र चित्त बैठना, मुख, थिरता, योगीकी गुफा, स्थान जिसमें मृतकजनको गाड़ते हैं ।

समान० गु० तुल्य एकसा, मानयुत, ना० स्त्री० समता, ना० पु० प्राणवायु विशेष ।

समानता० ना० स्त्री० समता ।

समानवर्त्ती० ना० पु० धर्मराज, गु० एकरस ।

समाना० अ० क्रि० अमाना, प्रविशजाना ।

समानान्तर० ना० पु० तुल्यान्तर, मुतवाज़ी ।

समापन० ना० पु० समाप्ति ।

समाप्त० गु० जो हो चुका, जो पूराहुआ ।

समालू० ना० पु० पौधा विशेष ।

समावेश० ना० पु० प्रवेश, संग्रह ।

समास० ना० पु० दो तीनपदोंका एकपद करना, शब्दों की बनावट ।

समासा० ना० स्त्री० खिरहटी ।

समिटना० अ० क्रि० बटुरना, इकट्ठा होना ।

समिध० ना० स्त्री० होमने के लिये लकड़ी, इन्धन ।

समीकरण० } ना० पु० तुल्य करनेवाला,
समीकार० } मसावात ।

समीचीन० ना० पु० सचाई, गु० सच्चा, ठीक, योग्य ।

समीप० गु० निकट, पास ।

समीपता० ना० स्त्री० निकटता ।

समीपी० गु० निकटवासी, पासवाला, ना० स्त्री० समीपता ।

समीर० ना० पु० वायु, पवन, बयार ।

समीरण० ना० पु० समीर ।

समुचित० गु० यथायोग्य ।

समुच्चय० ना० पु० समूह, संग्रह, वाक्यों का योग ।

समुच्चयार्थक० गु० जिससेशब्दों वा वाक्योंका मिलाप होताहै ।

समुत्पाटन० ना० पु० उखाड़न ।

समुदय० ना० पु० समुदाय ।

समुदाय० ना० पु० समूह, गिरोह, इकट्ठा ।

समुद्र० ना० पु० सागर, निधि ।

समुद्रफल० ना० पु० औषधि विशेष ।

समुद्रफेन० ना० पु० समुद्रका फेना ।

समुद्राता० ना० स्त्री० जवासा ।

समुद्रान्त० अव्य० समुद्रतक ।

समुद्रसोख० ना० पु० औषधि विशेष ।

समुद्रीय० गु० जो समुद्र का हो ।

समूचा० गु० पूरा, सम्पूर्ण ।

समूढ़० ना० पु० समूह, गिरोह, भीड़ (प्रौढ़ रूढ़िको समूढ़ गढ़ गेह में गयो, शुक्र मंत्र शोधि शोधि हेम को जहीं भयो, इति रामचन्द्रिकायाम् ।

समूल० गु० मूलसमेत, जड़समेत ।

समूह० ना० पु० भीड़, ढेर, मण्डली, बहुतात ।

समृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती ।

समै० ना० पु० समय ।

समेट० ना० स्त्री० संकोचन करनेके लिये औषध विशेष, बटोर, सकोड़ ।

समेटना० स० क्रि० बटोरना, सकोड़ना, इकट्ठा करना ।

समेत० अव्य० सहित, साथ ।

समोना० स० क्रि० गर्म पानी में ठंढा पानी मिलाना ।

समौ० ना० पु० समय ।

सम्पति० }
सम्पत्ति० } ना० स्त्री० धन, समृद्धि, सुभाग, दौलत ।
सम्पदा० }

सम्पन्न॰ गु॰ परिपूर्ण, जो पूरा होचुका, भाग्यवान्, भराहुआ।

सम्पर्क॰ ना॰ पु॰ सम्बन्ध, मिलाव, संयोग, मैथुन।

सम्पात॰ ना॰ पु॰ छुआवट, गिरना, स्पर्श।

सम्पाति॰ ना॰ पु॰ गिद्ध विशेष।

सम्पादक॰ ना॰ पु॰ सम्पादन करने हारा।

सम्पादन॰ ना॰ पु॰ प्राप्ति।

सम्पादित॰ गु॰ प्राप्त।

सम्पुट॰ ना॰ पु॰ डब्बा, जुड़ाव, बंधाव।

सम्पूरण॰ } **सम्पूर्ण॰** } परिपूर्ण, सारा, समस्त।

सम्प्रति॰ अव्य॰ अभी।

सम्प्रदान॰ ना॰ पु॰ चतुर्थी, कारक विशेष जिसके लिये कर्त्ता क्रिया सिद्धकरे।

सम्प्रदाय॰ ना॰ पु॰ परम्परा का धर्म।

सम्फुल्ल॰ गु॰ फूला विकसा।

सम्बद्ध॰ गु॰ संयुक्त, जो बांधागया, जो घेरा गया।

सम्बन्ध॰ ना॰ पु॰ सम्पर्क, नाता, लगाव, तुक, इशारह, कारक विशेष, षष्ठी।

सम्बन्धी॰ गु॰ नातेदार, रिश्तेदार, ना॰ पु॰ गोत्री, समधी।

सम्बर॰ ना॰ पु॰ दैत्य विशेष, सम्बल, पानी मेल।

सम्बरारि॰ ना॰ पु॰ कामदेव, प्रद्युम्नजी।

सम्बल॰ ना॰ पु॰ जानना मार्ग का, दैत्य विशेष।

सम्बुक॰ } **सम्बूक॰** } ना॰ पु॰ घोंघा, कौड़ी, शंख।

सम्बोधन॰ ना॰ पु॰ सन्मुख करने के लिये जो शब्द यथा हे, भो, धीरजकरना।

सम्भलना॰ अ॰ क्रि॰ थंभना, सुधरना, खड़ा होना।

सम्भव॰ ना॰ पु॰ योग्यता होनहार उद्भव, गु॰ होनेके योग्य।

सम्भवा॰ ना॰ स्त्री॰ गोरोचन।

सम्भार॰ } **सम्भाल॰** } ना॰ पु॰ थंभाव, सुधारु, रक्षा।

सम्भालना॰ स॰ क्रि॰ थांभना, सुधारना, रक्षा करना।

सम्भावना॰ ना॰ स्त्री॰ होने की योग्यता, क्रिया के शक्त्यर्थ नियमका अभिप्राय, इच्छा।

सम्भावनीय॰ गु॰ होनहार।

सम्भावित॰ गु॰ बड़ामान्य।

सम्भाषण॰ ना॰ पु॰ बोलचाल, बातचीत।

सम्भूत॰ ना॰ पु॰ उत्पन्न, पैदा।

सम्भोग॰ ना॰ पु॰ सुख, हर्ष, स्त्री प्रसंग।

सम्भ्रम॰ ना॰ पु॰ आदर, सन्मान, उतावली, डर, डबडबाहट।

सम्मत॰ } **सम्मति॰** } ना॰ स्त्री॰ इच्छा, स्वीकार, विचार, समानता, सलाह, राय।

सम्मीक॰ ना॰ पु॰ समर, युद्ध, रण।

सम्यक्॰ अव्य॰ सब, योग्यता से, ठीक रीतिसे, अच्छीतरह।

सयन॰ ना॰ पु॰ शयन, इशारह, संकेत।

सयान॰ ना॰ पु॰ चतुराई, प्रवीणता, छल।

सयाना॰ गु॰ चतुर, प्रवीण, छली, पक्का।

सर॰ ना॰ पु॰ ताल, कुण्ड, शर।

सरकण्डा॰ ना॰ पु॰ नरकट विशेष।

सरकना॰ अ॰ क्रि॰ हटना, भागना।

सरकाना॰ स॰ क्रि॰ खिसकाना, भगाना।

सरयू॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष।

सरट॰ ना॰ पु॰ गिरगिट, गिरगिदाना।

सरद॰ ना॰ पु॰ शरद् ऋतु।

सरदः॰ ना॰ पु॰ फल विशेष।

सरन॰ ना॰ स्त्री॰ शरण।

सरना॰ अ॰ क्रि॰ बनना॰ चलना, निकलना, सड़ना, शरण।

सरनागत॰ ना॰ पु॰ शरणागत।

सरणागतवत्सल॰ गु॰ शरणागतों पर जो दयाल अर्थात् ईश्वर।

सरपट॰ ना॰ पु॰ बगछूट।

सरपत॰ ना॰ पु॰ पतलो, पतावर, सैंठा, कण्डा।

सरभ॰ ना॰ पु॰ बन्दर विशेष, अव्य॰ शीघ्रता।

सरल॰ गु॰ सीधा, साझा, साधारण, वासन्ती पौधा विशेष।

सरला॰ गु॰ सीधा, ऊंचा, दीर्घ।

सरलाशिता॰ ना॰ स्त्री॰ निसोत।

सरवरि॰ ना॰ स्त्री॰ बराबरी।

सरस॰ गु॰ श्रेष्ठ, अधिक, बहुत, रससमेत।

सरसई॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती नदी।

सरसाई॰ ना॰ स्त्री॰ अधिकाई, बहुतात।

सरसाना॰ अ॰ क्रि॰ बढ़ना, अधिकहोना।

सरसी॰ ना॰ स्त्री॰ तालाब।

संरसों॰ ना॰ स्त्री॰ सर्षप, राई विशेष।

सरस्वती॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष, वाणी की देवता और राग और विद्या की प्रतिपालक, संस्कृत भाषा की बनाने हारी।

सरा॰ ना॰ पु॰ शराब, चिता।

सराई॰ नां॰ स्त्री॰ छोटासरा।

सराप॰ ना॰ पु॰ शाप, श्राप।

सरापना॰ स॰ क्रि॰ शापदेना।

सरावक॰ ना॰ पु॰ जाति विशेष, जैनी।

सरावन॰ ना॰ पु॰ हेंगा, पटेला, जिसको फिराकर खेत के ढेले तोड़ते हैं।

सराह॰ ना॰ स्त्री॰ स्तुति, बड़ाई, महिमा।

सराहना॰ स॰ क्रि॰ स्तुति करना, बड़ाईकरना।

सरिगम॰ ना॰ पु॰ गान विद्या में स्वर बताने के लिये पहिलापद।

सरिणी॰ ना॰ स्त्री॰ गन्धपसारन।

सरित॰ ना॰ स्त्री॰ नदी।

सरिता॰ ना॰ स्त्री॰ नदी।

सरित्पति॰ ना॰ पु॰ समुद्र।

सरिस॰ गु॰ बराबर, तुल्य।

सरी॰ ना॰ स्त्री॰ विनाफलका शर, सरकण्डा जिससे तीर बनाते हैं।

सरीखा॰ गु॰ सदृश, समान, तुल्य।

सरुज॰ गु॰ रोगी, मरीज।

सरुट॰ } **सरुष॰** } गु॰ क्रोधयुत, क्रोधसमेत।

सरूप॰ ना॰ पु॰ स्वरूप।

सरूप्य॰ ना॰ पु॰ सारूप्य।

सरेखा॰ ना॰ स्त्री॰ श्लेषा।

सरेश॰ ना॰ पु॰ काठ आदि जोड़ने के लिये लासा।

सरोज॰ ना॰ पु॰ कमल।

सरोता॰ ना॰ पु॰ सुपारी काटने का हथियार।

सरोवर॰ ना॰ पु॰ तालाब, तड़ाग।

सरोष॰ गु॰ क्रोधयुत, रोष सहित।

सरोही॰ ना॰ स्त्री॰ खड्ग विशेष।

सर्करा॰ ना॰ स्त्री॰ खांड, शकर, बालू, धूलि।

सर्ग॰ ना॰ पु॰ स्वभाव, मोक्ष, उत्पत्ति।

सर्ज॰ } **सर्जरस॰** } ना॰ पु॰ राल।

सर्जिका॰ ना॰ स्त्री॰ सज्जी।

सर्प॰ ना॰ पु॰ सांप।

सर्पदंष्ट्रा॰ ना॰ स्त्री॰ मेढ़ासिंगी।

सर्पपति॰ } **सर्पराज॰** } ना॰ पु॰ शिवजी, नागराज।

सर्पारि॰ ना॰ पु॰ न्योला, गरुड़, मयूर।

सर्व॰ गु॰ सब, समस्त, ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष।

सर्वकाल॰ ना॰ पु॰ नित्य, सदा, हमेशह।

सर्वगत॰ गु॰ सर्वत्र, व्याप्त, सबजगह मौजूद।

सर्वतोभद्र॰ ना॰ पु॰ नींबवृक्ष, मण्डल विशेष चारों कोण का मन्दिर वा राजघर जिस में चार द्वार हों।

सर्वत्र॰ अव्य॰ सबठौर, सबजगह।

सर्वथा॰ अव्य॰ सब विधि, सब प्रकारसे।

सर्वदा॰ अव्य॰ सदा, हमेशह, नित्य।

सर्वनाम॰ ना॰ पु॰ सर्व विश्वआदि पैंतीस शब्द, वह शब्द जो संज्ञाका आदेशहो।

सर्वनाश॰ ना॰ पु॰ सत्यानाश।

सर्वनाशक॰ गु॰ सबका नाशकरनेहारा।

सर्वभक्षक॰ / सर्वभक्षी॰ } ना॰ पु॰ सब कुछ खानेवाला, सर्वांगी, धर्म्महीन, भ्रष्ट।

सर्वभक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी।

सर्वमंगला॰ ना॰ स्त्री॰ भवानी, पार्वती, दुर्गा।

सर्वमय॰ गु॰ जो सर्वत्रफैलगयाहो, सम्पूर्ण।

सर्वव्यापक॰ / सर्वव्यापी॰ } गु॰ सर्वत्र पहुंचनेहारा।

सर्वस॰ / सर्वसु॰ / सर्वस्व॰ } ना॰ पु॰ सम्पूर्णद्रव्य, सर्वसम्पदा।

सर्वज्ञ॰ / सर्वज्ञानी॰ } ना॰ पु॰ श्रीविष्णुनारायण, श्रीशिवजी, गु॰ सबका जाननेहारा।

सर्वाङ्ग॰ ना॰ पु॰ सारा शरीर, मत विशेष, सब मतोंका सारार्थ धर्म।

सर्वाङ्गी॰ गु॰ सर्वांग का ज्ञाता वा कारक।

सर्वाणी॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीपार्वती।

सर्वाभीष्ट॰ ना॰ पु॰ सब मनोवृत्ति और सकल इच्छा।

सर्वोपरि॰ अव्य॰ सब के ऊपर।

सर्वौषध॰ ना॰ स्त्री॰ जटामासी, मुरा इत्यादि दश औषध।

सर्षप॰ ना॰ पु॰ सरसों।

सलकी॰ ना॰ स्त्री॰ कमलकी जड़।

सलज्ज॰ गु॰ लाजयुक्त, लज्जासहित।

सलना॰ ना॰ पु॰ मोती, बाहु बाहुकी छीमी, अ॰ क्रि॰ छिदना, गड़ना।

सलभ॰ ना॰ पु॰ पतंगा, टीड़ी, टिड्डी, शलभ।

सलसलाना॰ अ॰ क्रि॰ सरसराना।

सलाई॰ / सलाका॰ } ना॰ स्त्री॰ शलाका।

सलिल॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

सलूनो॰ ना॰ स्त्री॰ सावन की पूनो जिस में राखी बांधते हैं।

सलूप॰ ना॰ पु॰ थोड़ासा।

सलूषी॰ ना॰ पु॰ बिल्व, बेल।

सलोन॰ गु॰ लोन सहित, कटीला, देशखण्ड विशेष, नमकीन।

सलोना॰ गु॰ खारा, सांवला, स्वादिक।

सलोनी॰ गु॰ रुचक, स्वादिष्ट, सुन्दर।

सल्लकी॰ ना॰ स्त्री॰ पशुविशेष जिसके सारे शरीर में कांटे होतेहैं, साही, सेही।

सल्लभ॰ ना॰ पु॰ मोटा कपड़ा विशेष।

सल्लू॰ ना॰ पु॰ चमड़े का टुकड़ा जिससे जूता आदि सीते हैं, सर्प विशेष।

सल्लो॰ गु॰ स्त्री॰ बोदलीस्त्री।

सवति॰ ना॰ स्त्री॰ एक मनुष्यकी दो बीबियों में से एक दूसरे की सवति कहाती है।

सवर॰ ना॰ पु॰ भील, कोल।

सवरस॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

सवरी॰ ना॰ स्त्री॰ भीलिनी विशेष जिस के फल रामचन्द्रने खाये थे।

सवर्ण॰ गु॰ एक जातिका, एकरंगका, सादृश्य, समानवर्ण।

सवल॰ गु॰ सबल।

सवा॰ गु॰ जिस गिनती के प्रथम में संयुक्त होवे उसमें चौथाईबढ़ावे यथा सवादो, २।

सवाई॰ ना॰ पु॰ जयपुरके राजाकी पदवी।

सवाचना॰ स॰ क्रि॰ जांचना, परखना।

सवाया॰ गु॰ एक और एककी चौथाई।

सवार॰ ना॰ पु॰ अश्ववार, घुड़चढ़ा।

सवारी॰ ना॰ स्त्री॰ चढ़ैती, वाहन।

सविकार॰ गु॰ जिसमें कुछ बदल हुई।

सविता॰ ना॰ पु॰ सूर्य।

सवीर्य्य॰ गु॰ बीज समेत।

सवैया॰ गु॰ सवाया, ना॰ पु॰ छन्द विशेष, बांट जो एकसेर और पावभर का होता है।

सव्य० गु० बायां।
सशंक० गु० सभय।
सशब्दयोगि० गु० शब्दयोगी अव्यय सहित।
सशोक० गु० दुःखित भयभीत।
ससक० ना० पु० खरगोश, चौगड़ा।
ससता० गु० जो महंगा नहीं है।
ससताई० ना० स्त्री० ससतापन।
ससा० ना० पु० शश, चौगड़ा, खरगोश।
ससापत्री० ना० स्त्री० लजारू।
ससुर० ना० पु० श्वशुर।
ससुराल० ना० स्त्री० श्वशुरका घर।
ससुराली० गु० जो श्वशुरकाहै, जो ससुराल का है।
सस्य० ना० पु० फल, अन्न, धान।
सह० अव्य० साथ, सहित, गु० जो सहने के योग्य है।
सहकार० ना० पु० आम्रविशेष, सहायता।
सहकारी० गु० सहायक।
सहगामिनी० ना० स्त्री० सती स्त्री।
सहचर० ना० पु० पियाबासा, साथी, संगी।
सहचरी० ना० स्त्री० सखी, सहेली, अनुगामिनी।
सहज० गु० सामान्य, निश्चल, स्पष्ट, सुगम।
सहजना० ना० पु० वृक्षविशेष।
सहदेवी० ना० स्त्री० पौधाविशेष, शहदरह।
सहन० ना० पु० कपड़ाविशेष, सहनेकी शक्ति।
सहनहार० गु० सन्तोषी, सहवैया।
सहना० अ० क्रि० निबाहकरना, सन्तोषकरना, सुनलेना, बरदाश्त करना।
सहमना० अ० क्रि० डरना, भयभीत होना।
सहमरण० ना० पु० मृतकपतिकेसाथ जलना।
सहराना० अ० क्रि० थर्थराना, सहलाना।
सहरावन० ना० स्त्री० गुदगुदी, सुरसुरी।
सहरी० ना० स्त्री० बालाई दूधकी, मछली विशेष, भूर मछली।
सहरोष० गु० रोष सहित, क्रोध से।
सहलाना० अ० क्रि० गुदगुदाना, चुलचुलाना।
सहलाहट० ना० स्त्री० गुदगुदाहट, चुलचुलाहट।
सहवास० ना० पु० पड़ोस।
सहवासी० गु० पड़ोसी।
सहवैया० गु० सहनहार।
सहस० गु० सहस्र, हज़ार, १०००।
सहसकर० ना० पु० सूर्य, बाणासुर, नागार्जुन।
सहसबदन० ना० पु० शेषजी, सहस्रवदन।
सहसबाहु० ना० पु० सहस्रबाहु, राजाविशेष।
सहसनयन० ना० पु० सहस्रनयन, इन्द्र।
सहसा० अव्य० विनाविचार किये, उतावली से।
सहसांखी० ना० पु० सहस्रआंखी इन्द्र।
सहसाखी० गु० गवाहोंसमेत, साखीसहित।
सहसानन० ना० पु० शेषजी।
सहस्र० गु० हज़ार, १०००।
सहस्रनयन० ना० पु० इन्द्र।
सहस्रमुखी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
सहस्रवदन० ना० पु० शेषजी।
सहस्रबाहु० ना० पु० बाणासुर, नागार्जुन।
सहस्रवीर्य० ना० पु० बड़ी सतावर।
सहस्रशिर० ना० पु० रावण विशेष जिसको श्रीसीताजीने वधकिया था।
सहस्रा० } सहस्रांघी० } ना० स्त्री० पीलूवृक्ष।
सहाई० ना० स्त्री० सहाय, कटक, ना० पु० सहायक।
सहाऊ० गु० जो सहनेके योग्य है।
सहाना० ना० पु० रागविशेष, स० क्रि० निर्वाहकराना, सन्तोषकराना, बरदाश्त कराना।
सहाय० ना० स्त्री० सहारा, सैन, मदद, साथ।
सहायक० ना० पु० मित्र, सहायकरनेहारा।
सहायता० ना० स्त्री० } सहारा० ना० पु० } उपराला, उपकार, मदद।

सहित० अव्य० संग, साथ, समेत, गु० हित-समेत।

सही० ना० स्त्री० खाताविशेष, बही, अव्य० निश्चयबोधक।

सहेजना० स० क्रि० जांचना, परखना, सैंतना, बनाना, बनावा, ठहरा रखना।

सहेली० ना० स्त्री० सखी, आली, संगकी स्त्री।

सहोदर० गु० जो एक माता से उत्पन्न भया, यथा सगाभाई।

सहोदरभाई० } ना० पु० सगाभाई।
सहोदरभ्राता० }

सहौटी० ना० स्त्री० सुहौटी, चौखट, विशेष।

सह्य० गु० सहने के योग्य।

सक्षत० गु० खण्डित, घावयुक्त।

सा० अव्य० सादृश्यबोधक यथा छोटासा, पीलासा।

साऊ० गु० सीखनहार, शिष्ट।

साऊंगी० ना० स्त्री० सांगी।

सांई० ना० पु० स्वामी, भगवान्।

सांक० ना० स्त्री० शंका, कासश्वास।

सांकर० ना० स्त्री० सांकल, गु० गाढ़, विपत्ति, कठिनता।

सांकरी० } ना० स्त्री० संकल, सिकली, भूषण
सांकल० } विशेष, जंजीर।

सांखू० } नौं० पुल, सेत, बांध, काठ
सांखो० } विशेष।

सांगी० ना० स्त्री० गाड़ी में स्थान विशेष जिस में गठरी आदि रखतेहैं, बर्छी।

सांगूस० ना० स्त्री० मछली विशेष, शंक।

सांघर० ना० पु० अग्निलेपतिका पुत्र।

सांच० गु० सत्य, सच, सच्चा।

सांचा० ना० पु० ढालने वा भरने का घर, मघटी, गु० सच्चा, सत्यवक्ता।

सांझ० ना० स्त्री० सन्ध्या, सायंकाल।

सांझा० ना० पु० } झांकी जो पितृपक्ष में
सांझी० ना० स्त्री० } बनातेहैं पुतलियां जो लड़के पितृपक्षमें बनाते हैं।

सांटा० ना० पु० कोड़ा, ऐंड़, छप्परकी कमरका बांस।

सांटी० ना० स्त्री० छड़ी, लग।

सांटो० ना० पु० बदला, पलटा, रामचन्द्रिका-यां (यहसांटोलयकृष्णावतार, तब हैहौ तुम संसारपार)।

सांठ० ना० स्त्री० योग, संयोग, गुष्ट, अन्न पीटने के लिये लम्बा लबेदा।

सांठगांठ० ना० पु० सांट बांट, मेल, संयोग।

सांठना० स० क्रि० सटाना, लगाना, जुटाना।

सांड० ना० पु० शण्ड।

सांड़नी० ना० स्त्री० ऊँटनी, शण्डकी स्त्री।

सांडा० ना० पु० छिपकलीके तुल्यजन्तुविशेष।

सांती० अव्य० सन्ती।

सांप० ना० पु० सर्प।

सांपन० ना० स्त्री० सांप की स्त्री।

सांभर० ना० पु० लवणविशेष, नगरविशेष, झीलविशेष जो जयपुर और जोधपुर के मध्यमें है।

सांवला० गु० कृष्ण सदृश जो वर्ण।

सांवा० ना० पु० अन्नविशेष।

सांशयिक० गु० संदेहयुत, चिन्तायुत।

सांस० ना० स्त्री० श्वास, दम।

सांसना० स० क्रि० डाटना, कुदृष्टि देखना।

सांसभरना० अ० क्रि० आहभरना।

सांसा० ना० पु० संशय।

सांसारिक० गु० जो संसारका है।

साक० ना० पु० शाक, साग।

साकवणिक० ना० पु० मुराऊ, कबड़िया।

साका० ना० पु० शाका।

साकार० अव्य, आकार सहित।

साकल्य० ना० पु० शाकल्य, शाकल।

साकेबन्ध० ना० पु० राजा जिसने शाका बांधाहै।

साख० } **साखि०** } ना० स्त्री० धाक, भरम, नाम, मर्य्याद, धीति, प्रतीति, पुरुषान्।

साखी० ना० स्त्री० साक्षी, गवाही ना० पु० वृक्षगवाह।

साखोच्चार० ना० पु० वंशवर्णन।

साखोटक० ना० पु० सहोरावृक्ष।

साख्य० ना० पु० साक्षात्।

साग० } **सागपात०** } ना० पु० शाक।

सागर० ना० पु० समुद्र, बड़ा तालाब, भरतखण्डका नगर विशेष।

सागरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।

सागून० ना० पु० काष्ठविशेष वा उसीकावृक्ष।

सांख्य० ना० पु० शास्त्रविशेष।

सांग० गु० समाप्त, सहितअंग।

सांगोपांग० गु० सम्पूर्ण, समस्त, ज्योंकात्यों।

साज० ना० पु० अश्वादि के पहरने की सामग्री, समर्थ, सजाव, शाखा।

साजन० ना० पु० सज्जन, पति, स्वामी।

साजना० स० क्रि० पहिनाना, सँवारना, सजाना, साधना।

साजी० ना० स्त्री० जो फूटी टूटी नहीं है।

साझा० ना० पु० व्यापारादि में कई, मनुष्यों का मेल, शराकत।

साझी० ना० पु० साथी, भागी, अंशिक।

साठ० गु० छः दहाई, ६०।

साठी० ना० पु० धान वा चावलविशेष।

साढ़साती० गु० शनैश्चर जो साढ़ेसात वर्ष तक रहताहै।

साढ़ा० गु० आधा।

साढू० ना० पु० जोरूकी बहिन का पति।

साढ़े० गु० जिस गिनतीकी आदि में यह लगाते हैं उसपर एकका आधा अधिक सूचित होताहै, ३॥

सात० सप्त, ७।

सात्यीक० ना० पु० मनुविशेष, यादवविशेष।

सात्विक० गु० सतोगुणी, उत्तमदान।

साथ० अव्य० संग।

साथरी० ना० स्त्री० आसनी, बिछौना।

साथी० गु० संगी, संगवाला।

सादर० गु० आदरसमेत।

सादरा० ना० पु० गीतविशेष।

सादृश्य० ना० पु० समानता, उपमा, तुल्यता, दृष्टान्त।

साध० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, चोप गु० साधु, अच्छामनुष्य।

साधक० ना० पु० तपस्वी, साधु, साधन करनेहारा।

साधन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तन, परमार्थ का अनुष्ठान, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया।

साधनक्रिया० ना० स्त्री० रूपबनाने का काम।

साधना० स० क्रि० हिलाना, सिखलाना, सीखना, सुधारना, अभ्यास करना, साजना, निबाहना, ना० स्त्री० अभ्यास, निबाह, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया, तदबीर।

साधनिका० ना० स्त्री० साधना, उपाय, तदबीर।

साधस० ना० पु० डर, भय, शंका।

साधारण० गु० सामान्य, सीधा।

साधी० गु० थाँभीहुई, ठहराईभई।

साधु० गु० जिसका व्यवहार उत्तम है, धन्य, सुन्दर ना० पु० सन्त, साहूकार।

साधुता० ना० स्त्री० साधुका कर्म वा चाल।

साधुमत० ना० पु० शिष्टाचार, आदर, गु० अच्छामत।

साधुसाधु० गु० धन्य धन्य।

साधू० ना० पु० साधु, गु० उपायी, क्रीयमान, साधक।

साध्य० गु० जतन से जो होवे, साधना के योग्य, रोगी, जो औषध के योग्य है।

साध्वी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री।

सान० ना० स्त्री० शाण, धार।

सानना॰ स॰ क्रि॰ मिलना, मिलाना गूंधना।
सानन्द॰ गु॰ आनन्द सहित।
सानबुझाना॰ स॰ क्रि॰ सैन से समझाना।
सानी॰ ना॰ स्त्री॰ भूसा खलीकी मिलौनी।
सानुकूल॰ गु॰ प्रसन्न, राज़ी, कृपालु।
सान्त्वन॰ ना॰ पु॰ मिलाप।
सान्निध्य॰ ना॰ पु॰ सामीप्य, समीपी।
सापन॰ ना॰ पु॰ रोग विशेष जिससे बालक्रम क्रम से गिरजाते हैं।
सापराध॰ गु॰ जो दण्डके योग्य कामकरे।
साबर॰ ना॰ पु॰ बारहसिंगा वा उसका चर्म, सिद्धमन्त्र, चोरों का हथियार जिस से सेंध लगाते हैं शिवकृत मन्त्रराज।
साबरमन्त्र॰ ना॰ पु॰ भाषा में मंत्र विशेष।
साम॰ ना॰ पु॰ तीसरा वेद, जो मुसल वा लाठी वा बेत आदि के अन्त में पीतल आदि लगाते हैं।
सामग्री॰ ना॰ स्त्री॰ वस्तु, सामान।
सामज॰ ना॰ पु॰ समय, काल।
सामध॰ ना॰ पु॰ समधोरा, समधियों का मिलना।
सामर॰ ना॰ पु॰ लवणविशेष।
सामर्थी॰ गु॰ बलवान्, शक्तिमान्।
सामर्थ्य॰ ना॰ स्त्री॰ सामर्थ, ताक़त, शक्ति।
सामा॰ ना॰ स्त्री॰ नानाप्रकार का भोजन, सामग्री।
सामाजिक॰ ना॰ पु॰ सभा आदि के काम में जो चतुर व दिखवैया वा सहायक।
सामान्य॰ गु॰ साधारण, जातिवाचक।
सामान्यतः॰ ना॰ स्त्री॰ सामान्यपन।
सामी॰ ना॰ पु॰ साम, सामने, सामवेदी।
सामीप्य॰ ना॰ पु॰ पास के योग्य, मुक्तिविशेष जिसमें इष्टदेव के पास बसता है।
सामुद्रि॰ ना॰ पु॰ समुद्रलोन।
सामुद्रिक॰ ना॰ स्त्री॰ विद्या विशेष, भड्डरी विद्या जिससे हस्तादि रेखा बिचारते हैं।
सामुहे॰ अव्य॰ सामने, समुहे।
साम्ना॰ ना॰ पु॰ सन्मुख।
साम्ने॰ अव्य॰ सन्मुख, आगे।
साम्हना॰ अव्य॰ सामना।
सायक॰ ना॰ पु॰ बाण, तीर।
सायंकाल॰ ना॰ पु॰ सन्ध्यासमय।
सायुज्य॰ ना॰ पु॰ मुक्तिविशेष जिसमें ईश्वर लीन होता है।
सार॰ ना॰ पु॰ स्वाद, लोहा, गूदा, हीर, मोल, सर, वीर्य, धीरज, धर्म, वज्र, घर, व्रत, काठका सार।
सारक॰ ना॰ पु॰ बाँस, मैनापक्षी।
सारंग॰ ना॰ पु॰ रागविशेष, मयूर, मेघ, सर्प, मोर का शब्द, मृग, सूर्य, घोड़ा, चन्द्रमा, हाथी, आकाश, पर्वत, सिंह, कुंज, पपीहा, मेढक, दीपक, ज्योति, कोयल, चामर, बाल, हंस, कुच, खंजन, कमल, कामदेव, धरती, तालाब, सुन्दर, पक्षी, पानी, विष्णु का धनुष, कपड़ा, राति, स्त्री, भ्रमर, मधुमाखी, देश विशेष।
सारंगिया॰ ना॰ पु॰ सारंगी बजानेहारा।
सारंगी॰ ना॰ स्त्री॰ बाजाविशेष, किंगरी।
सारथी॰ ना॰ पु॰ रथवान्।
सारदा॰ ना॰ स्त्री॰ शारदा, सरस्वती, वाग्देवता।
सारना॰ स॰ क्रि॰ करना, निबाहना, निबेड़ना, सुधारना, पोंसना, पूराकरना।
सारस॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष, कमल।
सारसजात॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।
सारस्वत॰ ना॰ पु॰ देश विशेष, ब्राह्मण जाति विशेष।
सारा॰ गु॰ सम्पूर्ण, समस्त, साला।
सारार्थ॰ ना॰ पु॰ संक्षेप।
सारासार॰ गु॰ सत्यासत्य, सांचझूंठ।
सारिका॰ ना॰ स्त्री॰ मैनापक्षी।
सारी॰ ना॰ स्त्री॰ मलाई, मैना, पक्षी, साड़ी,

जोरू की बहन।
सारू० ना० पु० पक्षीविशेष।
सारूप्य० ना० पु० इष्ट का रूप बनजाना, मुक्ति विशेष।
सार्थ० गु० जिसमें अर्थ पाया जावे, जो अर्थ समेतहो।
सार्थक० गु० सफल, अर्थवाला।
सार्वभौम० ना० पु० सर्वपृथ्वी का राजा, कुबेर का हस्ती विशेष।
साल० ना० पु० काष्ठ विशेष, कांटा, छेद, शाखा, सियार।
सालतीसुत० ना० पु० जायफल।
सालन० ना० पु० तरकरी, छेदन।
सालनिर्यास० ना० पु० राल, गुग्गुल।
सालना० स० क्रि० छेदना, बेधना, अ० क्रि० दुःखना, पीड़ित होना।
सालसा० ना० पु० औषध विशेष।
साला० ना० पु० पत्नीका भाई, शाला, ना० स्त्री० पिप्पली।
सालिग्राम० ना० पु० विष्णुरूपी पाषाण विशेष।
साली० ना० स्त्री० बीबीकी बहन।
सालू० ना० पु० लालवर्ण वस्त्रविशेष।
सालूक० ना० पु० जायफल।
सालोक्य० ना० पु० मुक्ति विशेष, इष्टदेव के लोक में वास पाना।
सालोतरी० ना० पु० घोड़ों का वैद्य।
सावक० ना० पु० बालक, बच्चा।
सावकाश० } ना० पु० अवकाश, सुबीता,
सावकास० } घात, अन्तर, छुट्टी, फुरसत।
सावज० गु० बनैला, जंगलीजीव, मृग, ना० पु० अहेर।
सावधान० गु० चौकस, सुर्त्ती, होशियार।
सावधानी० ना० स्त्री० चौकसाई, सुचेती।
सावन० ना० पु० श्रावण।
सावन्त० गु० शूर, योधा, वीर।
सावन्ती० ना० स्त्री० सूर्मापन, वीरता, बहादुरी।
सावयव० गु० सांग, अवयव सहित।
सावर० ना० पु० साबर।
सावर्णि० ना० पु० दूसरामनु विशेष।
सावित्री० ना० स्त्री० माता, महतारी।
सास० ना० स्त्री० पत्नी वा पतिकी माता।
सासन० ना० पु० शासना।
सासना० स० क्रि० ताड़ना, डाटना।
सासु० ना० स्त्री० सास।
साहु० ना० पु० बनिया, महाजन, साधु।
साहचर्य्य० ना० पु० संगति, साथ।
साहन० ना० स्त्री० साहु की स्त्री।
साहनी० ना० स्त्री० सैन, फ़ौज।
साहस० ना० पु० बरबस, बलात्कार, वीरता, ढाढ़स, विनाविचार।
साहसी० गु० बरबसिया, निडर, वीर।
साहाय्य० ना० पु० मित्रता, प्रीति।
साहित्य० ना० पु० संगता, साथ।
साही० ना० पु० जन्तुविशेष जिसके समस्त शरीर में कांटा होते हैं।
साहु० } ना० पु० बड़ामहाजन।
साहुकार० }
साहुकारी० व्यापार, देनलेन, महाजनी।
साक्षात्० अव्य० सामने, प्रत्यक्षसे।
साक्षात्कार० ना० पु० प्रत्यक्षहोना।
साक्षी० ना० स्त्री० गवाही, साखी, ना० पु० गवाह।
सिम्बल० ना० पु० सेमरवृक्ष।
सिंचितिका० ना० स्त्री० सेव मेवा।
सिंसुपा० ना० पु० शीशमवृक्ष।
सिंह० ना० पु० मृगराज, श्रेष्ठार्थ का सूचक, देवी का वाहन, पांचवीं राशि विशेष।
सिंहद्वार० ना० पु० जिसद्वार में सिंहका आकार हो, फाटक।
सिंहनाद० ना० पु० रण के समयमें वीरों का

शब्द, सिंहका शब्द।

सिंहनी॰ ना॰ स्त्री॰ सिंहकी स्त्री।

सिंहपौर॰
सिंहपौरि॰
सिंहपौल॰ } ना॰ स्त्री॰ सिंहद्वार, ड्योढ़ी।

सिंहमुखी॰ ना॰ पु॰ बांस।

सिंहल॰ ना॰ पु॰ सिंहलद्वीप।

सिंहलक॰ ना॰ पु॰ पीतल।

सिंहलद्वीप॰ ना॰ पु॰ भरतखण्ड के दक्षिण में उपद्वीप विशेष।

सिंहासन॰ ना॰ पु॰ देवतों और राजाओं का आसन, पाट, श्रेष्ठासन, तख्तशाही।

सिंहिका॰ ना॰ स्त्री॰ निशाचरी विशेष।

सिकटा॰ ना॰ पु॰ ठिकरा।

सिकता॰ ना॰ स्त्री॰ सिक्ता, बालू, रेत।

सिकरी॰
सिकली॰ } ना॰ स्त्री॰ कुण्डली, संकल।

सिख॰ ना॰ पु॰ शिष्य, नानकशाही, ना॰ स्त्री॰ सीख।

सिखनावट॰ ना॰ स्त्री॰ शिक्षा, सिखावट।

सिखर॰ ना॰ पु॰ छीका, शिखर।

सिखरन॰ ना॰ पु॰ दही और गुड़की मिलौनी।

सिखलाना॰ स॰ क्रि॰ पढ़ाना, दिखलाना, डाटना, ताड़नकरना।

सिखा॰ ना॰ स्त्री॰ चोटी।

सिखाना॰
सिखवना॰ } स॰ क्रि॰ सिखावना।

सिखिकण्ठ॰ ना॰ पु॰ नीलाथोथा।

सिगरो॰ गु॰ सब, सगरा, समस्त।

सिंगरौर॰ ना॰ पु॰ शृंगबेरपुर।

सिंगा॰ ना॰ पु॰ तुरही।

सिंगार॰ ना॰ पु॰ शोभा, सजावट, आभरण, शृंगार।

सिंगारना॰ स॰ क्रि॰ संवारना, शृंगार कराना।

सिंगारिया॰ गु॰ देवताका शृंगारकरनेहारा।

सिंगौटी॰ ना॰ स्त्री॰ सींगसे बनाहुआ घोटना, बैलके सींगपर भूषण विशेष।

सिंघाड़ा॰ ना॰ पु॰ पौधा जो जल में होता है वा उसीका फल, भूषण विशेष।

सिंघाण॰ ना॰ पु॰ नाकका मैल।

सिंघी॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ीकटाई।

सिझाना॰ स॰ क्रि॰ पकाना।

सिड़॰ ना॰ स्त्री॰ बौराहट, बौड़ापन।

सिड़न॰ ना॰ स्त्री॰ बावली, बौड़ही।

सिड़पन॰ ना॰ पु॰ बौड़हापन।

सिड़ा॰
सिड़ी॰ } गु॰ बावला, बौड़हा।

सित॰ गु॰ श्वेत, सफ़ेद, उजला।

सितकण्ठ॰ ना॰ पु॰ महादेवजी।

सितरा॰ ना॰ स्त्री॰ स्वेद, पसीना।

सिताम्भोज॰ ना॰ पु॰ सफ़ेदकमल, श्वेतकंज।

सिद्ध॰ ना॰ पु॰ देवताजातिविशेष जो इन्द्र लोक में बसते हैं, साधु अर्थात् जो अष्टसिद्धि के वशमें हैं, गु॰ महात्मा, श्रेष्ठजन, कृतार्थ, पक, बना, लेस, पूर्ण, कामिल, कार्यी।

सिद्धरूप॰ ना॰ पु॰ प्रथमही से जिसका रूप बनाहै, जो दूसरे से नहीं बना।

सिद्धान्त॰ ना॰ पु॰ वादी प्रतिवादी से निर्णीत जो अर्थ, कौमुदी विशेष।

सिद्धान्तशिरोमणि॰ ना॰ स्त्री॰ ज्योतिष का ग्रंथ विशेष।

सिद्धांती॰ ना॰ पु॰ मीमांसाका मतावलम्बी।

सिद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ वांछितार्थ की प्राप्ति, देवतों की पूजा वा तपस्या का फल, मन्त्रादि जपने से जो पराक्रम, सुत्ते, शुद्धता, अणिमादिक अष्ट, फल, कारित, करामात।

सिद्धिदा॰ ना॰ स्त्री॰ भगवती, गु॰ सिद्धिदाता।

सिद्धिदाता॰ ना॰ पु॰ श्रीगणेशजी, गु॰ सिद्धि देनेहारा।

सिद्धिरूपी॰ गु॰ जो आपहीसिद्धि होवे।

सिधाना॰ अ॰ क्रि॰ दौड़ना, जाना, चला जाना।

सिधारना॰ } अ॰ क्रि॰ चलाजाना, उठजाना,
सिधार्ना॰ } स॰ क्रि॰ सुधारना, ठीक करना।

सिनक॰ ना॰ पु॰ रेंटा, पोटा, नेटा।

सिनकना॰ स॰ क्रि॰ नाक झाड़ना।

सिन्दुक॰ ना॰ पु॰ संभालू पौधा।

सिन्दुबारक॰ ना॰ पु॰ संभालूपौधा।

सिन्दूरक॰ ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष।

सिन्दूर॰ ना॰ पु॰ लालवर्ण चूर्णविशेष जो स्त्रियां मांगमें लगाती हैं।

सिन्धु॰ ना॰ पु॰ समुद्र देश विशेष, नदी विशेष।

सिन्धुज॰ ना॰ पु॰ सैंधवलोन, १४ रत्न।

सिन्धुर॰ ना॰ पु॰ हाथी।

सिन्धुरगामी॰ गु॰ गजगामी।

सिपाह॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, यह शब्द फ़ारसी का है।

सिपाहसालार॰ ना॰ पु॰ सेनापति, फ़ारसी शब्द।

सिपाही॰ ना॰ पु॰ पैदल, चपरासी, यह भी शब्द फ़ारसी का है।

सिम॰ ना॰ पु॰ मछली।

सिमट॰ ना॰ स्त्री॰ संकोच, सिकोर।

सिमटजाना॰ } अ॰ क्रि॰ सिकुरना, बटुरना।
सिमटना॰ }

सिमाना॰ ना॰ पु॰ सिवाना, धूरा।

सिम्बल॰ ना॰ पु॰ सेमलवृक्ष।

सिय॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीसीताजी।

सियनि॰ ना॰ स्त्री॰ सीवनि।

सियनिन्दक॰ ना॰ पु॰ रजक विशेष जो अयोध्यापुरी में बसताथा और श्रीसीताजी को लाञ्छन लगाया था।

सियरा॰ गु॰ ठंढा, कच्चा।

सियरी॰ ना॰ स्त्री॰ ठंढी, कच्ची।

सिया॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीसीताजी।

सियार॰ } ना॰ पु॰ शृगाल, गीदड़।
सियाल॰ }

सिर॰ ना॰ पु॰ शिर, मस्तक।

सिरकी॰ ना॰ पु॰ खट्टीवस्तु विशेष जो मीठे से बनती है।

सिरकी॰ ना॰ स्त्री॰ सरकण्डाविशेष, सेंठाका ऊपरी भाग वा उसी की बनीवस्तु जो पानी रोकने के लिये होती है।

सिरखप॰ गु॰ मनचला।

सिरखपी॰ ना॰ स्त्री॰ जोखिम, ढाढ़स।

सिरजन॰ ना॰ पु॰ रचाव, उत्पत्ति, बनाव।

सिरजनहार॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, रचनेहारा, उपजानेहारा।

सिरजना॰ स॰ क्रि॰ रचना, उत्पन्न करना, बनाना।

सिरजा॰ गु॰ बनाया हुआ, उपजाया गया।

सिरसींग॰ गु॰ गुप्तकरनेहारा, दगैत।

सिरहाना॰ ना॰ पु॰ तकिया, खाटका जिधर सिराहो।

सिरात॰ गु॰ ठंढा, बीता।

सिराना॰ स॰ क्रि॰ ठंढाना, बहाना, पठाना, व्यतीत करना।

सिरानी॰ गु॰ स्त्री॰ बीतगई, राढी भई।

सिरिस॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष, शिरीष।

सिरोधी॰ ना॰ पु॰ कंठ, गला, गर्दन।

सिल॰ ना॰ पु॰ शिला।

सिलपट॰ गु॰ चौपट।

सिलबट्टा॰ ना॰ पु॰ सिलका बट्टा।

सिलवाना॰ स॰ क्रि॰ सिलाना।

सिला॰ ना॰ स्त्री॰ शिला, पाषाण विशेष जिस पर मसाला पीसते हैं।

सिलाई॰ ना॰ स्त्री॰ सिलाने का काम वा पैसा।

सिलाजीत॰ ना॰ पु॰ अश्मज, औषध विशेष।

सिलाना॰ स॰ क्रि॰ सिलवाना, तगाना।
सिलारस॰ ना॰ पु॰ शिलाजीत।
सिली॰ ना॰ स्त्री॰ पथरी, शाण।
सिलीमुख॰ ना॰ पु॰ बाण, भ्रमर।
सिवाना॰ ना॰ पु॰ सीमा, डांड़ा, धूरा, हद्द।
सिविका॰ ना॰ स्त्री॰ पालकी विशेष।
सिष्ट॰ गु॰ बुद्धिमान्, अच्छा।
सिसकना॰ अ॰ क्रि॰ बिसुरना।
सिसकी॰ ना॰ स्त्री॰ कूक।
सिस्न॰ ना॰ पु॰ लिंग, मदनांकुश।
सिहरा॰ ना॰ पु॰ मौर।
सिहराऊ॰ गु॰ थकाऊ, उचाट।
सिहराना॰ स॰ क्रि॰ थकना, उचाट करना, सहलाना।
सिहर्ना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना।
सिहाना॰ अ॰ क्रि॰ प्रसन्न होना, खुशहोना।
सींक॰ ना॰ स्त्री॰ तृणविशेष जिस की झाड़ बनती है।
सींकर॰ ना॰ पु॰ सींकका फूल।
सींका॰ ना॰ पु॰ घर, छींका।
सींकिया॰ गु॰ डण्डीरवान्, धारीदार, लड़रिया, डोरिया।
सींग॰ ना॰ पु॰ शृंग।
सींगड़ा॰ ना॰ पु॰ बारूद रखनेका सींग।
सींगा॰ ना॰ पु॰ नरसिंगा।
सींगिया॰ ना॰ पु॰ विष विशेष।
सींगी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटानरसिंगा, मछली विशेष, तोमड़ी।
सींच॰ ना॰ स्त्री॰ पानी की चाह।
सींचना॰ स॰ क्रि॰ सींचना, पाटना, पानीदेना।
सींचाई॰ ना॰ स्त्री॰ सींचने का पैसा वा काम।
सींची॰ ना॰ स्त्री॰ सींचने का समय।
सींव॰ ना॰ पु॰ सीमा, मर्य्यादा।
सीकर॰ ना॰ पु॰ कन्दविशेष।
सीख॰ ना॰ स्त्री॰ शिक्षा, पाठ, विद्या, ताड़ना, सिखाना।
सीखना॰ स॰ क्रि॰ विद्याका उपार्जन करना, पाना।
सींचना॰ स॰ क्रि॰ सींचना, पानीदेना।
सीज॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष।
सीजना॰ अ॰ क्रि॰ रिसना, निकलना, उफना, उबलना।
सीटी॰ ना॰ स्त्री॰ मुख से बजावट।
सीठ॰ ना॰ स्त्री॰ फोग, खूद, छानम।
सीठना॰ ना॰ पु॰ } विवाह में गाली समेत
सीठनी॰ ना॰ स्त्री॰ } गीत स्त्रियां गाती हैं।
सीठा॰ गु॰ नीरस, रसहीन, पीला, असार, रोगहा।
सीठी॰ ना॰ स्त्री॰ सीठ, सीटी।
सीढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ नसेनी, सोपान, आरोहण, जीना।
सीत॰ ना॰ पु॰ शीत, ओस।
सीतरस॰ ना॰ पु॰ मुंहपटका रोग।
सीतलचीनी॰ ना॰ स्त्री॰ औषधविशेष।
सीतलपाटी॰ ना॰ स्त्री॰ चटाईविशेष।
सीतला॰ ना॰ स्त्री॰ माता, गोटी, चेचक।
सीता॰ ना॰ स्त्री॰ निधि, क्षमा, गंगा, श्रीजानकी जी।
सीताकुण्ड॰ ना॰ पु॰ मुंगेर के पास तीर्थ विशेष।
सीतांग॰ ना॰ पु॰ शीतांग, लकुवा।
सीताफल॰ ना॰ पु॰ आता, लौका, कद्दू।
सीताश्रय॰ ना॰ पु॰ सीताका आश्रय।
सीदना॰ अ॰ क्रि॰ दुःखी होना, दुःखपाना।
सीधा॰ गु॰ सोझा, निछल, भोला, खरा, सूधा, ना॰ पु॰ भोजन की सामग्री।
सीधाई॰ ना॰ स्त्री॰ सोझ, भोलापन, खराई, सुधाई।
सीना॰ स॰ क्रि॰ तगना, तागना, टांकना, तुरपना।
सीप॰ ना॰ स्त्री॰ आंब विशेष जिसकी गुठली

सीपी के समान होती है, सीपी।
सीपसुत॰ ना॰ पु॰ मोती।
सीपी॰ ना॰ स्त्री॰ जलजन्तुविशेष।
सीमन्ती॰
सीमन्ती॰ } ना॰ स्त्री॰ स्त्री, बाला।
सीमा॰ ना॰ स्त्री॰ हद, डांड़ा, धूरा, मर्य्याद, सिवाना, अवधि।
सिय॰
सिया॰ } ना॰ स्त्री॰ श्री जानकी जी।
सीर॰ ना॰ पु॰ हल, खेती निजकी।
सीरपाणि॰ ना॰ पु॰ श्रीबलदेवजी।
सीरा॰ गु॰ शीतल, ना॰ पु॰ मोहनभोग, शीरा।
सील॰ ना॰ पु॰ शील।
सीला॰ गु॰ गीला, शीतल, ना॰ पु॰ अन्न का बीनना।
सीव॰ ना॰ पु॰ सींव, मर्य्याद, सीम।
सीवली॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष।
सीस॰ ना॰ पु॰ शीर्ष, शिर, शिखा।
सीसक॰
सीसा॰ } ना॰ पु॰ धातुविशेष।
सीसों॰ ना॰ पु॰ शीशम वृक्षविशेष।
सु॰ अव्य॰ इसका प्रयोग जिस शब्द के प्रथम में हो उसके अर्थ में अधिकाई वा भलाई वा उत्तमता समझी जाती है यथा सुबुद्धि सुकर्म आदि, और से यथा जासु अर्थात् जिससे, सो।
सुंघाना॰ स॰ क्रि॰ महकाना।
सुंघावट॰ ना॰ पु॰ महक, गन्धि, बास।
सुअञ्जन॰ ना॰ पु॰ अच्छा अंजन, सिद्धान्त।
सुअर॰ ना॰ पु॰ शूकर।
सुआर॰ ना॰ पु॰ रसोइयां, बावर्ची, रोटी करनेहारा।
सुआसिन॰ ना॰ स्त्री॰ मान्य, नातेदारकीस्त्री।
सुकचाना॰ अ॰ क्रि॰ डरना, संकोचितहोना।
सुकटा॰ गु॰ सूखा, दुबला।
सुकटी॰ गु॰ स्त्री॰ दुर्बल, दुबली, सूखी।
सुकड़ना॰ अ॰ क्रि॰ सिकुड़ना, बटुरना, समिटना।
सुकण्टक॰ ना॰ पु॰ पिण्डखजूर।
सुकंठ॰ ना॰ पु॰ सुग्रीव, गु॰ अच्छागला।
सुकनाश॰ ना॰ पु॰ स्योनावृक्ष।
सुकर॰ गु॰ सहज, करने के योग्य।
सुकवार॰ गु॰ कोमल, निर्मल।
सुकसारण॰ ना॰ पु॰ रावणके दूत।
सुकाल॰ ना॰ पु॰ अच्छीऋतु, बहुतात, अच्छा समय देर।
सुकांटक॰ ना॰ पु॰ करेला तरकारी।
सुकुचना॰ अ॰ क्रि॰ सुकचाना।
सुकुमार॰ गु॰ सुकवार, नर्म्म, कममिहनत, ना॰ पु॰ चम्पा, केला, गन्ना, बालक।
सुकृत॰ ना॰ पु॰ भलाई, पुण्य, कीर्ति, सवाब, गु॰ अच्छी रीति से किया गया, अच्छाकाम।
सुकृती॰ गु॰ पुण्यवान्, भाग्यवान्, धर्मात्मा, दाता।
सुकेत॰ ना॰ पु॰ दक्षजातिका देवताविशेष।
सुकेतसुता॰ ना॰ स्त्री॰ ताड़कानिशाचरी।
सुकेशी॰ ना॰ स्त्री॰ अप्सराविशेष।
सुख॰ ना॰ पु॰ चैन, कल, सन्तोष, आनन्द।
सुखचैन॰ ना॰ पु॰ विश्राम, सावकाश।
सुखतला॰ ना॰ पु॰ जूतेमें दूसरातला।
सुखद॰ गु॰ सुखदायक, अच्छा।
सुखदर्शन॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष जिसकारस कान में पीड़ा के समय डालते हैं।
सुखदाता॰ गु॰ सुखदेनेहारा।
सुखदान॰ ना॰ पु॰ सुखकादान।
सुखदानी॰
सुखदायक॰ } गु॰ सुखका देनेहारा।
सुखदास॰ ना॰ पु॰ धानकी एकजाति।
सुखदेव॰ ना॰ पु॰ देवताका सुख।
सुखपाल॰ ना॰ पु॰ पालकीविशेष।
सुखपूर्वक॰ अव्य॰ सुखसे।
सुखमा॰ ना॰ स्त्री॰ शोभा, कान्ति, चमक।

सुखलाना० स० क्रि० सुखाना, जलाना।
सुखचक्रा० गु० सुखदेवी कहनेहारा।
सुखाना० स० क्रि० सुखलाना।
सुखारी० गु० आनन्द, खुश, आनन्दित।
सुखाला० गु० सहज।
सुखासन० ना० पु० सुखपाल।
सुखित० गु० आनन्दित, चैन से युक्त।
सुखिया० } गु० आनन्दित, चैनी, खुशी,
सुखी० } सन्तोषी।
सुखेन० ना० पु० सुखसे, वैद्यविशेष जो लंका में धन्वन्तरिकापूतथा।
सुखेनी० ना० स्त्री० काला निसोत और बड़ा करोंदा।
सुगज० ना० पु० बानरविशेष जो रामदल में था, गु० अच्छाहाथी।
सुगन्धक० ना० पु० पुहकरमूल।
सुगन्धबन्धु० ना० पु० होम, यज्ञ।
सुगन्धि० ना० स्त्री० भली बास महक, गु० महकीला।
सुगन्धिक० ना० पु० कालाजीरा।
सुगम० गु० जानेकेयोग्य, चढ़नेकेयोग्य, सहल, सहज, करने के योग्य, भला।
सुगरई० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
सुगाना० अ० क्रि० शककरना, चित्तदौड़ाना, स० क्रि० लगाना।
सुग्रीव० ना० पु० वानरोंका राजाविशेष, श्री कृष्णके रथका एकघोड़ाविशेष, गु० अच्छाकंठ।
सुघटित० गु० अच्छा बनायागया, पूराभया।
सुघड़० गु० सुडौल, सुशील, सुन्दर।
सुघड़ई० ना० स्त्री० सुशीलता, सुन्दरता।
सुघाट० ना० पु० भलाघाट, अच्छाडौल, सरूप।
सुच० गु० शुच, फर्चा, निर्मल।
सुचक्र० गु० सोचा, सुचेता, चौकस।
सुचरित्रा० ना० स्त्री० पतिव्रता।
सुचित्त० } गु० चौकस, चिन्तारहित, धन्धेसे
सुचिन्त० } रहित, थिर, बिनाखटके।

सुचिन्तित० गु० अति विचार, अच्छा मंसूबह।
सुचेत० गु० सुर्त्ती, चौकस, होशियार।
सुजन० गु० सज्जन, भला, आदरी, साधु।
सुजसी० गु० प्रतिष्ठित, कीर्तिमान्।
सुजान० गु० प्रवीण, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान्।
सुजाना० स० क्रि० फुलाना।
सुझाना० स० क्रि० दिखलाना, समझाना।
सुटकुन० ना० स्त्री० लठ, छड़ी।
सुठाम० गु० अच्छामकान।
सुठि० ना० स्त्री० सोंठि, अव्य० अति, निहायत, बहुत, अधिक।
सुड़की० ना० स्त्री० गुड्डीकी डोरी, अचानक से ढीलना।
सुड़प० ना० स्त्री० चुसकी, घोंट।
सुड़पना० अ० क्रि० चुसकना, चाटना, चूसना।
सुड़ुकना० स० क्रि० सुटकना, लीलना।
सुडौल० }
सुढब० } गु० सुन्दर, सुथरा।
सुढाल० }
सुण्ड० ना० स्त्री० हाथी की सूंड़, सूंड।
सुण्डी० ना० स्त्री० पिप्पली, पीपरी।
सुत० ना० पु० पुत्र, लड़का, बेटा।
सुतरा० ना० पु० कड़ा जो हाथ में पहनते हैं।
सुता० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।
सुतान० ना० पु० सुतका बहुवचन।
सुतार० ना० पु० बढ़ई, समय, घात, दांव।
सुतारी० ना० स्त्री० सूआ, सूजा।
सुतीक्ष्ण० ना० पु० मुनिविशेष।
सुतुष्टि० ना० स्त्री० कला चन्द्रमा की विशेष।
सुत्राम० ना० पु० इन्द्र।
सुथन० ना० पु० तम्बान, पायजामा।
सुथनी० ना० स्त्री० कन्दविशेष।
सुथरा० गु० अच्छा, सुन्दर, अनूठा, ना० पु० बाबानानक का एक शिष्य।
सुथराई० ना० स्त्री० सुन्दरता, भलाई।
सुथराशाही० ना० पु० भिक्षुकविशेष।

सुथल० } नां० पु० अच्छा स्थान, खूबमकान।
सुथान० }

सुदती० } नां० स्त्री० वह स्त्री जिस के दांत अच्छे होवें, अच्छा हाथी।
सुदन्ती० }

सुदर्शन० नां० पु० श्री विष्णु के चक्रका नाम, वृक्षविशेष जिसको गुलाबजामुन कहते हैं, नाम एकचूर्ण का है, गु० दिलनैाट।

सुदक्षिणा० नां० स्त्री० राजादिलीपकीस्त्री का नाम, अच्छी अपूर्वदक्षिणा वा दान।

सुदामा० नां० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का गुरुबन्धु।

सुदी० नां० स्त्री० उजियाला पाख।

सुदुर्लभ० गु० अत्यन्त दुर्लभ।

सुदृश्य० गु० सुंदर, दिलनैाट।

सुदृष्टि० नां० स्त्री० अच्छीदृष्टि नां० पु० गिद्ध पक्षी, गु० विज्ञानी।

सुदेश० नां० पु० अच्छादेश, गु० अंग, सुन्दर, नेक।

सुध० नां० स्त्री० स्मरण, चेत, सुधि, गु० शुद्ध।

सुधबुध० नां० स्त्री० चेत, पहिचान, बूझ।

सुधरना० अ० क्रि० बनना, संभलना, सजना।

सुधर्म० नां० पु० सत्यधर्म, अच्छाधर्म।

सुधर्मा० नां० स्त्री० देवसभा, सुरसमाज।

सुधा० नां० स्त्री० अमृत, जल।

सुधा० अव्य० समेत, सहित।

सुधांशु० }
सुधाकर० } नां० पु० चन्द्रमा।
सुधाधर० }

सुधाना० स० क्रि० चिताना, स्मरण देना।

सुधारना० स० क्रि० संवारना, बनाना, सेंतना।

सुधावास० नां० पु० चन्द्रमा, खीरफल।

सुधि० नां० स्त्री० स्मरण, चेत, याद, खबर।

सुधी० गु० सुबुद्धी, पण्डित।

सुन० गु० शून्य।

सुनकातर० नां० पु० सर्पविशेष।

सुनबहरी० नां० स्त्री० रोगविशेष।

सुनयना० गु० अच्छी आंखोंवाली नां० स्त्री० श्री जानकीजीकी माता।

सुनसर० नां० पु० भूषणविशेष।

सुनसान० गु० चुपचाप, उजाड़।

सुनहरा० गु० सुनहला, सोनेका।

सुनाना० स० क्रि० जताना, बतलाना, कहना, समझाना।

सुनाहट० नां० स्त्री० सुनाहट, मौन।

सुनार० नां० पु० स्वर्णकार, सोनार।

सुनारिन्० नां० स्त्री० सुनारकी स्त्री।

सुनारी० नां० स्त्री० सोनारका काम, रूपवती, गु० प्रवीण, चतुर।

सुनावनि० } नां० स्त्री० विदेश में मरे का समाचार।
सुनावनी० }

सुनिर्यास० नां० पु० जिगनावृक्ष।

सुनीति० नां० स्त्री० भली रीति, शिष्टाचार।

सुन्दर० गु० सुरूप, सुडौल, अच्छा, भला।

सुन्दरता० नां० स्त्री० सुघराई, भलाई।

सुन्दरी० नां० स्त्री० स्त्री, सुन्दर स्त्री, अच्छी।

सुन्ना० स० क्रि० कान धरना, श्रवण करना।

सुपच० गु० जो अच्छी विधि से पचजावे।

सुपट० नां० पु० अच्छा वस्त्र।

सुपंथ० नां० पु० अच्छामार्ग।

सुपर्व० नां० पु० गंगादि का नहान।

सुपक्ष० नां० पु० सच्चापक्ष, शुक्लपक्ष।

सुपक्षी० गु० अच्छा पक्ष करनेहारा, सत्सहायक।

सुपात्र० गु० योग्य, भलामानस।

सुपारी० नां० स्त्री० पूगीफल, डली।

सुपास० नां० पु० आराम, सुभीता, सुख।

सुपुत्र० } गु० योग्य पुत्र, भला पुत्र, पुत्र, आज्ञाकारी पुत्र।
सुपूत० }

सुप्त० नां० पु० निद्रा, गु० सूता, निद्रित।

सुप्तोत्थित० गु० नींद से भड़भड़ायकर उठा।

सुप्रभा० नां० स्त्री० पद्माक।

सुप्रलाप० नां० पु० सुवचन, अच्छीबातचीत।

सुफल॰ गु॰ जो अच्छाफल देता है, काम का उपार्जनी, पूरा, ना॰ पु॰ अच्छाफल, सिद्धि।

सुफला॰ ना॰ स्त्री॰ पिण्डखजूर।

सुबट॰ ना॰ पु॰ सड़क, अच्छा मार्ग।

सुभग॰ गु॰ सुन्दर, अच्छा भाग्य।

सुभगा॰ ना॰ स्त्री॰ जिस स्त्री का पति बहुत प्रेमकरे, जो स्त्री बहुत पुत्र जन्मावे, सुहागिन।

सुभट॰ } ना॰ पु॰ योधा, वीर, बहादुर, बलवान्, शूर।
सुभट्ट॰ }

सुभागी॰ गु॰ भाग्यवान्, नेकनसीब।

सुभाग्य॰ ना॰ पु॰ अच्छाभाग, नेकबख्ती।

सुभीता॰ ना॰ पु॰ सुबीता, सावकाश।

सुभुज॰ ना॰ पु॰ सुबाहु, दैत्यविशेष।

सुमति॰ ना॰ स्त्री॰ भलमनसी, सत्त्वगुण, सुन्दर बुद्धि, ना॰ पु॰ बन्दीविशेष, राजा जनकका दिसौंधी।

सुमन॰ ना॰ पु॰ गेहूंअन्न, धतूरा, पुष्पविशेष गु॰ जिसकामन शुद्धहो, शीलवान्।

सुमनस॰ ना॰ पु॰ देवता, फूल, बसन्त।

सुमना॰ ना॰ स्त्री॰ मालती, मुदिता, स्त्री, रति, अनेकार्थे यथा (सुमना कहिये मालती सुमना मुदिता तीय)

सुमनाखुत॰ ना॰ पु॰ फुलेल आदि उबटन।

सुमन्त॰ ना॰ पु॰ राजादशरथका मन्त्रिविशेष।

सुमन्त्र॰ ना॰ पु॰ अच्छामन्त्र, नेकसलाह, अच्छा मता।

सुमरना॰ स॰ क्रि॰ स्मरण करना, नामलेना।

सुमरन॰ ना॰ पु॰ स्मरण, चेत, सुधि, समझौती, सुमरनी।

सुमित्र॰ ना॰ पु॰ सूर्य, अच्छामित्र।

सुमित्रा॰ ना॰ स्त्री॰ लक्ष्मणजी की माता।

सुमिल॰ गु॰ चिकनी, चिक्कन।

सुमृति॰ ना॰ स्त्री॰ स्मृति।

सुमेरु॰ ना॰ पु॰ देवताओं के बसने का पर्वत विशेष ज्योतिष में उत्तर ध्रुव।

सुमेल॰ गु॰ योग्यमिलनसार, अच्छामेल।

सुयश॰ } ना॰ पु॰ सुख्याति, नेकनामी।
सुयशः॰ }

सुयोग॰ गु॰ अच्छा योग।

सुर॰ ना॰ पु॰ देवता, स्वर।

सुरआपगा॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीगंगाजी, रामचन्द्रिकायां यथा (उपवीत उज्ज्वलशोभिजै उर देखियेबरनैसबै, सुरआपगातप्रसिंधु में जन श्वेत श्रीदरशैअबै)

सुरऋषि॰ ना॰ पु॰ सुरर्षि, नारदजी।

सुरकना॰ स॰ क्रि॰ सुड़कना।

सुरक्तक॰ ना॰ पु॰ माणिक।

सुरगन्धज॰ ना॰ पु॰ पतंग वृक्ष।

सुरगन्धनी॰ ना॰ स्त्री॰ स्वर्णकेतकी।

सुरगुरु॰ ना॰ पु॰ बृहस्पति।

सुरंग॰ ना॰ पु॰ सेंध, छेद, ईंगुर, अच्छारंग।

सुरचाप॰ ना॰ पु॰ इन्द्रधनुष जो मेघकी बूंदों पर सूर्य्यकी किरणें पड़ने से प्रकटता है।

सुरत॰ ना॰ स्त्री॰ सुधि, स्मृति, मैथुन।

सुरता॰ गु॰ सुरतीला।

सुरती॰ ना॰ स्त्री॰ तमाकू खाने की।

सुरतीला॰ गु॰ विचारवान्, ध्यानी, चौकस।

सुरथ॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष, अच्छारथ।

सुरद्रुम॰ ना॰ पु॰ देवदारु, कल्पवृक्ष।

सुरपति॰ ना॰ पु॰ इन्द्र।

सुरभि॰ ना॰ स्त्री॰ सुगंधि, महक, वसन्तऋतु गाय, ना॰ पु॰ जायफल, मृग, बेल, केला।

सुरभोग॰ ना॰ पु॰ अमृत।

सुरमणि॰ ना॰ पु॰ चिंतामणि, इन्द्र।

सुरमा॰ ना॰ पु॰ अंजन, यहशब्दफ़ारसीका है।

सुरमुनि॰ ना॰ पु॰ नारदमुनि।

सुरमृत्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ फटकरी।

सुरराज॰ ना॰ पु॰ इन्द्र।

सुररूख॰ ना॰ पु॰ मंदारवृक्ष, कल्पवृक्ष।

सुरर्षि॰ ना॰ पु॰ नारदजी।

सुरवीथी॰ ना॰ स्त्री॰ देवमार्ग।

सुरसर० ना० पु० मानसरोवर।
सुरसरि० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
सुरसरिता० }
सुरश्रेष्ठ० ना० पु० ब्रह्मा, इन्द्र।
सुरस० गु० सुस्वाद।
सुरसी० ना० स्त्री० तुलसी पौधा।
सुरसुराना० अ० क्रि० सरसराना, गुदगुदाना।
सुरसुराहट० ना० स्त्री० सरसराहट, गुदगुदी।
सुरसुरी० ना० स्त्री० गुदगुदी, चींटीविशेष।
सुरसेनप० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।
सुरा० ना० स्त्री० मदिरा, दारू, शराब।
सुराई० ना० स्त्री० बहादुरी।
सुराह्व० ना० पु० देवदारु।
सुराह्वा० ना० स्त्री० क्षीरकाकोली।
सुरापान० ना० पु० मदिरा पीना।
सुरारि० ना० पु० दैत्य, राक्षस।
सुरालय० ना० पु० सुमेरु, स्वर्ग, देवालय, सुरभवन।
सुराष्ट्र० ना० पु० गुजरात के समीप देश विशेष।
सुरुकना० स० क्रि० सुड़कना।
सुरूप० गु० सुन्दर, दिलचोट, अच्छारूप।
सुरेन्द्र० ना० पु० सूरण, ज़िमींकन्द, इन्द्र।
सुरेश० ना० पु० इन्द्र।
सुरैत० } ना० स्त्री० अविवाहिता, उढ़ली,
सुरैतिन० } रखनी, घरबैठी, उढ़री।
सुलगना० अ० क्रि० बरना, जलना, आंच उठना, धीरे धीरे जलना।
सुलगाना० स० क्रि० बारना, लूकालगाना, जलाना, परचाना।
सुलझना० अ० क्रि० खुलना, निबड़ना।
सुलझाना० स० क्रि० उधेड़ना, उकेलना, खोलना।
सुलभ० गु० सहजसे जो पायाजावे, साधारण।
सुलक्षण० ना० पु० शुभ के सूचक चिह्न, सुन्दरता।
सुलाना० स० क्रि० शयन कराना, पौढ़ाना, बध करना।
सुलोक० ना० पु० नेकनामी, सुयश, अच्छा लोक, अच्छा मनुष्य।
सुलोचना० ना० स्त्री० चकोरपक्षी, मेघनाद की स्त्री, अच्छी आंखोंवाली।
सुलोमण० ना० स्त्री० काक जंघा बूटी।
सुवक्ता० गु० भलाकहनेहारा, अच्छापाठक।
सुवचन० ना० पु० विशदवाणी, अच्छीवार्त्ता।
सुवन० ना० पु० पुत्र, लड़का।
सुवर्चि० } ना० स्त्री० सज्जी लवण।
सुवर्चिका० }
सुवर्ण० ना० पु० कनक, सोना, सुजाति, सुरंग।
सुवर्णद्रुमा० ना० स्त्री० किरवाली।
सुवर्त्त० ना० पु० आकाश, नाममालायां (अम्बर पुष्कर कहतनभ अंतरिक्ष धनवास, व्योम अनन्त विहायसी खं सुवर्त्त आकास)
सुबल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक सखा।
सुवाना० स० क्रि० सुलाना।
सुवार० ना० पु० रसोइया, बावर्ची, रामायणे यथा (विविध पांति बैठी ज्यवनारा, लगे परोसनं चतुर सुवारा)
सुवाहु० ना० पु० दैत्यविशेष।
सुविस्तरा० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।
सुवेल० ना० पु० समुद्रतट पर्वतविशेष।
सुवेला० ना० स्त्री० अच्छीसायत, अच्छाकाल।
सुवैया० ना० पु० सोनेहार।
सुशिक्षा० ना० स्त्री० भली शिक्षा, अच्छी सीख।
सुशिक्षित० गु० प्रवीण, अच्छी शिक्षापाये हुये।
सुशील० गु० जिसका शील अच्छा है, सुस्वभाव, साधु, शिष्टाचारी।
सुशीलता० ना० स्त्री० शिष्टाचार, स्वभाव में नम्रता।
सुश्री० ना० स्त्री० शोभा।
सुश्रूषा० ना० स्त्री० सेवा, आदर, खिदमत।

सुश्रेणी० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह।

सुषुप्ति० ना० स्त्री० सुखनींद, अवस्थाविशेष।

सुसकारना० अ० क्रि० फनफनाना।

सुसताना० अ० क्रि० विश्राम करना, श्वास लेना।

सुसमय० ना० पु० अच्छा समय, बढ़ती का समय।

सुसम्बद्ध० गु० जिसकी अच्छे प्रकार रचना की गई है।

सुसर०
सुसरा० } ना० पु० ससुर।

सुसराल० ना० स्त्री० ससुराल।

सुस्थ० गु० अरोगी, भला, चंगा।

सुस्थिर० गु० निश्चल, अटल।

सुस्मृति० ना० स्त्री० चैतन्यता, अच्छी स्मृति।

सुस्तवा० ना० स्त्री० कलौंजी।

सुस्वाद० गु० सुरस, रसीला।

सुहाग० ना० पु० सौभाग्य, भलाभाग्य, पति का प्यार, स्त्री का भूषणविशेष, जो पति के जीवने का चिह्न, अहिवात।

सुहागन० ना० स्त्री० विवाहिता स्त्री, जिसकी का पति जीता हो।

सुहागा० ना० पु० औषधिविशेष, जिससे सुवर्ण आदि गलता है।

सुहाता० गु० सोहना, चाहता, भला।

सुहाना०
सुहावना० } गु० भावित, अच्छा, मोहना, चाहता, अ० क्रि० अच्छा लगना, रुचना, भावना।

सुहाल० ना० पु०
सुहाली० ना० स्त्री० } पकवानविशेष।

सुहोटी० ना० स्त्री० जो पटरी चौखट वा छज्जे के ऊपर लगाते हैं।

सुहृद० ना० पु० मित्र, प्रियतम।

सूअर० ना० पु०
सूअरी० ना० स्त्री० } शूकर, बराह।

सूआ० ना० पु० तोता, सूजा।

सूई० ना० स्त्री० वस्त्र सीवने की वस्तुविशेष।

सूंगरा० ना० पु० भैंसका बछड़ा, पड़वा।

सूंगा० ना० पु० टन्ना, टीटा।

सूंघ० ना० स्त्री० गन्ध, बास।

सूंघन० ना० स्त्री० सूंघने की वस्तु।

सूंघना० स० क्रि बासलेना, गन्धिग्रहना।

सूंघनी० ना० स्त्री० नास, हुलास।

सूंट० ना० स्त्री० चुप्पी, मौन।

सूंड० ना० स्त्री० हाथी की नाक।

सूंडा० ना० पु० घुनविशेष, कीड़ा।

सूंडी० ना० स्त्री० कलार, कलवार।

सूंतना०
सूंथना० } स० क्रि० कांड़ना, खैंचना, टहनी से पत्ती को निकालना वा भिन्नी करना।

सूंस० ना० पु० सूस।

सूकटा० गु० दुबला, निर्बल, सूखा।

सूकर० ना० पु० शूकर।

सूकवा० ना० पु० किसारी, शुक्र।

सूकवार० ना० पु० शुक्रवार।

सूका० ना० पु०
सूकी० ना० स्त्री० } चौअन्नी।

सूक्ष्यपाकध० ना० पु० जवाखार।

सूखछड़ी० ना० स्त्री० क्षयरोग, सूखीछड़ी।

सूखना० अ० क्रि० सूखा होना, गलना, सिकुड़ना, मुरझाना।

सूखा० गु० शुष्क, रसहीन।

सूग० ना० स्त्री० दुविधा, चिन्ता, शक।

सूगा० ना० पु० तोता।

सूचक० गु० ज्ञापक, बोधक, शिक्षक, प्रकाशक।

सूचना० ना० स्त्री० जनावना।

सूचनिका० ना० स्त्री० बीजक, फ़ेहरिस्त।

सूचिका० ना० स्त्री० केतकी।

सूचित० गु० बोधित, सूचना कियागया।

सूचिमुखी० ना० स्त्री० माई दवा।

सूची० ना० स्त्री० सूई, दर्जी।

सूची.पत्र० ना० पु० पत्र जिसमें पुस्तक के अ-

ध्याय वा प्रकरण लिखेजाते हैं।

सूच्याकार० ना० पु० सूई के डौल।

सूज०
सूजन० } ना० पु० फुलाव, शोथ।

सूजना० अ० क्रि० फूलना।

सूजा० ना० पु० बर्मा, बेधी, सुतारी।

सूजी० ना० पु० सीनेहारा, दर्जी, दरदराआटा, सूई।

सूझ० ना० स्त्री० दृष्टि।

सूझना० अ० क्रि० गोचरीहोना, देखपड़ना।

सूत० ना० पु० धागा, तागा, रथवान, भाट, बढ़ई, पौराणिक, व्यासजी का शिष्य जो नैमिषारण्य में शौनकादिकन को पुराण सुनाताथा, पारा, व्यवहार, रीति, प्रीति।

सूतक० ना० पु० अशौच, अपवित्रता जो प्रसव वा मृत्यु के दिन से दश दिनतक मानते हैं उसके दो नाम हैं वृद्धिसूतक मृत्युसूतक।

सूतना० अ० क्रि० सोना, नींदलेना, स० क्रि० ताकना, उपायकरना, सूतलगाना, ताड़ना।

सूतली० ना० स्त्री० डोरी, पतली रस्सी।

सूतिका० ना० स्त्री० जच्चा, प्रसूतिका, प्रसौती।

सूती० गु० जो सूत से बना, सूतिका ताकीहुई सोतीहुई।

सूतू० गु० नींदू।

सूत्र० ना० पु० तागा संक्षेपसे अनेकार्थ का सूचक वा बोधक ऋचा।

सूत्रधार० ना० पु० नट, बाजीगर।

सूत्रनाभि०
सूत्रा० } ना० स्त्री० मकड़ी।

सूथन० ना० पु० जांघिया, पायजामह।

सूथनी० ना० स्त्री० जांघिया, पायजामा, सुथनी।

सूधा०
सूधा० } गु० सीधा, सूधा, साधारण, भोला, निष्कपट।

सूधाई० ना० स्त्री० सीधाई, भोलापन।

सून० गु० शून्य।

सूना० गु० छूंछा, उजाड़, जहां कोई न हो।

सूनु० ना० पु० पुत्र, बेटा।

सूनो० गु० शून्य।

सूप० ना० पु० शूर्प, छाज।

सूपकार० ना० पु० रोटी करने हारा, बवर्ची।

सूपाखेना० ना० पु० पक्षीविशेष।

सूपार० ना० पु० सुपारा।

सूपियारी० ना० स्त्री० सुपारी।

सूम० ना० पु० शूम, कृपण, कंजूस।

सूर० ना० पु० वीर, इगास, सूर्य्य, सूरदास, गु० अन्धा।

सूरज० ना० पु० सूर्य्य, सुग्रीव, राजाकरण, शनैश्चर, यमराज।

सूरजगहन० ना० पु० सूर्य्यग्रहण।

सूरजमुखी० ना० स्त्री० सूर्य्यमुखी।

सूरजवल्लभ० ना० पु० भंगरा पौधा।

सूर्जिका० ना० स्त्री० सज्जीलोन।

सूरण० ना० स्त्री० जमींकन्द।

सूरता० ना० स्त्री० वीरता, बहादुरी।

सूरदास० ना० पु० कविविशेष, सूरसागर के बनानेहारे।

सूरवीर० ना० पु० वीर, सावन्त, रावत।

सूरमलार० ना० पु० रागिणीविशेष।

सूरमा० गु० वीर, सावन्त, मनचला।

सूरमापन० ना० पु० वीरता, सावन्ती, बहादुरी।

सूरसुत० ना० पु० सुग्रीव, शनैश्चर, करण, यमराज।

सूरा० ना० पु० सावन्त, बलवान्, वीर।

सूरी० ना० स्त्री० खण्डी, शूली।

सूर्प० ना० पु० शूर्प, सूप।

सूर्पनखा० ना० स्त्री० शूर्पनखा, रावण की बहन।

सूर्य० ना० पु० सुवर्णधातु, दिनमणि, रवि, सूरज।

सूर्यक० ना० पु० नींबवृक्ष।

सूर्य्यकान्ति० ना० स्त्री० सूर्य्यमणि।
सूर्य्यग्रहण० ना० पु० सूर्य्य का ग्रहण।
सूर्य्यमणि० ना० स्त्री० मणिविशेष।
सूर्य्यमुखी० ना० स्त्री० पुष्पविशेष।
सूर्य्यप्रिय० ना० पु० तांबाधातु।
सूर्य्यवंशी० ना० पु० सूर्य्य वंश का क्षत्री।
सूर्य्यवल्लभ० ना० पु० भृंगराज, भंगरा पौधा।
सूर्य्याख्य० ना० पु० सूर्य्यमणि।
सूर्य्याह्वय० ना० पु० मदारवृक्ष।
सूर्य्यास्त० ना० पु० सन्ध्या, सांझ, सूर्य्य का अस्त अर्थात् छुपना।
सूर्य्येन्दुसंगमा० ना० पु० अमावस।
सूर्य्योदय० ना० पु० सूर्य्य का उदय, तड़का, सबेरा।
सूल० ना० पु० शूल, फुरफुरी, माल्लाकी मुनि, कांटा, अस्त्रविशेष।
सूली० ना० पु० शूली, ना० स्त्री० फांसी।
सूवा० ना० पु० तोता, मोटी सूई।
सूस० } ना० पु० जल जन्तुविशेष।
सूसमार० }
सूसी० ना० स्त्री० वस्त्रविशेष।
सूहा० गु० लाल, अरुण, ना० पु० रागविशेष।
सूक्ष्म० ना० पु० जो वस्तु अस्थूल अर्थात् हलकी पतली बारीक हो।
सूक्ष्मता० ना० स्त्री० हलकापन, पतलाई, बारीकी।
सूक्ष्मदर्शी० गु० चतुर, सुर्त्ता, प्रवीण, ज्ञानी।
सूक्ष्मपत्र० ना० पु० करौंदा।
सृजना० स० क्रि० सिरजना।
सृजित० गु० जो सिरजागया।
सृष्टि० ना० स्त्री० उत्पत्ति, जगत्, वृद्धि।
सृष्टिकर्त्ता० ना० पु० ब्रह्मा, परमात्मा।
से० अव्य० अपादान कारक वा करण का बोधक चिह्न, साथ, संग।
सेंक० ना० पु० सेंकने का काम, ततार।
सैंकड़ा० गु० सौ, शत, १००।

सेंकना० स० क्रि० तताना, गर्माना।
सेंगरी० ना० स्त्री० फली, छीमी।
सेंठा० ना० पु० } सरकण्डा जिससे मोढ़ा
सेंठी० ना० स्त्री० } बनाते हैं, सरपत, पतली मूंज का पौधा।
सेंत० अव्य० विनामोल, मुफ्त, सेंतमेत।
सेंतना० स० क्रि० सुधारना, बनाना, स्वच्छ करना।
सेंद० ना० पु० खीराविशेष।
सेंदुर० ना० पु० ईंगुर।
सेंध० ना० पु० चोरी करने के लिये चोरलोग जो भीत में छेद करते हैं सुरंग।
सेंधना० स० क्रि० खोदना, ढाना।
सेंधा० ना० पु० लवणविशेष जिसको लाहौरी लोन कहते हैं।
सेंधिया० ना० पु० विष, जातिविशेष, चोर जो सेंध में पैठता है।
सेंधी० ना० स्त्री० खजूरका रस, ताड़ीविशेष।
सेंहुआं० ना० पु० दादविशेष, दिनाई।
सेगुन० ना० पु० काष्ठविशेष जो पैगू देश से आता है।
सेचन० ना० पु० छिड़काव।
सेज० ना० स्त्री० शय्या, बिस्तर, पलंग, मंजा।
सेजबन्द० ना० पु० सेजपर बिछौना बांधने के लिये डोरीविशेष।
सेठ० ना० पु० बड़ा साहूकार।
सेठन्० ना० स्त्री० सेठकी स्त्री।
सेत० ना० पु० पुल, सेतु, गु० श्वेत।
सेतना० स० क्रि० जुगवना, सेंतना।
सेतु० ना० पु० पुल, बांध, मर्य्यादा।
सेतुबन्ध० ना० पु० तीर्थविशेष, पुल जो लंका और भरतखण्ड के मध्य समुद्र में हनुमान् आदि कनने बनाया था।
सेदना० स० क्रि० सेंकना, ततारना।
सेन० ना० स्त्री० } कटक, फ़ौज, नाम एक
सेना० ना० पु० } भक्त नाईका है।

सेनानी॰ } ना॰ पु॰ चमूपाल, दलपति,
सेनापति॰ } स्वामिकार्तिक।

सेव॰ ना॰ पु॰ फल विशेष।

सेम॰ ना॰ स्त्री॰ तरकारी विशेष का पौधा वा उसकी फली।

सेमर॰ ना॰ पु॰ सेमल वृक्ष विशेष वा उसकी रुई।

सेर॰ ना॰ पु॰ तौल विशेष १६ छटांककी।

सेराना॰ अ॰ क्रि॰ ठंढा होना, स॰ क्रि॰ ठंढा करना, बहाना, भसाना।

सेल॰ ना॰ पु॰ बर्छा।

सेलखड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ पर्वतकी मिट्टी विशेष।

सेला॰ ना॰ पु॰ वस्त्र विशेष, बाघ विशेष।

सेलिया॰ ना॰ पु॰ मार्जार, सेलीवाला।

सेली॰ ना॰ स्त्री॰ बर्छी, रामायणे यथा (तुरत विभीषण पाछे मेली, सन्मुख सही राम सो सेली) सूतकी बनी माला जो उदासी पहनते हैं, जालबर्छी।

सेव॰ ना॰ पु॰ पकवान विशेष, सेव ना॰ स्त्री॰ सेवा, सुश्रूषा।

सेवई॰ ना॰ स्त्री॰ खानेकी वस्तु विशेष।

सेवक॰ ना॰ पु॰ नौकर पुजारी, सेवाकरनेहारा, खिदमतगार।

सेवकाई॰ ना॰ स्त्री॰ नौकरी, पूजा, सेवा, टहल, खिदमतगारी।

सेवटि॰ ना॰ स्त्री॰ नदीका रेत, दलदल।

सेवड़ा॰ ना॰ पु॰ जैनमतका भिखारी।

सेवती॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प विशेष वा उसकापौधा।

सेवन॰ ना॰ पु॰ पालन, पोषण, सेवाकरन।

सेवना॰ स॰ क्रि॰ नौकरी करना, पालना, पक्षी का अंडेपर बैठना।

सेवा॰ ना॰ स्त्री॰ नौकरी, टहल, पूजा, खिदमतगारी।

सेव्यवीर॰ ना॰ पु॰ खसखस।

सेस॰ ना॰ पु॰ शेष।

सेसर॰ ना॰ पु॰ ताशमें खेल विशेष।

सै॰ गु॰ सौ॰ ना॰ स्त्री॰ भागवानी, बरकत, लहर बहर।

सैंकड़ा॰ गु॰ सौ, शत।

सैंगर॰ ना॰ स्त्री॰ शमीवृक्ष की फली, बबूल की फली।

सैंतालीस॰ गु॰ चालीस और सात ४७।

सैंतीस॰ गु॰ तीस और सात ३७।

सैंहिकेय॰ ना॰ पु॰ राहु, केतु।

सैन॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, फ़ौज, मटकी, शयन, चिह्न, इशारह, नाम एक भक्तका।

सैनप॰ ना॰ पु॰ सेनानी, सेनापति, स्वामिकार्त्तिक।

सैना॰ ना॰ स्त्री॰ सेन, दल, फ़ौज।

सैनापति॰ } ना॰ पु॰ सेनापति, सिपह
सैनापाल॰ } सालार।

सैनासैनी॰ ना॰ स्त्री॰ परस्पर सैनकरना।

सैन्धव॰ ना॰ पु॰ सिन्धुदेश का घोड़ा वा लोन, घोड़ा।

सैन्य॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, दल, कटक।

सैरभ॰ ना॰ पु॰ भैंसा।

सैसांझ॰ अव्य॰ सांझ के आरम्भ में।

सैहरन॰ ना॰ स्त्री॰ समाई।

सैहरनी॰ गु॰ सहवैया।

सो॰ सर्व॰ सम्बन्धवाचक, सर्वनाम।

सोअर॰ ना॰ पु॰ कोठरी जिसमें प्रसूतीरहतीहै।

सोआ॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष।

सोई॰ सर्व॰ वह, आप।

सों॰ अव्य॰ सो।

सोंटा॰ ना॰ पु॰ गदका, मूसल, छोटीलाठी।

सोंठ॰ ना॰ स्त्री॰ सूखी अद्रक।

सोंधना॰ स॰ क्रि॰ धोनेके लिये गीली मिट्टीसे कपड़ा मलना, भरना, लगाना।

सोंधा॰ ना॰ पु॰ बालोंका मसाला, नई मृत्तिका पात्र भिगोने से जो गन्ध, सुगन्धित।

सोंधाहट॰ ना॰ स्त्री॰ सुगन्ध, सुबास।

सोंह॰ ना॰ स्त्री॰ क्रिया; शपथ।

सोंही० अव्य० सामने, सन्मुख।

सोखना० स० क्रि० खींचना, चूसना, पीलेना।

सोच० ना० पु० ध्यान, बूझ, शोच।

सोचना० स० क्रि० ध्यानकरना, बूझना, शोचना।

सोज० ना० पु० सूझ।

सोझ० ना० स्त्री० सीधाई।

सोझा० गु० सीधा।

सोत० } ना० पु० भूर. कुण्ड, जलका निकास,
सोता० } छेद, धारा, झरना, समुद्रका खाल।

सोत्साह० गु० उत्साह समेत, आनन्दयुक्त।

सोथ० ना० स्त्री० सूज।

सोदर० ना० पु० सहोदर, सगाभाई।

सोदरा० ना० स्त्री० सगीबहन, रामचन्द्रिकायां (सुधा सोदरा यद्यपि आप, सबहीते अतिकष्टक प्रताप)।

सोध० ना० स्त्री० शोध, खोज।

सोधना० स० क्रि० शोधन करना, ऋणभरना, मिलना, निर्मल करना, शुद्ध करना।

सोन० ना० पु० शोण, सुवर्ण पुष्पविशेष।

सोनहरा० } गु० सोने का, सोने कासा-
सोनहला० } रंग।

सोना० ना० पु० स्वर्ण, कनक लिंग, अ० क्रि० नींदलेना, मरना।

सोनार० ना० पु० जातिविशेष, स्वर्णकार।

सोनिया० ना० पु० राख से सोना भिन्न करनेहारा, न्यारिया, छोटालिंग बालक का।

सोपान० ना० पु० सीढ़ी, जीनह।

सोफालिका० ना० स्त्री० संभालूपौधा।

सोभना० अ० क्रि० सोहना, सजना।

सोभा० ना० स्त्री० शोभा।

सोम० ना० पु० चन्द्रमा।

सोमनाथ० ना० पु० महादेव जो गुजरातमें है।

सोमपादप० ना० पु० कायफल।

सोमरजन० ना० पु० लालचन्दन।

सोमराज० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।

सोमराजी० ना० स्त्री० बाकुची।

सोमवल्लक० ना० पु० कायफल।

सोमवल्ली० ना० स्त्री० बाकुची।

सोमवार० ना० पु० चन्द्रवार, दूसरा दिन।

सोमवारी० ना० स्त्री० सोमवारकी अमावस।

सोमक्षीरी० ना० स्त्री० सोमवल्ली।

सोरठ० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।

सोरठा० ना० स्त्री० छन्दविशेष।

सोह० ना० स्त्री० शोभा।

सोहं० ना० पु० मन्त्रविशेष।

सोहन० गु० शोभादेनेहारा, प्यारा, चाहता, ना० पु० सज्जन, रेती, ना० स्त्री० मिठाई विशेष।

सोहना० अ० क्रि० सजना, शोभादेना।

सोहागा० ना० पु० सुहागा।

सोहिल० ना० पु० रागविशेष।

सोहीं० अव्य० सोहीं, सन्मुख।

सौ० गु० शत, १००,

सौं० ना० पु० शपथ, सौंह, सौगन्द, अव्य० से।

सौंकरी० ना० स्त्री० बाराहीकन्द।

सौंचना० अ० क्रि० शंकाजाकर जल से गुदा धोना।

सौंप० ना० स्त्री० धरोहर, थाती, सुपुर्दगी।

सौंपना० स० क्रि० पहुंचाना, सुपुर्द करना, धरना, रखना।

सौंफ० ना० स्त्री० औषधि विशेष।

सौंरा० ना० पु० कालल, काजल गु० सांवला।

सौंर० ना० पु० मछलीविशेष।

सौरि० ना० स्त्री० वृद्धिसूतक।

सौरी० ना० स्त्री० जच्चा, प्रसूती।

सौंह० ना० स्त्री० क्रिया, शपथ, सौगन्द।

सौख्य० ना० पु० सुख, आराम।

सौगन्द० ना० स्त्री० शपथ, क्रिया, सौंह, यह शब्द फ़ारसीका है भाषा में प्रचलित है।

सौच॰ ना॰ पु॰ सौच, जो क्रिया करने से पवित्र हो।

सौत्रेती॰ ना॰ स्त्री॰ रक्षा, बचाव।

सौजन्य॰ ना॰ पु॰ सुजनता।

सौत॰
सौतन॰
सौति॰
सौतिन॰ } ना॰ स्त्री॰ एकमनुष्यकी दोस्त्रियां आपसमें एक दूसरेकी सौत कहलाती हैं।

सौतिया॰ ना॰ स्त्री॰ सौति।

सौतियादाह॰ ना॰ पु॰ सौति का दाह।

सौतेला॰ गु॰ जो सौतिका जाया है।

सौध॰ ना॰ पु॰ महल, ऊंचा मकान।

सौन्दर्य्य॰ ना॰ पु॰ सुन्दरता।

सौभाग्य॰ ना॰ पु॰ सुभाग, भाग्यमानी, सुहाग।

सौभाग्यवती॰ ना॰ स्त्री॰ सुहागिन।

सौमित्र॰ ना॰ पु॰ सुमित्रा सुत, लक्ष्मणजी।

सौम्य॰ ना॰ पु॰ बुधग्रह, बुधवार, चन्द्रपुत्र, गु॰ उजला, सुन्दर।

सौम्या॰ ना॰ स्त्री॰ शालपर्णी।

सौर॰ ना॰ पु॰ शनैश्चर, सूर्य सम्बन्धी, ना॰ स्त्री॰ मछली विशेष।

सौरभ॰ ना॰ पु॰ केसर, सुगन्ध, आम्रवृक्ष।

सौरमास॰ ना॰ पु॰ सूर्यका एक राशिमें रहने का काल, एक संक्रान्ति से दूसरी तक।

सौरवर्ष॰ ना॰ पु॰ बारह संक्रांतों का समय।

सौरि॰ ना॰ पु॰ शनैश्चर, संहिता विशेष।

सौरेय॰
सौरेयक॰ } ना॰ पु॰ पियाबांसा।

सौहार्द॰ ना॰ पु॰ मित्रत्व, मित्रता।

स्कन्द॰ ना॰ पु॰ स्वामिकार्तिक।

स्कन्ध॰ ना॰ पु॰ कन्धा, काण्ड।

स्खलन॰ ना॰ पु॰ पतन।

स्तन॰ ना॰ पु॰ कुच, उरोज, थन।

स्तब्ध॰ गु॰ रूखा।

स्तम्भ॰ ना॰ पु॰ खम्भा, रुकाव, थंभाव।

स्तम्भन॰ ना॰ पु॰ रुकाव, थंभाव, रोक, टोक।

स्तम्भित॰ गु॰ जो रोका वा थांभागया।

स्तव॰ ना॰ पु॰ स्तुति, विनय की पोथी।

स्तावक॰ ना॰ पु॰ स्तुति करनेहारा।

स्तुति॰ ना॰ स्त्री॰ सराह, बड़ाई, भजन, विनय।

स्तुतिपाठक॰ ना॰ पु॰ सूत, बन्दीजन।

स्तेन॰ ना॰ पु॰ चोर।

स्तेय॰ ना॰ पु॰ चोरी।

स्तोत्र॰ ना॰ पु॰ स्तव, स्तुति।

स्त्री॰ ना॰ स्त्री॰ नारी, लुगाई, औरत।

स्त्रैण॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री के वश वा स्त्री के स्वभाववर।

स्थ॰ गु॰ थिर, ठहरा, कायम।

स्थगित॰ गु॰ थका, छपा।

स्थल॰ ना॰ पु॰ स्थान, भूमि, जगह, घर, भूमि जो सूखी है जिसपर मनुष्यादि बसते हैं।

स्थाणु॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

स्थान॰ ना॰ पु॰ ठौर ठिकाना, घर, ठाम।

स्थानापन्न॰ गु॰ जगहपर, उसकेपलटे, किसी के स्थानपर प्रतिष्ठित होना।

स्थानी॰ गु॰ घरवाला, मुकामी।

स्थापन॰ ना॰ पु॰ रखना, धरना, बैठाना।

स्थापना॰ ना॰ स्त्री॰ प्रतिष्ठा, स्थापनकरना।

स्थापित॰ गु॰ प्रतिष्ठित, रक्खागया, निर्णय, स्थिर, अचल, जो स्थापन कियागया।

स्थाली॰ ना॰ स्त्री॰ थाली, टोकनी।

स्थावर॰ गु॰ अचल यथा वृक्षादि, जड़।

स्थित॰ गु॰ ठहराहुआ।

स्थिति॰ ना॰ स्त्री॰ टिकाव, ठहराव।

स्थिर॰ गु॰ अलोल, अचल, शान्त।

स्थिरता॰ ना॰ स्त्री॰ शान्ति, धीमापना।

स्थूल॰ गु॰ मोटा, भारी, बड़ा, कपास।

स्थूलदर्भ॰ ना॰ पु॰ मूंज, सेंठा, पतावर।

स्थूलफला॰ ना॰ स्त्री॰ सेमलवृक्ष।

स्थूलैला० ना० स्त्री० बड़ी इलायची।

स्थैर्य्य० ना० पु० स्थिरता।

स्थौल्य० ना० पु० मोटापा, मोटाई।

स्नान० ना० पु० नहान।

स्नानीय० ना० पु० जल जो नहाने के योग्य है।

स्नुही० ना० पु० सेंहुड़।

स्नेह० ना० पु० प्रेम, प्रीति, प्यार, तैल।

स्नेहवृक्ष० ना० पु० देवदारु।

स्पर्द्धा० ना० स्त्री० द्वेष, दाह, अन्य के अपमान करने की इच्छा।

स्पर्श० ना० पु० छुआवट, छूने का काम।

स्पर्शेन्द्रिय० ना० स्त्री० त्वचा, चर्म।

स्पष्ट० ना० पु० खुला, सहज, ठीक, दुरुस्त।

स्पष्टीकरणार्थ० अव्य० स्पष्ट करने के लिये।

स्पिरा० ना० स्त्री० शालपर्णी।

स्पृश्य० गु० स्पर्श करने के योग्य।

स्पृष्ट० गु० छुआगया।

स्पृहा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।

स्फटक० } **स्फटिक०** } ना० पु० स्वच्छ पाषाण विशेष, बिल्लौर पत्थर, चन्द्रकान्तमणि, और कपूर।

स्फटिकाक्षा० ना० स्त्री० फटकरी।

स्फटिकोपल० ना० पु० चन्द्रकान्तमणि, बिल्लौर।

स्फुट० गु० खिला, खुला, व्यक्त, प्रकट।

स्फुरत्० अ० क्रि० प्रकाशित, शोभित, डोलत।

स्फूर्त्ति० ना० स्त्री० टीस, धड़धड़ाहट, डोल, हिलाव।

स्फोटक० ना० पु० फोड़ा।

स्मय० ना० पु० अभिमान, अहंकार, ग़रूर।

स्मर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कामदेव।

स्मरण० ना० पु० सुधि, चेत, स्मृति, याद, ध्यान।

स्मारक० गु० जो स्मरण करावै।

स्मार्त्त० ना० पु० स्मृतिका ज्ञाता।

स्मृति० ना० स्त्री० शास्त्र विशेष, स्मरण, चेत, याद।

स्मृतीहिता० ना० स्त्री० शंखाहुली।

स्मृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, अधिक, चाहना।

स्यन्दन० ना० पु० रथ, पानी, चित्ततरंग, तेंदूवृक्ष।

स्यान० } **स्यानपन०** } ना० पु० चतुराई, चालाकी।

स्याना० गु० चतुर, चालाक।

स्यार० ना० पु० शृगाल, गीदड़।

स्योना० } **स्योनाक०** } ना० पु० वृक्षविशेष।

स्निग्धछदा० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष।

स्निग्धपर्णी० ना० स्त्री० मुरहरी।

स्रुव० ना० पु० श्रुवा।

स्रोत० ना० पु० सोत, सोता।

स्रोतः० ना० पु० सोता।

स्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी।

स्व० सर्व० अपना, निजकाबोधक, ना० पु० धन, आत्म।

स्वः० ना० पु० स्वर्ग।

स्वकीय० ना० पु० अपना, सगा।

स्वकीया० ना० स्त्री० निजस्त्री, अपनी।

स्वच्छ० गु० निर्मल, साफ़, पवित्र।

स्वच्छता० ना० स्त्री० निर्मलता, पवित्रता, सफ़ाई।

स्वच्छन्द० गु० अपनी इच्छाके अनुसार, स्वैरी स्वाधीन, ना० पु० ईश्वर।

स्वच्छन्दचारी० ना० पु० संन्यासी, भगवान्।

स्वच्छफल० ना० पु० नारियल।

स्वजन० ना० पु० अपनेलोग, नतैत।

स्वजातीय० गु० एकवर्णका, निजगोत्री।

स्वत० अव्य० आप से।

स्वतन्त्र० गु० स्वाधीन, निजवश।

स्वतन्त्रता० ना० स्त्री० स्वाधीनता।

स्वधर्म० ना० पु० अपना धर्म।

स्वप्न० ना० पु० निद्रावस्था, द्वितीयावस्था, नींद में

जो कुछ दिखाई देता है।

स्वप्नकथा० ना० स्त्री० स्वप्नका वृत्तांत, संसार सुख।

स्वप्नफल० ना० पु० ताबीर ख़्वाब, स्वप्नकाधर्म वा फल।

स्वप्नवल्कला० ना० स्त्री० तेजबल।

स्वप्रकाश० गु० जो आपही प्रकाश वा प्रकाशित है।

स्वभाव० ना० पु० चरित्र, प्रकृति, आदत।

स्वयंसिद्ध० ना० स्त्री० सिद्धरूपी, जो आपही सिद्ध।

स्वयम्बर० ना० पु० स्त्रीका निज इच्छावर्‌वर करलेना, समाज विशेष जहां कन्या निजवर ढूंढ़ती है।

स्वयम्भू० ना० पु० ब्रह्मा।

स्वर० ना० पु० शब्द, धुनि, श्वास और अकारादि १६ वर्ण।

स्वरपर्णिनी० ना० स्त्री० गोभी, पौधा।

स्वराह्वया० ना० स्त्री० अजमोद।

स्वरूप० ना० पु० अपनारूप, समानता, व्यक्ति।

स्वर्गपताली० ना० पु० भेंगा, ढेरा।

स्वर्गीय० } **स्वर्ग्य०** } गु० जो स्वर्ग का है।

स्वर्ण० ना० पु० सुवर्ण, कनक, सोना।

स्वर्णपर्णी० ना० स्त्री० किरवाली।

स्वर्णमुद्रा० ना० पु० अशरफी, मुहर।

स्वर्णवर्ण० ना० पु० गेरू।

स्वर्णवर्णा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

स्वर्णसौ० } **स्वर्णस्थलया०** } ना० स्त्री० किरवाली।

स्वल्प० गु० अत्यन्तछोटा, थोड़ा, ना० पु० गीदड़।

स्वल्पकन्द० ना० पु० कसेरू।

स्वल्पाहार० ना० पु० थोड़ाआहार, कमखाना।

स्ववर्ग० ना० पु० अपनावर्ग।

स्ववर्गौक० गु० अपनेवर्गका कथितस्थान।

स्ववर्ण० ना० पु० निजगोत्र, अपनावर्ण।

स्ववर्णी० गु० निजगोत्री, एक जातिका।

स्ववश० ना० पु० स्वाधीन, स्वतंत्र, निजवश।

स्वसेवक० ना० पु० अपनासेवक।

स्वसेव्य० गु० आत्मपूजक।

स्वस्ति० अव्य० मंगल, कल्याण, तथास्तु।

स्वस्तिवाचन० ना० पु० शास्त्रोक्त कर्मके आदि में व्यवहार विशेष।

स्वस्वामिभाव० गु० स्वामी और उसकी वस्तु का सम्बन्ध।

स्वाइं० } **स्वाई०** } ना० पु० स्वामी, मालिक।

स्वांग० ना० पु० भांड़ैती, तमाशा।

स्वांगी० ना० पु० स्वांग बनानेहारा।

स्वागत० ना० पु० कुशल, क्षेम, मिज़ाजपूछना।

स्वाति० } **स्वाती०** } ना० स्त्री० पन्द्रहवां नक्षत्र।

स्वाद० ना० पु० सवाद, रस, मज़ह, मधुककड़ी।

स्वादंष्ट्र० ना० पु० गोखुरू।

स्वादक० } **स्वादिष्ट०** } गु० जिस में स्वाद हो, मीठा स्वाद।

स्वादी० गु० स्वाद करनेहारा, जिसमें स्वादहो, ना० पु० अंगूर।

स्वादु० गु० मीठा स्वादिष्ट, स्वाद।

स्वादुकण्टक० ना० पु० गोखुरू।

स्वादुपुष्पिका० ना० स्त्री० दुद्धी पौधा।

स्वादुमा० ना० स्त्री० काकोली।

स्वाधिष्ठान० ना० पु० चक्र विशेष।

स्वाधीन० गु० स्वतन्त्र, निजवश, खुद मुख़्तार।

स्वाधीनता० } **स्वाधीनी०** } ना० स्त्री० स्वतन्त्रता।

स्वाभाविक० गु० जो स्वभाव से है, प्रकृती, जन्मी।

स्वामिकार्त्तिक० ना० पु० शिवजीके पुत्रविशेष।

स्वामित्व॰ ना॰ पु॰ अधिकार, प्रभुता, मालिकी।

स्वामी॰ ना॰ पु॰ प्रभु, राजा, मालिक, गुरुदेव, पति।

स्वाराम॰ ना॰ पु॰ निज उपवन, अपनाबाग।

स्वार्थ॰ ना॰ पु॰ संसारिक काम, संसार की इच्छा, निज अर्थ वा लाभ, आत्मपालन।

स्वार्थिक॰ गु॰ जो अपने को पूराकरे, काम का कृतार्थ।

स्वार्थी॰ गु॰ आत्मपालक, अपनामतलबी।

स्वास॰ } **स्वासा॰** } ना॰ स्त्री॰ श्वास।

स्वाहा॰ ना॰ स्त्री॰ अग्निदेवकी स्त्री, जोहुवनादि में मन्त्र पूरे होने के पीछे बोलते हैं।

स्वीकार॰ } **स्वीकृत॰** } ना॰पु॰ अंगीकार, कबूल, मंजूर।

स्वेच्छक॰ गु॰ स्वाधीन, हठीला।

स्वेच्छा॰ ना॰ स्त्री॰ स्वाधीनता, हठ, निजेच्छा।

स्वेच्छाचारी॰ गु॰ स्वाधीनवर्त्ती, निजइच्छा समान कारक।

स्वेत॰ गु॰ श्वेत, सफेद।

स्वेद॰ ना॰ पु॰ प्रस्वेद, पसीना, ताप।

स्वेदज॰ ना॰ पु॰ जो पसीना से उपजे यथा जूवा, चीलड़ादि।

स्वैरण॰ ना॰ गु॰ स्वाधीन, पारदारिक।

स्वैरिणी॰ ना॰ स्त्री॰ कुलटा, छिनाल।

स्वैरी॰ गु॰ स्वाधीन, स्वैरेन, खुदमुख्तार।

स्वोपकारी॰ गु॰ निज उपकारी, स्वार्थी।

[ह]

हंकाना॰ स॰ क्रि॰ निकालना, हांकना, चलाना।

हंकार॰ ना॰ पु॰ हांक, पुकार, चिल्लाहट।

हंकारना॰ स॰ क्रि॰ हांकना, पुकारना, पाल चढ़ाना।

हंफैल॰ गु॰ हांकनेहारा।

हंस॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष, आत्मा, जीव, राजा, धर्म, घोड़ा, सूरज, परमहंस।

हंसक॰ ना॰ पु॰ बिछुआ, जो स्त्रियां पांव में पहनती हैं।

हंसध्वज॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा, राजा विशेष, गु॰ जिसकी ध्वजा में हंस बना हो।

हंसना॰ स॰ क्रि॰ हास्य करना, ठट्ठामारना।

हंसपद॰ ना॰ पु॰ हंसका चरण, चिह्न विशेष, जो लेखक लोग भूलके स्थान पर लगाते हैं।

हंसपदी॰ } **हंसपादी॰** } ना॰ स्त्री॰ पौधा विशेष।

हंसमुख॰ गु॰ आनन्दी, मगन, हंसोड़।

हंसा॰ ना॰ पु॰ हास्य।

हंसाई॰ ना॰ स्त्री॰ हंसी, ठठोली।

हंसाना॰ स॰ क्रि॰ हास्यकराना, रिझाना।

हंसिनी॰ ना॰ स्त्री॰ हंसकी स्त्री।

हंसिया॰ ना॰ पु॰ हंसुआ।

हंसी॰ ना॰ स्त्री॰ हास्य, ठठोली।

हंसुआ॰ ना॰ पु॰ अन्नादिकाटने का हथियार।

हंसेश॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

हंसोड़॰ गु॰ ठठोल, हँसमुख।

हंसोड़पन॰ ना॰ पु॰ ठठोली।

हकबकाना॰ अ॰ क्रि॰ घबड़ाना, व्याकुल होना।

हकला॰ गु॰ जो गले से अटकके बोले, जिसकी जीभ जल्दी न चले।

हकलाना॰ अ॰ क्रि॰ जीभ का हड़बड़ाना बात का अटकना।

हकलाहा॰ गु॰ लड़बड़ाहा।

हकारना॰ स॰ क्रि॰ बैलादि का घुमाना।

हकाबका॰ गु॰ घाबड़ा, व्याकुल।

हगना॰ अ॰ क्रि॰ गुहकरना, जंगल फिरना, झाड़े जाना।

हगनेटी॰ } **हगनौटी॰** } ना॰ स्त्री॰ हगने की इन्द्रिय विशेष, गुदा, गांड़।

हगभरना॰ अ॰ क्रि॰ गुहकरना, विष्ठाकर रहना।

हगाना० स० क्रि० बीटकराना, गुदकराना।
हगास० ना० स्त्री० हगने की इच्छा, शूल।
हचकोला० ना० पु० धक्का, झोंक।
हट० ना० स्त्री० हठ।
हटकना० } अ० क्रि० अटकाना, रोकना, मने करना, रोकाना, मनेकराना।
हटकाना० }
हटना० अ० क्रि० अलगहोना, चलेजाना, टलना, पीछे वा आगे को बढ़ना।
हटवा० ना० पु० अन्नादि मापने के लिये हाटमें बैठनेहारा।
हटवाई० ना० स्त्री० हाट का काम।
हटाना० स० क्रि० टालदेना, रोंकदेना, सड़काना।
हटाल० ना० स्त्री० अन्धेर के कारण दूकानबन्द करना।
हटिया० } ना० स्त्री० हाट।
हट्ट० }
हट्टाकट्टा० गु० पोढ़ा, चर्फरा, अच्छा।
हठ० ना० पु० मगराई, रारि, मचलाई, अड़।
हठना० अ० क्रि० हठीला वा मचला वा टेढ़ाहोना, ज़िद्‌करना।
हठात्० अव्य० अकस्मात्।
हठी० } गु० हठ करने हारा, मचला, मगरा।
हठीला० }
हड़० ना० स्त्री० फलविशेष, ना० पु० काठ।
हड़कत० ना० पु० पौधाविशेष।
हड़गोला० ना० पु० पक्षीविशेष।
हड़जोड़ा० ना० पु० पौध विशेष।
हड़फूटन० ना० पु० हड्डी में पीड़ा।
हड़बड़ाना० अ० क्रि० घबराना, व्याकुलहोना, हलबलाना।
हड़बड़िया० गु० चिड़चिड़ा।
हड़बड़ी० ना० स्त्री० खलबली, हुल्लड़।
हड़हड़ाना० अ० क्रि० थर्थराना, कांपना, धड़धड़ाना, खड़खड़ाना।
हड़हड़ाहट० ना० स्त्री० कड़ाका, चटाका।
हड़हड़ी० ना० स्त्री० टंकार।
हड़ा० ना० पु० बागवान इत्यादि इस शब्द को कहकर चिड़िया उड़ाते हैं।
हड़ाना० स० क्रि० चिड़िया उड़ाना।
हड़ाहड़ी० ना० स्त्री० हड़हड़ी।
हड्डा० ना० पु० मोटाहाड़, बिर्नी, मोथरा।
हड्डी० ना० स्त्री० अस्थि, हाड़।
हड्डीला० गु० अस्थिवान्।
हण्डनी० ना० स्त्री० कुचलन वा कुल्टास्त्री।
हण्डा० ना० पु० तांबे वा पीतल वा मिट्टी का बड़ावर्तन।
हंडाना० स० क्रि० देश वा नगर से निकाल देना, मुंह कालाकरके गधेपरचढ़ाकर घुमाना।
हंडिका० } ना० स्त्री० हांडी।
हंडी० }
हत० अव्य० दुत्, नाश।
हतन० ना० पु० मारण, वधन।
हतना० स० क्रि० वधकरना, मारडालना।
हतादर० ना० पु० सन्मानहीन, निरादर।
हती० अव्य० थी, रहै, ना० स्त्री० मारीगई।
हत्थ० ना० पु० हाथ।
हत्था० ना० पु० हाथा।
हत्या० ना० स्त्री० वध, हिंसा, वधदोष।
हत्यारा० ना० पु० हिंसक, बधिक, वधदोषी।
हत्यारिन० } ना० स्त्री० हिंसक स्त्री।
हत्यारी० }
हथ० ना० पु० हाथ।
हथकड़ा० ना० पु० पकड़, हाथ से पकड़ने की वस्तु।
हथकड़ी० ना० स्त्री० हाथ में डालनेकी बेड़ी।
हथकंडा० } ना० पु० टेव, ढब, रवैया।
हथखंडा० }
हथचपूआ० ना० पु० भाड़ा, अंश।
हथछुट० } ना० पु० पीटनेहारा, लड़ाका।
हथछूट० }
हथनाल० ना० स्त्री० हाथीपरकी तोपछोटी।

हथनी॰ ना॰ स्त्री॰ हस्तिनी।

हथफेर॰ ना॰ पु॰ रुपया परखने में ठगविद्या, उधारलेना।

हथरस॰ ना॰ पु॰ } चूमाचाटी, मठोली।
हथरसी॰ स्त्री॰ }

हथरी॰ ना॰ स्त्री॰ रहटेका हथकड़ा।

हथल॰ }
हथवास॰ } ना॰ पु॰ पीतलका हथकड़ा।

हथा॰ ना॰ पु॰ चक्कीका हथकड़ा।

हथिया॰ ना॰ स्त्री॰ हस्त नक्षत्र; वर्षाकालका अन्त, हथकड़ा।

हथियाना॰ स॰ क्रि॰ पकड़ना, ग्रहणकरना।

हथियार॰ ना॰ पु॰ लोहखर, कलकांटा, अस्त्र।

हथी॰ ना॰ स्त्री॰ घोड़ेके मलने की वस्तु बालों की बनी।

हथेला॰ ना॰ पु॰ चोर।

हथेली॰ ना॰ स्त्री॰ हाथके बीचका स्थान।

हथौटी॰ ना॰ स्त्री॰ बनत, विद्या, प्रवीणता।

हथौड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा घन।

हदियाना॰ अ॰ क्रि॰ आगापीछा, छःपांचकरना, घबराना, स॰ क्रि॰ हुलसाना, फुसलाना, चौंप दिलाना, जांचना, बरबसकराना।

हदियाहट॰ ना॰ स्त्री॰ भोलापन, मुंहचोरी, घबराहट, बसबसाव, जचाव, चौंप।

हदियाहा॰ गु॰ भोला, मुंहचोर, सन्देही।

हनन॰ ना॰ पु॰ बध, हतन।

हनना॰ स॰ क्रि॰ वधकरना, मारडालना, मारना, जकड़ना।

हनी॰ गु॰ मारीगई, दबागई।

हनु॰ ना॰ पु॰ ठुड्डी, हनुमान्‌जी।

हनुमत्॰ }
हनुमन्त॰ } ना॰ पु॰ वायुपुत्र, रुद्रावतार, श्रीरामसेवक, महावीर।
हनुमान्॰ }

हन्तक॰ }
हन्ता॰ } ना॰ पु॰ वधकारी, मारनेहारा।

हन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ नाशक या वधकारी स्त्री।

हप॰ ना॰ पु॰ झपसे मुंह में डाल के निगलना।

हपझप॰ गु॰ फुर्तीला, चर्फरा, अव्य॰ झटपट।

हफहफाना॰ अ॰ क्रि॰ हांफना।

हबड़ा॰ गु॰ फूहड़, हबिला।

हबिला॰ गु॰ जिसके आगे के दांतबड़े २ हों।

हमारा॰ } सर्व॰ उत्तम पुरुष बहुवाक्यसम्बन्ध
हमारो॰ } बोधक शब्द।

हमेव॰ ना॰ पु॰ अहंकार, अहंभाव।

हय॰ ना॰ पु॰ घोड़ा।

हयमेध॰ ना॰ पु॰ अश्वमेध।

हयशाला॰ ना॰ स्त्री॰ घुड़साल, तबेला।

हयहय॰ ना॰ पु॰ नागार्जुन।

हये॰ क्रि॰ नाशे, मारे, मिटाये।

हर॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी, हल, सीर, अव्य॰ यह जिस शब्दके अन्तमें हो उसका अर्थ हरण का माना जावे यथा, पापहर, तापहर।

हरगिरि॰ ना॰ पु॰ कैलास।

हरण॰ ना॰ पु॰ बरबस वा चोरी से किसी की वस्तु का लेना, चोरी, लूट, नशावन, हरिण।

हरता॰ ना॰ पु॰ चोर, लुटेरा नाशक।

हरद॰ ना॰ पु॰ हल्दी।

हरदत्त॰ गु॰ जो शिवजी का दियाहुआ है।

हरना॰ स॰ क्रि॰ बरबस लेलेना, चोरीकरना। लूटना, उठालेना, हरिण।

हरनौटा॰ ना॰ पु॰ हरिण का बच्चा।

हरफारेवड़ी॰ ना॰ पु॰ फल विशेष।

हरबराना॰ अ॰ क्रि॰ हड़बड़ाना, घबड़ाना।

हरसिंघाड़॰ } ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फूल
हरसिंगार॰ } विशेष, पौधा विशेष।

हरवीर्य॰ ना॰ पु॰ पारा।

हरहार॰ ना॰ पु॰ सर्प, शिव की माला।

हरा॰ गु॰ वर्णविशेष, यथा घासकी सब्जी।

हराई॰ ना॰ स्त्री॰ हरियाली।

हराना॰ स॰ क्रि॰ जीतलेना, थकाना।

हरावल० ना० पु० दलके अगाड़ी चलनेवाला।

हरि० ना० पु० ईश्वर, पानी, अग्नि, वायु, मार्ग, हाथी, पर्वत, सर्प, सिंह, इन्द्र, वानर, सूर्य, घन, आकाश, मनु, हरिण, पपीहा, कोयल, प्राण, मोती, भ्रमर, अमृत, चन्द्रमा, कमल, सुवर्ण, कामदेव, खण्ड, घोड़ा।

हरिजन० ना० पु० साधु, भक्त, सन्त।

हरित० गु० हरा, डहडहा, चोरायागया।

हरिताल० ना० पु० उपधातु विशेष।

हरितालिका० ना० स्त्री० भादों सुदी तीज का व्रत।

हरिद्रा० ना० स्त्री० हल्दी।

हरिद्वार० ना० पु० तीर्थ विशेष।

हरिन्मणि० ना० पु० पन्ना।

हरिप्रिया० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी।

हरिभक्त० ना० पु० विष्णु का उपासक, वैष्णव।

हरिभजन० ना० पु० भगवान्‌का भजन वा ध्यान करना।

हरिभद्रक० ना० पु० कूट।

हरियल० ना० पु० पक्षी विशेष, कपोत विशेष।

हरियाण० ना० पु० दिल्ली से पश्चिम देश विशेष।

हरियान० ना० पु० गरुड़।

हरियाना० अ० क्रि० जमना, बढ़ना, डहडहा होना, शाखें निकलना।

हरियाला० गु० हरा, सब्जी।

हरियाली० ना० स्त्री० हराई।

हरिबालुक० ना० पु० एलुवा, मुसब्बर।

हरिबास० ना० पु० पीपलवृक्ष।

हरिवासर० ना० पु० एकादशी, जन्माष्टमी।

हरिश्चन्द्र० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या में महादानी हुआ है।

हरीत०
हरीतकी० } ना० स्त्री० हर्र, हड़।

हरीरा०
हरीला० } गु० हरा, भगोड़ा, ना० पु० भोजन जो जच्चाको प्रथम खिलाते हैं।

हरीवा० ना० पु० तोता विशेष।

हरु० गु० हलका।

हरुये० अव्य० धीरे धीरे, हौले, व्रजविलासे यथा, दोहा, लै पौढ़ाये सेजपर हरुये यशुमति माय, अति विरुझानो आजु हरि यह कहिकहि पछिताय।

हरुव० गु० हलका, रामायणे यथा, निजजड़ता लोगन पर डारी, होहु हरुव रघुपतिहि निहारी।

हरेरा० गु० हरा।

हरौटी० ना० स्त्री० छड़ी, बेत, हलचलाने का समय।

हर्ष० ना० पु० आनन्द, सुख, आह्लाद, खुशी।

हर्षण० ना० पु० योग विशेष, सुखभाव।

हर्षना० अ० क्रि० फूलना, खिलना, आनन्द होना।

हर्षित० गु० आनन्दित, प्रसन्न, मग्न।

हल० ना० पु० लांगल, नांगल, खेत जोतनेका यन्त्र, अर्द्धाक्षर वा उसका चिह्न।

हलका० गु० फुलका, नीच, छिछोरा, ओछा, पोला, सस्ता, अगुरु।

हलकाई० ना० स्त्री० हलकापन, निर्मलता।

हलकाना० स० क्रि० सहायदेना, सहारा करना।

हलकोरना० स० क्रि० बटोरना, समेटना, हिलाना।

हलचल० ना० पु० हलबली, घबराहट, रौला, अंधेर।

हलदिया० ना० पु० विष विशेष, कम्पल रोग, गु० पीला।

हलधर० ना० पु० श्रीबलदेव, किसान।

हलन्त० गु० जिस शब्द के अन्तमें हल का चिह्न है।

हलफना० अ० क्रि० लोटपोटहोना।

हलफल० ना० स्त्री० शिष्टाचार।

हलरा० ना० पु० तरंग, लहर, हिलकोर।

हलरावना० स० क्रि० बहलाना, खेलाना, हिलाना।
हलवर्ण० ना० पु० व्यंजन, स्वररहित अक्षर।
हलवाहा० ना० पु० जोतहा, किसान।
हलहला० ना० पु० हलाहल।
हलहलाहट० ना० पु० ज्वर वा डरसेकपकपी।
हलहलाना० अ० क्रि० ज्वरादि से कांपना, स० क्रि० हिलाना, कंपाना।
हलहलिया० ना० पु० विष।
हलहली० ना० स्त्री० रोग व्याधि, जूड़ी।
हला० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।
हलाई० ना० स्त्री० जोताई।
हलायुध० ना० पु० श्रीबलरामजी।
हलावाहु० ना० स्त्री० नदी विशेष।
हलाहल० ना० पु० महाविष।
हलिया० ना० पु० बैलोंका झुण्ड।
हलियाना० अ० क्रि० जांमतलाना।
हली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, गु० किसान।
हलोरना० स० क्रि० बटोरना।
हल्लक० ना० पु० लालकमल, यथा सौगन्धिकन्तुकह्लारं हल्लकं रक्तसन्धिकम् इत्यमरः।
हल्ला० ना० पु० रौला, हुल्लड़, धावा, यह शब्द फारसी का है।
हवन० ना० पु० होम, अग्नि प्रसिद्धकरना।
हवि० ना० स्त्री० यज्ञविशेष, खीरयज्ञकी।
हविः० ना० पु० होमकी सामग्री।
हविपाठी० ना० पु० चीता।
हविष्य० ना० पु० घृत, घीसेमिलित भात।
हवुषा० ना० स्त्री० आहुबेर।
हव्य० ना० पु० देवताओं के हेतु भेंट, हवि।
हव्यवाहन० ना० पु० अग्नि।
हस्त० ना० पु० हाथ, तेरहवां नक्षत्र, सूंड़।
हस्तकरण० ना० पु० अरण्ड दोनों।
हस्ताक्षर० ना० पु० हाथकालिखा, दस्तखत।
हस्थिघोषा० ना० स्त्री० बड़ीतुरई।
हस्तिदन्तक० ना० पु० मूली, मलीतरकारी।
हस्तिनापुर० ना० पु० प्राचीनदिल्ली, कौरवों की राजधानी।
हस्तिनी० ना० स्त्री० हथिनी, स्त्रीरा, स्त्री विशेष।
हस्तिपाल० ना० पु० हाथीवान, फीलवान।
हस्तिमागधी० ना० स्त्री० गजपीपर।
हस्ती० ना० पु० हाथी।
हसली० ना० स्त्री० गले के पास की एक हड्डी, गले का गहना विशेष।
हहरना० अ० क्रि० घबराना।
हहराना० अ० क्रि० पवन प्रचण्डका शब्द।
हा० अव्य० दुःखका सूचकशब्द।
हाऊ० ना० पु० औरतें बालक के डराने को पश्चिममें बोलती हैं, ब्रजविलासे यथा, कहत आहु वनहाऊआयो।
हां० अव्य० स्वीकारका सूचक शब्द।
हांक० ना० स्त्री० पुकार, निकाल, टेर।
हांकना० स० क्रि० निकालना, पुकारना, चलाना।
हांकी० ना० स्त्री० पात्रजिसपर सेमई बनाते हैं।
हांगर० ना० पु० समुद्रकी मछली विशेष।
हांडना० अ० क्रि० भटका फिरना।
हांड़ी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्रविशेष।
हांपना०, हांफना० } अ० क्रि० हफहफाना और हाकना।
हांस० ना० पु० हंस, हंसी।
हांसी० ना० स्त्री० हास्य।
हांही० अव्य० हांसही।
हाजालिनी० ना० स्त्री० काकोली।
हाट० ना० स्त्री० दुकान, क्रयविक्रयका स्थान, चौक, कटरा, पेंट, सुवर्ण।
हाटक० ना० पु० सुवर्ण, कनक।
हाटू० ना० पु० जो हाट में क्रयविक्रयकरे।
हाड़० ना० पु० हड्डी।
हात०, हाथ० } ना० पु० कर, हस्त, मापविशेष, वस्त्र।

हाथखेंचना॰ अ॰ क्रि॰ अप्रसन्नता में मुंह फेरना वा छोड़ देना।

हाथचाटना॰ स॰ क्रि॰ स्वादिष्ट भोजन को बहुत प्रसन्नता से खाना।

हाथजोड़ना॰ स॰ क्रि॰ विनती करना, घिघियाना, दोनों हाथ मिलाना।

हाथडालना॰ स॰ क्रि॰ किसी काम में घुसना वा पैठना, अपनाना।

हाथपसारना॰ स॰ क्रि॰ किसी से कुछ मांगना।

हाथफेरना॰ स॰ क्रि॰ प्याररकरना, कृपाकरना, फुसलाना।

हाथमलना॰ अ॰ क्रि॰ पश्चात्तापकरना, विलाप करना।

हाथमारना॰ स॰ क्रि॰ वचनदेना, लूटना, खड्ग से घायलकरना।

हाथा॰ ना॰ पु॰ हाथ धुंदिया बनाने का यन्त्र।

हाथी॰ ना॰ पु॰ गज, मतंग।

हाथीवान॰ ना॰ पु॰ फीलवान, महावत।

हान॰, **हानि॰** } ना॰ स्त्री॰ टोटा, घटी, बिगाड़, अन्धेर।

हाय॰, **हायहाय॰** } अव्य॰ दुःख वा शोक का सूचक शब्द, ना॰ स्त्री॰ सांत।

हायन॰ ना॰ पु॰ वर्ष।

हार॰ ना॰ पु॰ मुक्ता आदि की माला, गजरा, बालोंकाझुण्ड, चरी, चराऊखेत, जंगल, अजय।

हारक॰ ना॰ पु॰ जिससे हरिये, हरनेहारा।

हारजीत॰ ना॰ पु॰ जूआ, द्यूत।

हारना॰ अ॰ क्रि॰ पराजित होना, अकृतार्थ होना, थकना, स॰ क्रि॰ हराना, हारजाना कुछ वस्तु।

हारमानना॰ स॰ क्रि॰ निराश होके छोड़ना, विवाद को छोड़ना।

हारा॰ अव्य॰ यहशब्द दूसरे शब्दके अन्त में आकर कर्त्ता का वा बालाका सूचक है।

हारीत॰ ना॰ पु॰ स्मृतिविशेष।

हारू॰ ना॰ पु॰ हरवैया।

हार्द॰ ना॰ पु॰ स्नेह, छोह, माया।

हार्य॰ गु॰ हरण करने के योग्य, ना॰ पु॰ बहेड़ा।

हाल॰ गु॰ उतावला, फुर्तीला।

हालना॰ अ॰ क्रि॰ हिलना।

हाला॰ ना॰ स्त्री॰ मदिरा, मद्य, शराब।

हालाडोला॰ ना॰ पु॰ हिलाव, डगमगात, भूचाल, भूकम्प।

हालि॰ ना॰ स्त्री॰ पतवार।

हाव॰ ना॰ पु॰ स्त्री लोगों की भंगीविशेष, झावली।

हावभाव॰ ना॰ पु॰ आकर्ष, खिचाव, आदरभाव, कटाक्ष, मानसन्मान, बनावट।

हास्य॰ ना॰ पु॰ आनन्दसमय, सुख की एक अवस्था, हँसी, रसविशेष।

हाहा॰ अव्य॰ हायहाय, आर्त्तवाणी।

हाहाकार॰ ना॰ पु॰ युद्धमें जो शब्द, घबराहट, दुःखयुत, पुकार, शोर।

हाहाखाना॰ अ॰ क्रि॰ गिड़गिड़ाना, घिघियाना।

हि॰ अव्य॰ ही।

हिंडोला॰ ना॰ पु॰ पालन, झूला, गीतविशेष।

हिंसक॰ ना॰ पु॰ बधिक गु॰ जो हिंसाकरे घूना, अपकारी, दुर्जन, कठोर।

हिंसा॰ ना॰ स्त्री॰ हत्या, वध, बुराकरने की चिन्ता, अपकार, गाली, दुर्जनता, मारु।

हिंस्र॰ गु॰ हिंसक।

हिक्का॰ ना॰ स्त्री॰ छींक, हिचकी।

हिङ्गु॰ ना॰ स्त्री॰ हींग।

हिचकना॰ अ॰ क्रि॰ हटना, दबना, आगा पीछा करना।

हिचकाना॰ स॰ क्रि॰ धक्कादेना, झोंकना, दबाना।

हिचकिचाना॰ अ॰ क्रि॰ संदेह में होना, डगमगाना, हकलाना।

हिचकिचीः० ना० स्त्री० दुबिधा, चिन्ता, शंका।

हिडम्ब० ना० पु० सिलहटसे ठीक पूर्वदेश, राक्षस विशेष।

हित० ना० पु० प्रेम, मित्रता, माया, उपकार, अव्य० निमित्त, अर्थ, कारण, लिये, गु० उचित, योग्य, मित्र, मायावन्त।

हितकार० ना० पु० मित्र, उपकारी, सज्जन।

हितकारा० ना० पु० मित्र, उपकारी।

हितु०
हितू० } ना० पु० मित्र, यार, सहायक।

हितैषी० ना० गु० प्रियकरने की इच्छा जिसके होवे, हितकारी।

हितोपदेश० ना० पु० योग्य वा उचितउपदेश, नीतिका एक ग्रन्थ विशेष।

हिनहिनाना० अ० क्रि० पुकारना घोड़ेका।

हिनौती० ना० स्त्री० बिनती, आधीनता।

हिन्ताल० ना० पु० खजूर विशेष।

हिन्दी० ना० स्त्री० हिन्दुस्तान की बोली वा अक्षर।

हिन्दू० ना० पु० लोग जो वेदादि शास्त्रानुसार चलते हैं, चातुर्वर्ण्यलोग।

हिन्दूस्थान० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर छः अंश से पैंतीस अक्षांशतक और पूर्व पश्चिम में ६७ अक्षांश से ९३ तक फैला है, भरतखण्ड।

हिम० ना० पु० पाला, शीत, तुषार, ऋतु विशेष।

हिमउपल० ना० पु० ओला, पत्थर, रामायणे यथा, जिमि हिमउपल कृषीदलि गरहीं, पर अकाज लगि तनु परिहरहीं।

हिमकर० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर।

हिमरोम०
हिमांशु० } ना० पु० चन्द्रमा, विधु, चांद।

हिमाचल०
हिमांचल० } ना० पु० हिमालय पर्वत।

हिमाह्वय० ना० पु० कपूर, कर्पूर, कापूर।

हिमालय० ना० पु० पर्वत विशेष, पालाकाघर।

हिमोपम० ना० पु० कपूर, कर्पूर।

हिमोपल० ना० पु० ओला, पाथर।

हिय०
हिया० } ना० पु० हृदय।

हियाव० ना० पु० सूरमापन, वीरता, आड़।

हियो०
हियौ० } ना० पु० गाय भैंस बुलाने वा रोकने का शब्द, हृदय।

हिरन्मय०
हिरण्यमय० } गु० जो सोनेसे बना, ना० पु० ब्रह्मा।

हिरण्य० ना० पु० कनक, सुवर्ण, नवखण्डपृथ्वी में से एक का नाम।

हिरण्यवाह० ना० पु० सोनभद्र नदी।

हिरण्याक्ष० ना० पु० प्रह्लाद का चचा।

हिरद० ना० पु० हृदय।

हिरन० ना० पु० हरिण, मृग।

हिरनौटा० ना० पु० हरिणका बच्चा।

हिराना० स० क्रि० खोना, रखकर भूलजाना अ० क्रि० खोजाना, गमहोना।

हिर्की० ना० स्त्री० धई, बावली।

हिलकना० अ० क्रि० ऐंठना, मरोड़ना।

हिलकोर० ना० स्त्री० हिलाव, लहराव, हिलोर।

हिलकोरना० स० क्रि० लहराना, हिलाना, अ० क्रि० हिलना, घबड़ाना।

हिलकोरा० ना० पु० लहर, तरंग।

हिलगना० अ० क्रि० लटकना, उलझना, चिपकना, अटकना।

हिलगाना० स० क्रि० लटकाना, उलझाना, चिपटाना, अटकाना।

हिलना० अ० क्रि० डोलना, टलना।

हिलमिल० अव्य० मिलकर।

हिलमिलजाना० अ० क्रि० मिश्रित होना, मिलाजुला रहना।

हिलमोचिका० ना० पु० शाक विशेष।

हिलसा० ना० स्त्री० मछली विशेष।

हिला० गु० पाला, पोसवां।

हिलाना० स० क्रि० डोलाना, अपने वश में करना।

हिलोरना० अ० क्रि० लहराना।

हिलोरा० ना० पु० तरंग, लहर।

हिलोरामारना० अ० क्रि० लहर मारना।

हिश्त० अव्य० चुपचुप, दुत।

हिसका० ना० पु० उतराहट, अनुकार, रिस, झल।

हिसकाहिसकी० ना० स्त्री० परस्पर हिसका करना।

हिसाब० ना० पु० गणित, लेखा, यह शब्द अरबीका भाषा में अतिप्रचलित है।

ही० अव्य० निश्चय करनेका बाधक, ना० पु० हृदय।

हीं० अव्य० निश्चय करने का बोधक।

हींग० ना० स्त्री० औषध विशेष।

हींगहगना० अ० क्रि० इच्छारहित हगना और दुःख भोगना।

हींसना० अ० क्रि० हिनहिनाना।

हीक० ना० स्त्री० उबकाई, मतलाई, घृणा, अटकल, दुर्गन्धि।

हीजड़ा० ना० पु० हिजड़ा।

हीन० गु० रहित, बिना, छोटा, नीच।

हीनजाति० ना० स्त्री० नीचजाति।

हीनता० ना० स्त्री० न्यूनता, घटी।

हीननिमेष० ना० पु० एकटक।

हीना० गु० नीचा, छोटा, नीच।

हीर० ना० पु० रांझा, सार, गूदा, गु० ओखा।

हीरक० ना० पु० हीरा।

हीरशुक्तिका० ना० स्त्री० काकोली।

हीरा० ना० पु० रत्नविशेष, कम्भारी।

हीरामन० ना० पु० तोताविशेष, छोटासर्प विशेष।

हीराचल० } ना० पु० कम्बल जो योगी ओढ़ते हैं।
हीराचलि० }

हील० } ना० स्त्री० चहला, कीचड़।
हीला० }

हुंकार० } ना० पु० पुकार, डरवानेके लिये हूं शब्दका पुकारना।
हुंकारा० }

हुड़दंगा० गु० दंगैत।

हुड़दंगी० ना० स्त्री० दंगा दंगैत।

हुड़हुड़ाना० अ० क्रि० टंकोरना।

हुड़हुड़ी० ना० स्त्री० टंकोर।

हुडुक० ना० पु० बाजा विशेष।

हुंडवी० ना० स्त्री० हुंडी।

हुंडाभाड़ा० ना० पु० किराया।

हुंडार० ना० पु० भेड़िया विशेष।

हुंडावन० ना० पु० हुण्डीका बट्टा।

हुंडी० ना० स्त्री० जिसपत्र में परदेश से रुपया लिखआवे उसका नाम।

हुंडीवाल० ना० पु० साहूकार, जो हुण्डीलिखे।

हुत० गु० जो होमकियागया।

हुतना० स० क्रि०, होमकरना, होममें जलाना।

हुतभुक्० } ना० पु० अग्नि।
हुताशन० }

हुति० अव्य० पलटे, बदले, ओरसे।

हुती० स्त्री० }
हुता० पु० } क्रि० हुआ, अव्य० थी, था, रहे।
हुतौ० पु० }

हुमकना० अ० क्रि० कूदना, मारने के समय हुंकारना।

हुमे० क्रि० जलाये।

हुरगुंडा० ना० पु० तरकारी विशेष।

हुरमई० ना० स्त्री० नृत्यभेद।

हुरहुर० } ना० पु० पौधा विशेष।
हुरहुरा० }

हुरुकनी० ना० स्त्री० कंचनी, वेश्या।

हुर्रा० ना० पु० फूट, फटक, विक्षेप।

हुर्सा० ना० पु० चन्दन घिसनेका पाषाण विशेष जो पाटासा होता है।

हुलकारना० स० क्रि० उभारना, हुसकाना,

लड़ाना।

हुलसना॰ अ॰ क्रि॰ आनन्दित होना, मुदित होना।

हुलसाना॰ स॰ क्रि॰ रिझाना, प्रसन्नकरना।

हुलास॰ ना॰ पु॰ सुंघनी, आनन्द, विलास।

हुलड़॰ ना॰ पु॰ रौला, बखेड़ा।

हुं॰ अव्य॰ हां, भी, हो।

हुंक॰ ना॰ स्त्री॰ शब्द विशेष।

हुंकरना॰ स॰ क्रि॰ क्रोध से वा भय से वा झाड़ फूंक से हुं शब्द बोलना।

हुंठ॰ ना॰ पु॰ साढ़ेतीन ३॥।

हुंठा॰ ना॰ पु॰ साढ़ेतीन का पहाड़ा।

हुंहां॰ ना॰ पु॰ धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।

हूक॰ ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, टसक, झटक।

हूचना॰ स॰ क्रि॰ चूकना, भूलना।

हूठना॰ स॰ क्रि॰ धक्का देना।

हूड़॰ }
हूड़ाहूड़ी॰ } ना॰ स्त्री॰ खैंचाखैंची।

हूण॰ ना॰ पु॰ कठोर मनुष्य।

हून॰ ना॰ पु॰ मन्दराजी, मुद्रा विशेष।

हूल॰ ना॰ स्त्री॰ भोंक, खोंचा।

हूलना॰ स॰ क्रि॰ भोंकना, खैंसना।

हूहा॰ ना॰ पु॰ चर्चा, आंधी, धूमधाम, टीमटाम।

हृदय॰ ना॰ पु॰ वक्षःस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।

हृदयनिकेत॰ ना॰ पु॰ कामदेव।

हृषीक॰ ना॰ पु॰ इन्द्रियां।

हृषीकेश॰ ना॰ पु॰ इन्द्रियपति विशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।

हृष्ट॰ गु॰ हर्षित, प्रसन्न।

हे॰ अव्य॰ सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।

हेंगा॰ ना॰ पु॰ सरावन, पटेला, हैंगा।

हेठ॰ अव्य॰ नीचे स्त्री॰ कांच जो गुदा में निकलती है।

हेठा॰ गु॰ आलसी, नीच, डरपोकना।

हेठापन॰ ना॰ पु॰ नपुंसकता, नीचता, निचाई।

हेत॰ }
हेतु॰ } ना॰ पु॰ अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।

हेति॰ अव्य॰ हाइति।

हेम॰ ना॰ पु॰ स्वर्ण, कंचन, सोना।

हेमनिधि॰ ना॰ पु॰ पारा, स्वर्ण की खानि।

हेमन्त॰ ना॰ पु॰ ऋतु विशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।

हेमपुष्पा॰ }
हेमपुष्पिका॰ } ना॰ स्त्री॰ चम्पावृक्ष।

हेमलता॰ ना॰ स्त्री॰ सोनजुही।

हेमवती॰ ना॰ स्त्री॰ हर्र, हड़।

हेमव्रता॰ ना॰ स्त्री॰ वच औषध।

हेमाचल॰ }
हेमाद्रि॰ } ना॰ पु॰ सुमेरु पर्वत।

हेरना॰ स॰ क्रि॰ निरेखना, देखना, ढूंढ़ना, रगेदना, खदेड़ना।

हेरम्ब॰ ना॰ पु॰ श्रीगणेशजी।

हेरी॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष, जो अहीरगाते हैं।

हेल॰ ना॰ स्त्री॰ बोझ, भार, टोकराभरगोबर।

हेलना॰ अ॰ क्रि॰ पैरना, तिरना, स॰ क्रि॰ धक्का देना, हटाना।

हेला॰ ना॰ स्त्री॰ अवज्ञा, प्रवाह, रला, क्रीड़ा संगा, सहज।

हेलमारना॰ स॰ क्रि॰ ढकेलना, ठेलना।

हैक॰ ना॰ पु॰ हय।

हैहैराज॰ ना॰ पु॰ हयहय, सहस्रबाहु।

हो॰ अव्य॰ सम्बोधनका चिह्न।

होआना॰ अ॰ क्रि॰ होकर आना।

होंकना॰ अ॰ क्रि॰ हांफना।

होंठ॰ ना॰ पु॰ ओष्ठ, लब।

होंठा॰ ना॰ स्त्री॰ लगाम, दहाना।

होके॰ अव्य॰ द्वारा, से।

होचुकना॰ अ॰ क्रि॰ सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना॰ अ॰ क्रि॰ होना, पड़ना ।

होठ॰ ना॰ पु॰ होंठ ।

होड़॰ ना॰ स्त्री॰ प्रण, वचन, दांव, शर्त ।

होड़ल॰ ना॰ पु॰ अभ्रक, अबरक ।

होड़ाचक्र॰ ना॰ पु॰ जिसकेद्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं ।

होत॰ ना॰ स्त्री॰ वश, शक्ति ।

होतव॰ ना॰ पु॰ बदा, प्रारब्धी ।

होतव्य॰ ना॰ पु॰ भवितव्य, होनहार ।

होतव्यता॰ ना॰ स्त्री॰ भवितव्यता, होनहार ।

होता॰ ना॰ पु॰ होमकरनेहारा ।

होते॰ अव्य॰ रहते, में ।

होतेहोते॰ अव्य॰ क्रम क्रम से ।

होत्र॰ ना॰ पु॰ पूजन, हुतन ।

होत्री॰ गु॰ पूजक ।

होनहार॰ ना॰ गु॰ जो होसके, सम्भव ।

होना॰ अ॰ क्रि॰ रहना, बनना, जोकुछहोगा ।

होम॰ ना॰ पु॰ अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना ।

होमना॰ स॰ क्रि॰ होमकायज्ञकरना, जलाना ।

होला॰ ना॰ पु॰ नाव विशेष, बूट, भूनीफली ।

होलाष्टक॰ ना॰ पु॰ होली का समय ।

होलिका॰ ना॰ स्त्री॰ होली ।

होलिहा॰ ना॰ पु॰ होली खेलनेहारे ।

होली॰ ना॰ स्त्री॰ फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव ।

हौआ॰ ना॰ पु॰ हाऊ, हौवा ।

हौं॰ क्रि॰ हूं, सर्व॰ मैं, हम ।

हौंस॰ ना॰ स्त्री॰ इच्छा, चाह ।

हौका॰ ना॰ पु॰ लोभ, लालच, वायु, समेतझड़ी ।

हौले॰ अव्य॰ धीमें धीरे ।

हौलेहौले॰ अव्य॰ धीरेधीरे ।

हौवा॰ ना॰ पु॰ भोकस, भुतना ।

ह्रद॰ ना॰ पु॰ विनाखोदा, बड़ाजलाशय, तालाब-झील, अगाधता ।

ह्रस्व॰ गु॰ अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर ।

ह्रस्वमूल॰ ना॰ पु॰ ऊख, गन्ना, गाड़ा ।

ह्रदिनी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी ।

ह्री॰ ना॰ स्त्री॰ लज्जा, हया ।

ह्रीण॰
ह्रीत॰ } गु॰ लज्जित, शरमायाहुआ ।

ह्वै॰ क्रि॰ होकर ।

ह्वैहै॰ क्रि॰ होगा ।

[क्ष]

क्षई॰ ना॰ स्त्री॰ क्षयरोग जिस में कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है ।

क्षण॰ ना॰ पु॰ तीसकलाका एकक्षण होता है, थोड़ीदेर, तिल ।

क्षणक॰ ना॰ पु॰ क्षण, सर्ल ।

क्षणप्रति॰ अव्य॰ वारंवार ।

क्षणरुचि॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली, कौंधा ।

क्षणिक॰ गु॰ अस्थिर, सत्यानाशी ।

क्षणैक॰ अव्य॰ थोड़ेकाल में ।

क्षत॰ ना॰ पु॰ फोड़ा, घाव ।

क्षतज॰ ना॰ पु॰ रुधिर, लोहू, रक्त ।

क्षति॰ ना॰ स्त्री॰ हानि, घटी ।

क्षत्र॰ ना॰ पु॰ मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवंश ।

क्षत्रक॰ ना॰ पु॰ भुइंफोड़ा, जिसे कुकुरमुत्ता कहते हैं ।

क्षत्रधारी॰ ना॰ पु॰ राजा, नृपति, महीपति ।

क्षत्रबन्धु॰ ना॰ पु॰ जो क्षत्रियों में नीचहो ।

क्षत्रिय॰ ना॰ पु॰ द्वितीयवर्ण, खित्री ।

क्षपा॰ ना॰ स्त्री॰ रात ।

क्षपाकर॰
क्षपानाथ॰ } ना॰ पु॰ चन्द्रमा ।

क्षम॰ ना॰ पु॰ योग्यता, गु॰ समर्थ, योग्य ।

क्षमता॰ ना॰ स्त्री॰ योग्यता ।

क्षमना॰ स॰ क्रि॰ क्षमाकरना, छोड़ना ।

क्षमा॰ ना॰ स्त्री॰ मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अलसी, दया, धरती ।

क्षमापन० ना० पु० क्षमा करने का स्वभाव।
क्षामार्योग्य० गु० जो क्षमा के योग्य होवे।
क्षमिय० क्रि० क्षमाकीजिये।
क्षमित० गु० क्षमा कियागया।
क्षय० ना० पु० क्षयरोग, विनाश, प्रलय।
क्षयमास० ना० पु० जिस चान्द्रमास में सूर्य्यको दो राशि में संचार हो।
क्षयरोग० ना० पु० सूखा, शोष, क्षयी।
क्षर० ना० पु० भारी, स्थूल।
क्षान्त० ना० पु० सन्तोषी, धैर्य्यवान्।
क्षान्ति० ना० स्त्री० सन्तोष, धीरज।
क्षार० ना० पु० खार, राख, भस्म, धूलि।
क्षारपत्र० ना० पु० बथुआ, भाजाविशेष।
क्षारश्रेष्ठ० ना० पु० ढाकवृक्ष।
क्षारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
क्षिणुचर्त्त० ना० पु० मेढासिंगी।
क्षिति० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
क्षितिज० ना० पु० भौमासुर, मंगल।
क्षितिनाथ०
क्षितिपाल०
ना० पु० राजा, महीपति।
क्षितिमण्डन० ना० पु० ब्रह्मा।
क्षितीश० ना० पु० राजा, महीश।
क्षिप्र० गु० शीघ्र, उतावल।
क्षीण० गु० दुबला, पतला, ना० पु० प्रमेहरोग।
क्षीर० ना० पु० दूध, खीर, पानी, खारीलोन।
क्षीरगन्धा० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
क्षीरद० ना० पु० मेघ, गाय।
क्षीरपत्रा० ना० स्त्री० जामन, फलेंद।
क्षीरवृक्ष० ना० पु० पीपलवृक्ष, गूलरवृक्ष।
क्षीरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।
क्षीरिणी० ना० स्त्री० दुद्धी, बूटी।
क्षीरी० ना० पु० वंशरोचन, खिरनी, खीरा, धन।
क्षीरोद० ना० पु० समुद्र विशेष।
क्षुत्पिपासा० ना० स्त्री० भूख, प्यास।
क्षुद्र० गु० छोटा, नीच, कमीना ना० पु० नक छिकनी पौधा।
क्षुद्रजम्बू० ना० पु० जामन, फलेंद।
क्षुद्रतन्दुला० ना० स्त्री० विडंग।
क्षुद्रता० ना० स्त्री० नीचता, नीचपन।
क्षुद्रपनस० ना० पु० बड़हल।
क्षुद्रफला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जामन।
क्षुद्रवर्षा० ना० स्त्री० लालपुनेवा, थोडी बरसात।
क्षुद्रा०
क्षुद्री०
ना० स्त्री० छोटी कटाई।
क्षुधा० ना० स्त्री० भूख।
क्षुधार्त्त०
क्षुधावन्त०
गु० भूखा, बहुत भूखा।
क्षुधित० गु० भूखा।
क्षुर० ना० पु० छुरा, उस्तरा, मूंज।
क्षुरक० ना० पु० गोखुरू, तिलकवृक्ष।
क्षुल्लक० ना० पु० कौड़ी।
क्षेत्र० ना० पु० भूमिपुण्य, खेत, तीर्थशरीर।
क्षेत्रज० ना० पु० जो क्षेत्रमें उत्पन्न हो।
क्षेत्रज्ञ० ना० पु० आत्मा, जीव, गु० किसान मापक।
क्षेत्रफल० ना० पु० खेतका फल, अर्थात् बिगहटी।
क्षेत्रजीव० ना० पु० किसान, खेतीवाला।
क्षेम० ना० स्त्री० कुशल।
क्षेमकरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष।
क्षेमकुशल० ना० स्त्री० आरोग्य, भलाई, कल्याण, कुशलता, खैरआफियत।
क्षोणिज० ना० पु० क्षितिज, मंगलादि।
क्षोणिप० ना० पु० राजा, महीपति।
क्षोणिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
क्षोणी० ना० स्त्री० क्षिति, पृथ्वी, धरती।
क्षोभ० ना० पु० क्षोह, क्रोध, खभार, अथिर मन।
क्षौद्र० ना० पु० मधु, शहद।
क्षौर० ना० पु० मुण्डन, नाई का काम।
क्षौरक० ना० पु० [illegible] वा नाई।

…ा० स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि।

क्ष्मापति० ना० पु० राजा, भूपाल।

[ज्ञ]

ज्ञ० अव्य० शब्दान्त में कर्त्ता वा कारक का चिह्न, यथा, धर्मज्ञ, कृतज्ञ।

ज्ञाता० गु० जाननेहारा, शास्त्रवक्ता।

ज्ञाति० ना० स्त्री० पिता, असपिण्ड, सर्णजाति।

ज्ञान० ना० पु० समझ, बुद्धि, व्यक्त और धर्मकी बुद्धि जिसकरके आत्मा आत्रगमन से रहित होता है।

ज्ञानतः० ना० पु० समझ, ठीकबुद्धि।

ज्ञानवान्० } गु० बुद्धिमान्, पण्डित, समझदार।
ज्ञानी० }

ज्ञापक० गु० जाननेहारा।

ज्ञापन० ना० पु० जतावना।

ज्ञेय० गु० जो जानने के योग्य।

ज्ञया० ना० स्त्री० मेदा।

दो० श्रीपरमात्मा जगतगुरु कृपाखानिविभु एक। जासुदयापूरणभयो मङ्गलकोष निवेक १॥
विविधदेशभाषामिलित भाषाग्रन्थनिमाहि। यथासंस्कृतफारसीआदिकपदअवगाहि २॥
अर्थलिखेनिजबुद्धिसम विपुलग्रन्थमतधारि। कोषकारकीमूढ़ता तजिबुधपढ़ैविचारि ३॥
शब्द समूह समुद्रवत नौका कोषप्रमान। पारजाहिंचढिबालबुधिबिनसन्देहसुजान ४॥
वर्षाऋतु गुरु रेवती भाद्रअसिततिथिचारि। ग्रहचषनवमहिसहितशुभसंवतविक्रमधारि ५॥
कोष भयो पूरण तबै पैंतेपुर शुचि ठाम। कोषकार सानन्दलिख कोषसमङ्गल नाम ६॥
जोगुणगाहकसुजनजन विद्याशील प्रवीन। ते लखि कोष सराहि हैं हँसिहैं बुद्धिमलीन ७॥

इति॥